महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री खिलवत

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री खिलवत

किताब खिलवत गैबकी, सूरत अरजकी, जो हकसों करी है

ऐसा खेल देखाइया, मांग लिया है हम ।
अब कैसे अरज करूं, कहोगे मांग्या तुम ॥ १

महामतिने इन्द्रावतीके भावसे श्रीराजजीसे प्रार्थना की है, हे धामधनी ! इस स्वप्नवत् जगतमें भेजकर आपने हमें ऐसा विचित्र खेल दिखाया, जिसे वस्तुतः हमने ही माँगा था. अब इससे बाहर निकलनेके लिए मैं प्रार्थना भी कैसे करूँ ? आप कहेंगे कि (प्रेम-संवादके समय) तुमने ही तो इसकी माँग की थी.

कछू आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए ।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए ॥ २

हे धामधनी ! नश्वर खेल दिखाते हुए आपने हमारी आशाका अन्य कोई आश्रयस्थान भी तो नहीं रखा. अपने चरणोंमें ही बैठाकर आपने हमें इस प्रकार (सुरताके द्वारा संसारमें भेजकर) दूर कर दिया कि अब हम न आपसे कुछ कह सकती हैं और न ही कुछ सुन सकती हैं.

बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए ।
ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए ॥ ३

परमधाममें तो मैं सभी ब्रह्मात्माओंके साथ अंगसे अंग मिलाकर आपके पास ही बैठी हुई हूँ, तथापि संसारमें भेज कर मुझे इतनी दूर कर दिया कि अब न तो मैं आपको अपनी आँखोंसे देख सकती हूँ और न ही स्वयंको पहचान सकती हूँ.

बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए ।
ना कछू दिल की केहे सकों, ना पिया सबद सुनाए ॥ ४

यद्यपि मैं मूलमिलावामें ब्रह्मात्माओंके साथ अङ्गसे अङ्ग मिलाकर बैठी हुई हूँ किन्तु सुरतारूपसे संसारमें भेज कर आपने मेरी स्थिति ही ऐसी बदल दी जिससे न मैं अपने दिलकी बातें कह सकती हूँ और न ही अपने धनीके मुखारविन्दके मीठे वचन ही सुन सकती हूँ.

बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड ।
आसा उपजे अरज को, सो भी दई मोहे तोड ॥ ५

परमधाममें मैं अपनी आँखें खोलकर तथा सभी ब्रह्मात्माओंके साथ अङ्गसे अङ्ग मिलाकर आपके चरणोंमें बैठी हूँ. परन्तु सुरतारूपसे संसारमें आने पर यदि आपसे प्रार्थना करनेकी इच्छा भी उत्पन्न हो जाए तो भी मूलका (खेल देखनेकी माँगका) स्मरण दिलाकर आपने मेरी आशा ही तोड़ डाली है.

सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड ।
जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड ॥ ६

हे धामधनी ! आप तो सदा सर्वदा अखण्ड सुखके दाता हैं और मैं आपकी ही अङ्गना हूँ किन्तु आपने ऐसा वियोग दिया कि मानो आपके साथ मेरा कोई सम्बन्ध ही नहीं था.

बैठी सदा चरण तले, कबूं न्यारी ना निमख नेस ।
पाइए न नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया बिदेस ॥ ७

मैं तो सदा आपके ही चरणोंमें बैठी हुई हूँ, क्षण मात्रके लिए भी आपसे

भिन्न नहीं हूँ किन्तु आपने मुझे ऐसे विदेश (मायावी खेल) में भेज दिया कि जहाँ आपका नाम, स्थान और दिशाकी कहीं भी पहचान नहीं हो सकती.

बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक ।
दूर दराज ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक ॥ ८

यद्यपि मैं (मूलमिलावामें) आपके ही चरणकमलोंमें बैठी हुई हूँ, किन्तु मेरी सुरताको आपने इस स्वप्नवत् जगतके चौदह लोकोंमें डालकर इतनी दूरीका अनुभव करवाया कि जहाँ पर आपके दर्शन भी निकटतासे नहीं होते.

बैठी तले कदम के, ऐसी करी प्रदेसन ।
ले डारी ऐसी जुदागी, रह्या हरफ न नुकता इन ॥ ९

मैं तो मूलमिलावामें आपके ही चरणकमलोंमें बैठी हूँ किन्तु इस नश्वर जगतमें सुरताके द्वारा भेजकर आपने ऐसा वियोग दिया कि मुझे आपके वचनोंके शब्द या अक्षरमात्रका स्मरण भी नहीं हो रहा है (कि परमधाममें आपने क्या कहा था और मैं क्या कर रही हूँ).

बैठी हों आगे तुम, जानूं अरज करूं कर जोड ।
सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड ॥ १०

मैं तो परमधाममें आपके सम्मुख ही बैठी हुई हूँ, इसलिए चाहती हूँ कि कर जोड़कर आपसे प्रार्थना करूँ, किन्तु आपने मेरे हृदयको ऐसा मोड़ दे दिया कि आपसे प्रार्थना करनेकी लेशमात्र आशा भी शेष न रही.

ऐसी दई उलटाय के, बैठी हूं कदम के पास ।
दरद न कह्यो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस ॥ ११

आपने मेरी सुरताको इस प्रकार उलटा दिया कि आपके चरणोंके निकट बैठी हुई होने पर भी मैं आपको ऐसी भूल गई कि हृदयकी यह पीड़ा बताई भी नहीं जा सकती. अब तो आपसे प्रार्थना करनेकी आशा भी तो शेष नहीं रही.

बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी ।
ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी ॥ १२

मैं तो आपके चरणोंमें ही बैठी हुई हूँ. हे धामधनी ! मेरा घर भी तो यही

परमधाम है. आप मुझे परमधामके ये सब सुख दिखाकर जगा रहे हैं तथापि मेरी आत्मा जागृत नहीं हो रही है.

बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड ।
आस ना केहेन सुनन की, जानों बीच पड्यो ब्रह्मांड ॥ १३

हे धनी ! मैं मूलमिलावामें ब्रह्मात्माओंके साथ ही बैठी हुई हूँ. परमधाममें तो अखण्ड सुख हैं. इस संसारमें आने पर कहने सुननेकी आशा भी नहीं रही, कारण कि मेरे और आपके बीच यह ब्रह्माण्ड ही परदा बन गया है.

धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड ।
आप दया बतावत अपनी, आडे दे ब्रह्मांड पिंड ॥ १४

मेरे सद्गुरु धनी परमधामके अखण्ड सुखोंकी चर्चा करते हैं कि धामधनी तथा परमधामके सुख अखण्ड अविनाशी हैं. वस्तुतः मेरे और इन सुखोंके बीच शरीर और संसारका परदा डालकर आप अपनी कृपाका ही अनुभव करवा रहे हैं.

जगावत कई जुगतें, दई कई विध साख गवाहि ।
बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोडी न जाई ॥ १५

सद्गुरु धनी विभिन्न प्रकारकी साक्षियाँ देकर मुझे युक्तिपूर्वक जगा रहे हैं. तारतम ज्ञानसे जागृत कर वे मुझे परमधाममें बैठी हुई अनुभव करवाना चाहते हैं तथापि यह विषमय संसार मुझसे नहीं छूटता.

धनी मैं तो सूती नींद में, तुम तो बैठे हो जागृत ।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत ॥ १६

हे धामधनी ! मैं तो भ्रमरूपी निद्रामें सोई हुई हूँ, आप तो पूर्णरूपेण जाग्रत बैठे हैं. यह मायाका खेल भी आप ही दिखा रहे हैं, इसमें मेरा लेशमात्र भी बल नहीं चल सकता.

बल बुध ना रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहे ।
ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहे ॥ १७

इस स्वप्नवत् संसारमें मेरी शक्ति तथा बुद्धिके सामर्थ्यकी कोई आशा ही नहीं

रही है. मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कुछ भी चलायमान नहीं हैं. इस सांसारिक खेलमें मैं ऐसी उलझ गई हूँ कि अब तो आप की आशा ही शेष रह गई है.

और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या न कोई ठौर ।
एता दृढ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और ॥ १८

अन्य किसी आशाकी तो सम्भावना ही नहीं रही है और मैंने आपके अतिरिक्त कोई आश्रयस्थान भी तो नहीं माना है. यह भी तो आपने ही दृढ़ विश्वास दिलाया है कि आपके अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं.

बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर ।
मुझमें मेरा कछू ना रह्या, अब क्या कहूं क्योंकर ॥ १९

मेरे बल, बुद्धि और आशाको सम्भावनाको आपने अपने आश्रय पर ही रखा है. अब तो मुझमें मेरापन कुछ भी नहीं रहा है, इसलिए मैं आपसे क्या कहूँ और कैसे कहूँ ?

स्यामाजीएं मोहे सुध दई, तब मैं जानी न सगाई सनमंध ।
सुध धनी धाम न आपकी, ऐसी थी हिरदे की अंध ॥ २०

स्वयं श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें आ कर मुझे तारतम ज्ञानके द्वारा आपकी सुधि दी. उस समय मैं परमधामके मूल सम्बन्धको पहचान न सकी क्योंकि तब मैं ऐसी हृदयकी अन्धी हो गई थी कि मुझे धामधनी तथा स्वयंकी ही सुधि नहीं थी.

तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख ।
सो हलके हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख ॥ २१

उस समय मुझे ऐसा लगा कि सद्गुरुकी इन बातोंकी साक्षी कोई दूसरा भी दे. मेरे सद्गुरु मुझे धीरे-धीरे साक्षियाँ भी देते गए. इस प्रकार मैंने लाखों साक्षियाँ भी प्राप्त की.

मैं हुती बीच लडकपने, तब कछुए न समझी बात ।
मोहे सब कही सुध धाम की, भेष बदल आए साख्यात ॥ २२

उस समय मेरी बाल्यावस्थाकी बुद्धि होनेके कारण मैं सद्गुरुकी वाणीको

कुछ भी नहीं समझ पाई. यद्यपि साक्षात् स्वरूप श्यामाजीने वेश बदलकर (सद्गुरुके रूपमें आकर) मुझे परमधामकी सभी सुधि दे दी थी.

सोई बचन मेरे धनीय के, हाथ कुंजी आई दिल को ।
उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों ॥ २३

मेरे सद्गुरु धनीके तारतम ज्ञानके वे वचन कुञ्जीके रूपमें मेरे हृदयमें आ गए हैं. अब मैं इन्हीं वचनोंके द्वारा ब्रह्माण्डके सभी उलझनोंको सुलझा देती हूँ.

पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान ।
पर हम बीच खेल के, कै पाए धनी धाम निसान ॥ २४

यद्यपि बाल्यावस्था जैसी अज्ञानतामें परमधामके मूल सम्बन्धका निर्वहन नहीं कर सकी. किन्तु इस नश्वर जगतमें मैंने धामधनी और परमधामके असंख्य सङ्केत अवश्य प्राप्त किए हैं.

कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान ।
इनमें इसारतें रमूजें, सो मैं ही पाऊं पेहेचान ॥ २५

इस प्रकार वेद आदि शास्त्रोंमें मुझे अनेकों साक्षियाँ मिलीं तथा कुरान (फुरमान) भी मेरे लिए ही आया. उन सङ्केतों और रहस्यमय शब्दोंको मैं ही पहचान कर ग्रहण कर सकती हूँ.

मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल ।
सो भी आतमने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल ॥ २६

मेरे धामधनीके साङ्केतिक वचनोंको अन्य कोई स्पष्ट नहीं कर सकता. यह बात मेरी अन्तर आत्माने इसीलिए जाना कि श्यामाजीने ही तो (सद्गुरुके रूपमें) मुझे ये शब्द कहे थे.

ए सुध हुई त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम ।
मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम ॥ २७

तीनों लोकोंके जीवोंको यह ज्ञात हो गया. सभीने जान लिया कि

ब्रह्मसृष्टियोंका घर परमधाम है. धामधनीने मुझे इस नश्वर जगतमें बैठाकर भी परमधामका स्थायी (अखण्ड) सुख प्रदान किया.

सो बातें मैं केती कहूं, मैं पाई बेसुमार ।
पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं ना कछू देत दीदार ॥ २८

मेरे धनीकी उन बातोंका वर्णन मैं कितना करूँ ! मुझे असंख्य साक्षियाँ मिली हैं. किन्तु धनीने अपने मुखारविन्दसे एक भी शब्द नहीं सुनाया और अभी तक साक्षात् दर्शन भी नहीं दिया.

अब ऐसा दिलमें आवत, जेता कोई थिर चर ।
सब केहेसी प्रेम धनीय का, कछू बोले ना इन विगर ॥ २९

अब तो मुझे हृदयसे ही ऐसा विश्वास हो रहा है कि इस जगतमें जितने भी स्थिर या चल प्राणी हैं वे सभी पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रेमका ही गुण गाएँगे, उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं बोलेंगे.

ऐसा आगूं होएसी, आतम नजरों भी आवत ।
जानों बात सुनों मैं धनीय की, पर मोहे अजूं विलखावत ॥ ३०

मुझे विश्वास है कि भविष्यमें ऐसा ही होगा. मेरी आत्मदृष्टिमें भी यही बात आ रही है. मुझे लगता है कि मैं मेरे धामधनीकी ही बातें श्रवण करती रहूँ परन्तु दर्शन न देकर आप मुझे व्याकुल बना रहे हैं.

ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस ।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास ॥ ३१

न मैं आपके दर्शन कर पा रही हूँ और न ही आपसे कुछ कहने की आशा शेष रह गई है. मुझे अपने मूल सम्बन्धकी सुधि भी नहीं है यद्यपि मैं आपके चरणोंके निकट ही बैठी हूँ.

धनी एती भी आसा ना रही, जो करूं तुमसों बात ।
ना बात तुमारी सुन सकों, ना देखूं तुमें साख्यात ॥ ३२

हे धनी ! मुझमें इतनी भी आशा नहीं रही कि मैं आपसे बात कर सकूँ.

न ही मैं आपकी बात सुन सकती हूँ और न ही आपके साक्षात् दर्शन कर पा रही हूँ.

एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए ।
लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथें मेरो कछू न बसाए ॥ ३३

धामधनी ऐसे सुखदाता हैं तथा परमधामके ऐसे अखण्ड सुख हैं तथापि मैं अपना सम्बन्ध ही भूल गई हूँ. धामधनी तथा परमधामसे मेरा लेशमात्र भी लगाव नहीं रहा. इसीलिए तो मैं स्वीकार करती हूँ कि मेरा कुछ भी वश नहीं चल रहा है.

कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जांऊं ।
एता भी तुम द्रढ कर दिया, तुम बिना ना कित ठांऊं ॥ ३४

हे धनी ! अब मैं क्या करूँ और यह वेदना किससे कहूँ ? ऐसा कोई स्थान भी तो नहीं है जहाँ मैं चली जाऊँ. इतना विश्वास भी आपने ही दिलाया है कि आपके अतिरिक्त मेरा कहीं आश्रयस्थान ही नहीं है.

ना कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पीउ चरन ।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन ॥ ३५

आपने मुझे ऐसी शक्ति भी तो प्रदान नहीं की जिसके सहारे मैं आपके चरणोंमें ही पड़ी रहूँ. किन्तु यह सब आप धामधनीके हाथोंमें ही तो है. अतः मैं किसके आगे पुकार करूँ.

रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार ।
जो देते रंचक बातूनी, तो होती खबरदार ॥ ३६

मैं आपके विरहमें रोई हूँ तो भी वह रुदन बाह्य है तथा मेरी प्रार्थना (पुकार) भी तन्द्रावस्थाके आवेश द्वारा हो रही थी. यदि आप लेशमात्र भी आन्तरिक अनुभूति करवाते तो मैं अवश्य सावधान हो जाती.

अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम ।
अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम ॥ ३७

अब कहना भी तो आपको ही है और मेरा आश्रयस्थान भी आप ही हैं.

हे धनी ! मैं आपकी ही अङ्गना हूँ और आप ही मेरे स्वामी हैं.

आसा उमेद धनीय की, बल बुध ठौर धनी ।
पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुमहीं में रही करनी ॥ ३८

आपमें ही मेरी आशा और विश्वास है. मेरे बल और बुद्धिके आश्रयस्थान भी आप ही हैं. अब मेरे लिए शरीर और ब्रह्माण्डका कोई अस्तित्व ही नहीं है. मेरे सम्पूर्ण क्रिया-कलाप आप पर ही आधारित हैं.

जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम ।
केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम ॥ ३९

आपने ही आग्रहपूर्वक मुझे वियोग दिया है और अब आप ही प्रयत्नपूर्वक जागृत भी कर रहे हैं. अब तो मेरा कहना-सुनना कुछ भी शेष नहीं रहा. इसलिए हे धनी ! अब मैं क्यों बोलूँ ?

ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए ।
इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुमहीं चढाए ॥ ४०

ऐसे अखण्ड सुखोंके दाता होते हुए भी आपने मुझे यह विस्मृति कैसे दी ? हे धनी ! आप ही इस दुःखपूर्ण संसारमें परमधामके अखण्ड सुख प्रदान कर रहे हैं और उनको हमारे हृदयमें स्थापित कर रहे हैं.

ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें छिन ।
सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे अग्याएं अंतस्करन ॥ ४१

परमधामके ऐसे असंख्य सुखोंको मैंने मायामें आकर क्षणभरमें ही भुला दिया. धामधनीके वियोगमें मुझे जो सुख मिल रहा है उससे अधिक सुख (संयोग सुख) की ओर मैं देख रही हूँ परन्तु धनीकी आज्ञासे ही अन्तःकरणमें उसकी अनुभूति हो पाएगी.

खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम ।
हुकमें दरसन देखावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४२

धामधनीकी आज्ञासे ही यह जगतका खेल रचाया गया है और हम भी उनकी आज्ञासे ही इसे देखनेके लिए यहाँ पर आई हैं. धनीकी आज्ञासे ही उनके

दर्शन भी होंगे. वस्तुतः धामधनीकी आज्ञा बिना कुछ भी होना सम्भव नहीं है.

हुकमें इसक आवहीं, कदमों जगावे हुकम ।
करनी हुकम करावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४३

धनीकी आज्ञासे ही इस संसारमें उनके प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और उनकी आज्ञा ही उनके चरणोंमें (मूलमिलावामें) जागृत करती है. सभी कार्य धनीकी आज्ञासे ही सम्पादित होते हैं. वस्तुतः उनकी आज्ञाके बिना कुछ भी होना सम्भव नहीं है.

हुकम उठावे हंसते, रोते उठावे हुकम ।
हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४४

श्रीराजजीकी आज्ञा ही हमारी आत्माको (मूलमिलावामें) हँसते-हँसते जागृत करेंगी तथा रुलाकर जागृत करना भी उनकी आज्ञाके ही अधीन है. हार-जीत, सुख-दुःख सब श्रीराजजीकी आज्ञासे ही प्राप्त होते हैं. वस्तुतः उनकी आज्ञाके अतिरिक्त कुछ भी सम्भव नहीं है.

हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम ।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४५

इस खेलकी रचना भी श्रीराजजीकी आज्ञा द्वारा ही हुई है. इस समय जो हो रहा है वह भी उनकी आज्ञासे ही हो रहा है और भविष्यमें जो होगा वह भी उनकी आज्ञासे ही होगा. वस्तुतः श्रीराजजीकी आज्ञाके बिना कुछ भी होना सम्भव नहीं है.

अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्या न हमपना हम ।
इन झूठी जिमी में बैठके, कहा कहूं तुमें खसम ॥ ४६

हे धनी ! अब आप जैसा उचित समझें वैसा ही करें, हममें तो कुछ भी अपनापन नहीं रहा है. इस नश्वर संसारमें बैठी हुई मैं आपसे क्या कह सकती हूँ ?

ए भी द्रढ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम ।
कछू मेरा मुझ में ना रह्या, ताथें कहा कहूं खसम ॥ ४७

यह भी आपने ही निश्चित कर दिया कि सब कुछ आपकी आज्ञाके ही हाथोंमें है. मुझमें मेरापन कुछ भी नहीं रहा तो अब मैं आपको क्या कहूँ ?

जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम ।
जब कछू तुमहीं करोगे, तब केहेसी आए हम ॥ ४८

हे धनी ! यदि मैं करोड़ों वार विनय करूँ तो भी इतना ही तो कह सकती जब आप हमें कृपाकर जगा देंगे तो आपके पास आकर कुछ कह सकेंगे.

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम ।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम ॥ ४९

हे धनी ! आपने हमारे और आपके बीच इतनी दूरी बना दी कि हम कुछ कहने योग्य भी नहीं रहीं. जब आप हमें मूलमिलावामें जागृत कर बैठाएँगे तब हम वहीं आकर आपसे कह पाएँगी.

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम ।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम ॥ ५०

हे धनी ! यदि हमें कुछ क्षमता (मूल सम्बन्धकी पहचान) दी गई होती तो हम स्वप्नवत् जगतमें भी आपसे कुछ कहतीं. किन्तु आपने हमें वह सामर्थ्य दिया ही नहीं. इसलिए अब मैं आपसे क्या कहूँ ?

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए ।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए ॥ ५१

इस नश्वर जगतमें आकर हमने जो कुछ जाना वही किया. जब आप विश्वास जगा देंगे तब कुछ आशा व्यक्त करूँगी.

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास ।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वास ॥ ५२

जो भी आपने किया होगा वह सब हमारे लिए ही किया होगा, किन्तु यह

नश्वर संसार निराशापूर्ण है. इतनी समझ होने पर भी यह मृतक समान देह क्यों श्वास ले रही है (क्यों जीवित है) ?

एक आहि स्वास क्यों ना उडे, सो भी हुआ हाथ धनी ।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी ॥ ५३

वस्तुतः एक ही आहमें शरीर छूट जाना चाहिए किन्तु यह सब धामधनीके ही हाथोंमें है. सत्य बात तो यही एक है भले न इसे करोड़ों बार (प्रकारसे) क्यों न कहा जाए.

महामत कहे मैं सरमंदी, सब अवसर गई भूल ।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल ॥ ५४

महामति कहते हैं, मैं तो लज्जित हो रही हूँ क्योंकि आपकी अनुकम्पाके सभी अवसरोंको मैं भूल गई हूँ. ऐसे वियोगमें मैं कैसे कहूँ कि आप मुझे प्रसन्न रखें.

प्रकरण १ चौपाई ५४

मैं खुदी काढे का इलाज (अहङ्कार शून्य बननेका उपाय)

हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान ।
लै कै किताबें साहेदियां, कै हदीसें फुरमान ॥ १

महामति कहते हैं, हमने उन सभी ब्राह्मी वचनोंको स्वीकार किया है जो परमात्माके विषयमें प्रमाणभूत माने गए हैं तथा कुरान एवं हदीस सहित अनेकों धर्म ग्रन्थोंकी साक्षियाँ भी ग्रहण कीं है.

कै साखें सास्त्रन की, कै साखें साधों की बान ।
ए ले ले रूह को द्रढ करी, आखर वसीयत नामें निदान ॥ २

विभिन्न शास्त्रग्रन्थों तथा सन्त वाणियोंकी अनेक साक्षियोंको लेकर मैंने अपनी आत्माको दृढ़ किया. अन्तमें मक्कासे अधिकार पत्र (वसीयतनामें) भी प्राप्त हुए.

जाहेर बाहेर बातून, अंदर अन्तर तुम ।
कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम ॥ ३

इन सबसे यह स्पष्ट हो गया कि बाह्य जगतमें तथा अन्तर आत्मामें सर्वत्र आप ही विराजमान हैं. तिलमात्र स्थान भी कोई ऐसा नहीं है जहाँ आप न हों (सर्वत्र आपकी ही सत्ता व्याप्त है.)

सब ठौरों सुध तुमको, कछू छूट ना तुम इलम ।
ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४

सभी स्थानोंकी सुधि आपको है. कोई भी स्थान आपकी जानकारी बिनाका (छूटा हुआ) नहीं है. मेरी शङ्काओंको दूर कर आपने मुझे निःशङ्क बना दिया है कि आपकी आज्ञाके बिना कुछ भी सम्भव नहीं है.

जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम ।
साइत ना खाली पाइए, बिना हुकम खसम ॥ ५

आपकी जानकारीके बिना कुछ भी शेष नहीं है. आपकी आज्ञासे ही सभी प्राणियोंके श्वास चल रहे हैं. आपकी आज्ञाके बिना एक क्षण भी रिक्त नहीं है.

एते दिन मैं यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें ।
तो इत का संदेसा, हक को पोहोंचत नाहें ॥ ६

इतने दिनों तक मैंने यही समझा कि मैं इस नश्वर संसारमें बैठी हूँ इसलिए इस नश्वर जगतकी प्रार्थना सत्य परमात्मा तक नहीं पहुँचती है.

सो तेहेकीक तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत ।
इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित ॥ ७

यह भी आपने ही निश्चित करवा दिया कि इस सृष्टिकी रचना भी आपके आदेशसे ही अक्षरब्रह्मके द्वारा हुई है इसलिए आपके आदेशकी जानकारीके बिना यहाँ पर कोई भी स्थान रिक्त (खाली) नहीं है.

सांच झूठ बडी तफावत, ज्यों नाहीं और है ।
सो हुकमें खेल बनाएके, सत गिरो को देखावें ॥ ८

सत्य और असत्यमें उतना ही अन्तर है जितना 'है' और 'नहीं' में है (जैसे परमात्मा सत्य ''हैं'' तथा संसार मिथ्या ''नहीं'' है) इसलिए धामधनी अपने आदेशके द्वारा मिथ्या (स्वप्नवत्) खेल बनाकर सत्य आत्माओंको दिखाते हैं.

बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां कों ।
यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा कुंन सों ॥ ९

जिस प्रकार बाजीगर जादुई कबूतर बनाकर दर्शकोंको दिखाता है उसी प्रकार परमात्मा भी अपने आदेश मात्रसे ''हो जा'' (कुन) कहकर संसारका नश्वर खेल अपनी अङ्गनाओंको दिखाते हैं.

हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत ।
तित ख्वाब से संदेसा, तुमें क्यों ना पोहोंचत ॥ १०

हे धामधनी ! हम ब्रह्मात्माएँ परमधाम (मूलमिलावा) में आपके चरणोंमें ही बैठी हुई हैं और वहींसे सुरता द्वारा इस मिथ्या जगतको देख रही हैं. तथापि इस स्वप्नवत् संसारसे हमारा संदेशा आप तक क्यों नहीं पहुँचता ?

ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर हक ।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं जरा न रही सक ॥ ११

परब्रह्म परमात्माने अपना तारतम ज्ञान प्रदान कर इस नश्वर जगतमें ही सत्य धनीकी पहचानका निश्चय करा दिया. अब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी कृपा एवं रसूल मुहम्मदके कुरानके ज्ञानसे किसी भी प्रकार शङ्का नहीं रही.

हम बैठे लैलत कदर में, संदेसा पोहोंचावें तुम ।
इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम ॥ १२

हम महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में बैठी हुई हैं और आप तक अपना सन्देशा पहुँचानेका प्रयत्न कर रहीं हैं. हम मानतीं हैं कि तारतम ज्ञानके बलसे हमारी सुरता आप तक पहुँचनी चाहिए.

ए तेहेकीक तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें ।
इन विध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहें ॥ १३

हे धनी ! आपने यह तो निश्चय करा ही दिया कि मैं इस स्वप्नवत् जगतमें बैठी हुई हूँ और आप अपनी ब्रह्मात्माओंको इस प्रकार सुरताके द्वारा संसारमें भेजकर झूठे खेलका अनुभव करा रहे हैं.

अब धनी जानो त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत ।
कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत ॥ १४

हे धनी ! आप जैसा चाहें वैसा ही करें परन्तु मेरी आत्मा आपके दर्शनोंके लिए कभी-कभी तरसने लगती है. इस प्रकारकी जो भी इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, उनको भी आप स्वयं ही उत्पन्न करते हैं.

मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड मूल ।
ताथें जानो त्यों करो, सरमंदी या सनकूल ॥ १५

हे धनी ! मैं तो स्वप्नवत् जगतमें हूँ. आपने मुझे मूलतः (पूर्णरूपसे) इस जड़रूप मायाका खेल दिखाया है. इसलिए आप जैसा चाहें वैसा करें, चाहे मुझे स्वयंसे विमुख कर लज्जित करें या अपनी ओर उन्मुख कर आनन्दित करें.

अब क्या करों किन सों कहूं, कोई रह्या न केहेवे ठौर ।
ए भी कहावत तुमहीं, कोई नाहीं तुम बिना और ॥ १६

मैं अब क्या करूँ और किससे कहूँ, अपनी बात कहनेके लिए आपके अतिरिक्त दूसरा कोई ठिकाना भी नहीं है. जो कुछ कहला रहे हैं वह भी आप ही कहला रहे हैं. वस्तुतः आपके बिना अन्य कोई नहीं है.

बिना फुरमाए हक के, दिल जरा न उपजत ।
तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या ना देवत ॥ १७

परब्रह्मके आदेश बिना हृदयमें लेशमात्र भी इच्छा उत्पन्न नहीं होती. फिर मेरे हृदयमें यह बात क्यों उत्पन्न हो रही है कि मेरी चाहना परब्रह्म परमात्मा पूर्ण नहीं करते.

हक उपजावत देवे को, सो हकै देवन हार ।
मैं दोस हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार ॥ १८

धामधनी हमारे हृदयमें जो भी इच्छा उत्पन्न करवाते हैं वस्तुतः वह पूर्ण करनेके लिए ही है और हमारे मनोरथ पूर्ण करनेवाले भी वे ही हैं. परन्तु उनके प्रति सन्देह (दोष देख) कर मैं क्यों दोषी बनूँ ?

उपजे उपजावें सब हक, हक देवें दिलावें ।
मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवे ॥ १९

हृदयमें इच्छा उत्पन्न करनेवाले तथा कराने वाले स्वंय परमात्मा ही हैं और उन इच्छाओंको पूर्ण करने अथवा करवाने वाले भी वे स्वयं ही हैं इसलिए उनकी कृपाके प्रति सन्देह उत्पन्न कर मुझे अपराधी बनाने वाला यह अहंभाव (मैं) कहाँसे बीचमें आ रहा है ?

हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोस हक को देवत ।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत ॥ २०

धामधनीने ही तो मुझे यह सुधि दी है कि वस्तुतः ''मैं'' कुछ भी नहीं हूँ, सब कुछ वे स्वयं हैं. तथापि मैं उनको ही दोष दे रही हूँ. वस्तुतः इस अहंभाव (मैं) को मिटा देना चाहिए, जो धामधनी और मेरे बीच परदा बनकर मुझसे कुचेष्टाएँ करवाता है.

मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोंचत नाहें ।
सो बीच दिल के बैठ के, गुनाह देत रूह के ताएं ॥ २१

यह अहंभाव (मैं) तो नश्वर जगतका है, यह सत्य परमात्मा तक पहुँच ही नहीं पाता इसलिए मेरे हृदयमें बैठकर मेरी आत्माको दोषी (अपराधी) बनाता है.

मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस ।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस ॥ २२

यह संसारका अहंभाव वारंवार 'मैं' 'मैं' कहता हुआ थकता नहीं है और परमात्माको दोष देता है. इसलिए हे धनी ! अब आप ऐसी कृपा करें जिससे मैं इस अहंभावके प्रति अचेत (उदासीन) हो जाऊँ.

झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित ।
बाहेर उपली अंधेर देखाएके, होए जात असत ॥ २३

यह झूठा अहंभाव सत्य परमात्माका निरूपण नहीं कर सकता क्योंकि सत्य परमात्मा अखण्ड स्वरूप हैं. यह तो मात्र बाह्य (मायावी) अन्धकार (अज्ञानता) का ही निरूपण कर स्वयं भी मिट जाता है.

ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया ।
सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया ॥ २४

इस नश्वर संसारके सभी खेल मिथ्या हैं, मात्र बाह्य दृष्टिसे ही इनका अस्तित्व है. इसलिए मायावी संसारका यह अहंभाव सत्य परमात्माका निरूपण कैसे कर सकता ?

सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक ।
ए संदेसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट होए बेसक ॥ २५

सत्य परमात्माका निरूपण सत्य आत्मा ही कर सकती है. ये सत्य आत्माएँ (ब्रह्मात्माएँ) मिथ्या संसारमें अवतरित हुई हैं. उनका सन्देश (प्रार्थना) तभी परमात्मा तक पहुँचेगा जब वे तारतमज्ञानके द्वारा अज्ञानको दूर कर निःसन्देह हो जाएँगी.

ए सांच संदेसा हक को, तोलों ना पोहोंचत ।
गेहेरा जल है मैंय का, आडा जो असत ॥ २६

ब्रह्मात्माओंका सत्य सन्देश तब तक परमात्मा तक नहीं पहुँच सकता जब तक आत्माओं पर 'मैं' (अहंभाव) रूपी गहरे जलका यह झूठा आवरण वर्तमान है.

सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर ।
सत संदेसा तौहीद को, तोलों पोहोंचे क्यों कर ॥ २७

जब तक यह संसारकी झूठी 'मैं' (अहंभाव) हृदय पर आवरण बनकर अपना प्रभाव जमाती रहती है तब तक ब्रह्मात्माओंका सन्देश अद्वैत परमात्मा तक कैसे पहुँच सकता है ?

ए मैं मैं क्योंए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा ।
आडे नूर जमाल के, एही है परदा ॥ २८

स्वयं मिथ्या कहलाने वाला यह अहंभाव (मैं) किसी भी प्रकार मिट नहीं रहा है. मेरे और परब्रह्म परमात्माके बीच यही तो परदा बना हुआ है.

ए पट नीके पाइया, जो मैं को उडावे कोए ।
ए द्रढ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए ॥ २९

अहंभावके इस आवरणको मैंने भलीभाँति समझ लिया है. कोई इसे दूर करके तो बता दे ! धामधनीने ही इसे दृढ कर दिया है इसलिए यह अब उनकी कृपासे ही दूर होगा.

मार्‌या कह्या काढ्या कह्या, और कह्या हो जुदा ।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा ॥ ३०

इस अहंभाव (मैं) को मिटा दिया कहो अथवा हटा दिया कहो या तो स्वयं इससे दूर रहो, जब यह अहंका आवरण दूर हो जाएगा तब तो परमात्मा (का साक्षात्कार) ही शेष रहेगा.

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर ।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर ॥ ३१

इसलिए सर्वप्रथम तू अहंभावको पेय पदार्थकी भाँति पी जा और निश्चय कर कि अब यह मिट गया है. सद्‌गुरुके ज्ञानके प्रति लेशमात्र भी सन्देह मत रख फिर जीनेमें या मरनेमें कुछ भी अन्तर नहीं रहेगा.

एही पट आडे तेरे, और जरा भी नाहें ।
तो सुख जीवत अरस का, लेवे ख्वाब के माहें ॥ ३२

यही अहं तेरे और धामधनीके बीच आवरण बना हुआ है. इसके अतिरिक्त अन्य कोई आवरण ही नहीं है. इसको हटाने मात्रसे इस स्वप्नवत् संसारमें जीवित रहते हुए ही परमधामके सुखोंका अनुभव होगा.

ए सुन्या सीख्या पढ्या, कह्या बिचार्‌या विवेक ।
अब जो इसक लेत है, सो भी और उडाए पावने एक ॥ ३३

इस अहंभावके सन्दर्भमें मैंने सुना, सीखा, पढ़ा, कहा तथा विवेकपूर्वक विचार भी किया. अब तो आत्मामें प्रेमका प्रवाह बहने लगा है वह एक परमात्माकी प्राप्तिके लिए संसारके अन्य सभी आवरणोंको मिटा देगा.

तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन ।
सब बडाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन ॥ ३४

हे आत्मा ! तभी तेरी संगति सत्य सिद्ध होगी और तू ब्रह्मात्मा कहलाएगी. जब तू इस भूमिकामें पहुँच जाएगी फिर तो सर्वत्र तुम्हारी ही महिमा गाई जाएगी.

महामत कहे ऐ मोमिनो, सुनो मेरे वतनी यार ।
खसम करावें कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार ॥ ३५

महामति कहते हैं, हे मेरे परमधामकी ब्रह्मात्माओ ! सुनो, धामधनी समर्पण भावको जागृत करवा रहे हैं. आओ, अहंको मिटानेवालोंकी पंक्तिमें सम्मिलित हो जाओ.

प्रकरण २ चौपाई ८९

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं ।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसें ॥ १

आत्मिक (परमधामके) अहंभाव (मैं) को जागृत किए बिना दैहिक (देह सम्बन्धी) अहंभाव मिटता नहीं है. इस दैहिक अहंको आत्मिक अहंके द्वारा मिटाना (मारना) है. अब इस दैहिक अहंको कैसे मिटाया जाए ? जिसके कारण आज यह स्थिति बनी हुई है.

और भी हकीकत मैंयकी, जिन विध मरे जो ए ।
सोए खसम बतावत, बल अपने इलम के ॥ २

जिस प्रकार यह भौतिक अहंभाव मिट सकता है उसकी यथार्थता और भी है, धामधनी तारतम ज्ञानका वह सामर्थ्य हमें बता रहे हैं.

अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए ।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए ॥ ३

इस भौतिक अहंभावको इसी प्रकार मिटाना है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है. इसे तो ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) से ही मिटाना चाहिए जो (ज्ञान) स्वयं परमात्माने प्रकट होकर (निजानन्द स्वामीको) दिया है.

जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए ।
है नाहीं के फरेब में, सुख नूर पार का जे ॥ ४

यदि यह अहंभाव पहले ही (सद्गुरुके सम्मुख ही) मिट जाता तो ब्रह्मज्ञानकी रसधारा (वाणी अवतरण) का यह आनन्द कौन प्राप्त करता ? इस नश्वर संसारमें होनेकी भ्रान्तिमें भी तारतमज्ञानके द्वारा अक्षरातीत परमधामका सुख प्राप्त होता है.

मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मार्‌या मैं ।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम सें ॥ ५

अब मेरा दैहिक अहंभाव मिट गया है, इस अहंको आत्मिक अहंभावने मिटा दिया. अब यह आत्मिक अहंभाव (धामधनीकी अङ्गना होनेका बोध) कैसे मिट सकेगा ? यह तो धामधनीके द्वारा ही जागृत हुआ है.

मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम ।
इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम ॥ ६

हे धनी ! मैं आपके चरणोंको प्राप्त कर सकी, आपने ही मुझे यह शक्ति दी है. इसी प्रकार (आपके चरणोंमें आने) से यह भौतिक अहंभाव भी मिट सकता है. आपके बिना तो यह मिटना सम्भव ही नहीं है.

जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम ।
मैं ना होने में कछू ना रह्या, किया कराया खसम ॥ ७

यदि भौतिक अहंभावको मैं स्वयं मिटा सकती तो आपके चरणोंमें कौन आता ? अहंभावके मिटने पर कुछ भी शेष नहीं रहता, यह सब करने तथा करवाने वाले वस्तुतः आप धामधनी ही हैं.

ना मैं अव्वल ना आखर, मैं नाहीं बीच में ।
बन्या बनाया आप ही, सो सब तुमहीं से ॥ ८

यह भौतिक अहंभावका अस्तित्व आरम्भमें (सृष्टिके पूर्व) भी नहीं था और अन्तमें भी नहीं रहेगा, इसलिए इस सृष्टि (मध्य) में भी इसका कोई अस्तित्व नहीं है. इसे बनाने तथा मिटाने वाले आप ही हैं, वस्तुतः यह सब कुछ आपसे ही तो है.

मैं तो तुमारी कीयल, अव्वल बीच और हाल ।
तुम बिना जो कछू देखत, सो सबमें आग की झाल ॥ ९

इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के आदि (व्रजलीला), मध्य (रासलीला) तथा वर्तमान (जागनी लीला) का यह अहंभाव वस्तुतः आपके द्वारा ही तो बनाया गया है. आपके अतिरिक्त जो कुछ भी अहंभाव दिखाई देता है वह अग्निकी ज्वालाके समान है.

जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं ।
समझें थें मैं उड गई, सब कछू हुआ तुम सें ॥ १०

जब तक मुझे इस रहस्य (आपकी सर्वशक्तिमत्ता) का बोध नहीं हुआ था तब तक मुझमें दैहिक अहंभावका अस्तित्व प्रबल था. अब बोध होने पर यह अहंभाव मिट गया है. वस्तुतः यह सब आपसे ही तो सम्भव हुआ है.

अव्वल आखर सब तुमही, बीच में भी तुम ।
मैं खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम ॥ ११

इस महिमामयी रात्रिके आदि (व्रज), मध्य (रास) और अन्त (जागनी) में सर्वत्र आपका ही प्रभुत्व रहा है. आपके आदेश (हुकुम) ने जैसे नचाया मैं इस खेलमें उसी प्रकार नाचती रही हूँ.

इन मैं को तो तुम किया, आद मध्य और अब ।
और मैं तो नेहेचे नहीं, कितहूं न देखी कब ॥ १२

इस आदि, मध्य और वर्तमानके अहंभावको आपने ही उत्पन्न किया है. अन्यथा इसके अतिरिक्त निश्चय ही अहंभावका कोई अस्तित्व ही नहीं है, न ही वह कहीं दिखाई दिया है.

केहेत केहेलावत तुमहीं, करत करावत तुम ।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम ॥ १३

यह सब कहनेवाले अथवा कहलानेवाले आप ही हैं, इसी प्रकार सब कुछ करनेवाले अथवा करवाने वाले भी आप ही हैं. जो कुछ हुआ है अथवा भविष्यमें होगा वह सब आपसे ही है. तारतम ज्ञानके द्वारा ही मुझे इस रहस्यकी पहचान हुई है.

अब ए मैं जो हक की, खडी इलम हक का ले ।
चौदे तबक किए कायम, सो भी मैं है ए ॥ १४

इस समय यह जो आत्मिक अहंभाव है वह आपके द्वारा ही जागृत किया हुआ है और यह भी ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) को लेकर ही विद्यमान है. इसी अहंभावने (तारतम ज्ञानके द्वारा) चौदह लोकोंके जीवोंको अखण्ड सुख प्रदान किया है.

ए मैं है हक की, ए है हक का नूर ।
खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर ॥ १५

यह आत्मिक अहंभाव धामधनीका ही जागृत किया हुआ है. वस्तुतः यह आत्मा धामधनीकी ही अङ्गना (तेज-नूर) है. ब्रह्मात्माओंको जागृत कर यह स्वयं धामधनीके चरणोंमें ही जागृत होगी.

ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्योंकर ।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावें घर ॥ १६

इस प्रकारका यह आत्मिक अहंभाव-आत्मबोध (जागृति) कैसे मिट सकेगा ? यह तो स्वयं जागृत होकर धामधनीके चरणोंमें पहुँचेगा एवं ब्रह्मात्माओंको भी जागृत कर धामधनीके चरणोंमें पहुँचाएगा.

एही मैं है हुकम, एही मैं नूर जोस ।
एही मैं इलम हक का, एही मैं हक करे बेहोस ॥ १७

यह आत्मिक अहंभाव धामधनीका ही आदेश है, यही उनका तेज तथा आवेश स्वरूप है. ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) से जागृत होनेवाला अहंभाव भी यही है, इसीको धामधनीने मायाके खेलमें मूर्च्छित कर दिया था.

हक चलाए चलहीं, हक बैठाए रहे बैठ ।
सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आडे कोई ऐंठ ॥ १८

वस्तुतः धामधनीके चलाने पर यह चलता है, उनके बैठाने पर बैठता है. उसे निद्रित करना (सुलाना) तथा जागृत करना धामधनीके ही हाथोंमें है, उनके आदेशके समक्ष किसीका भी कोई हठ नहीं चलता.

रोए हंसे हारे जीते, ईमान या कुफर ।
जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर ॥ १९

रोना-हँसना, हारना-जीतना, परमात्माके प्रति विश्वास रखना या अविश्वास करना, परमात्माकी आराधना करना या उनसे विमुख होना इन सभीकी लेशमात्र भी सुधि उनके आदेशके बिना नहीं होती.

ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम ।
इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम ॥ २०

यह आत्मिक अहंभाव (धनीकी अङ्गना होनेका भाव) भी उनके ही आदेशके द्वारा जागृत होता है. इस अहंभावमें कोई बन्धन नहीं है, यदि इसमें हमारा अपना पन होता तभी तो यह बन्धनरूप होता.

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रह्या न हमपना हम ।
यों पोहोंचाई बका मिने, इन विध मैं को खसम ॥ २१

हम भौतिक अहंभावके कारण बँधे थे, धामधनीने जागृत (अङ्गनाभावका बोध करवा) कर हमारे बन्धनोंको मिटा दिया. अब हममें कोई भी अपनापन (अहंभाव) नहीं रहा. इस प्रकार धामधनीने आत्मिक अहंको जागृत कर हमें अखण्ड परमधाममें पहुँचा दिया.

अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं ।
जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें ॥ २२

अब धामधनीके आदेशको शिरोधार्य कर धामधनीकी यह अङ्गना (मैं-आत्मा) जागृत हुई है. इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि यह सब धामधनीके तारतमज्ञानसे ही सम्भव हुआ है.

जुदे सब थें इन विध, इन विध सब में एक ।
सांच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कह्या विवेक ॥ २३

इस माया-मोहमय जगतकी 'मैं' आनेसे सभी आत्माओंमें भिन्नता दिखाई देती है एवं धनीकी 'मैं' का (मैं धनीकी अङ्गना हूँ ऐसा) बोध होने पर अद्वैत स्वरूपका अनुभव होता है. इस प्रकार तारतमज्ञानने इस खेलमें सत्य और असत्यका विवेकपूर्ण निरूपण कर दिया है.

हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खडी इलम ए ।
ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले ॥ २४

धामधनीका आदेश, जोश (आवेश), तेज एवं तारतमज्ञानको लेकर उनकी यह अङ्गना (आत्मा) यहाँ खड़ी है. धामधनीकी ये पाचों शक्तियाँ ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरीसृष्टिको जागृत कर परमधाम पहुँच जाएगी.

ए सातों भए इन विध, पोहोंचे बका में जब ।
आप उठ खडे हुए, पीछे खेल कायम किया सब ॥ २५

इस प्रकार जब उपर्युक्त सातों (आदेश, जोश, तेज, ज्ञान, अङ्गना (श्यामाजी), ब्रह्मात्मा एवं ईश्वरीसृष्टि) अखण्ड धाममें अपने-अपने स्थानमें पहुँच जाएँगे. तब अक्षरब्रह्म स्वयं भी जागृत होंगे फिर यह खेल अखण्ड हो जाएगा.

मैं तो तेहेकीक ना कछू, और ना कछू मुझसे होए ।
ए मैं विध विध देखिया, इन मैं में न खतरा कोए ॥ २६

इस भौतिक अहंभावका निश्चय ही कोई अस्तित्व नहीं है, और न ही मुझसे कुछ कार्य हो सकता है. जब धनीकी कृपासे मुझे आत्मबोध (मैंका अनुभव) हुआ तब ज्ञात हुआ कि इस आत्मिक अहंभाव में कोई भय नहीं है.

मैं ना अव्वल ना बीच में, ना कछू मैं आखर ।
किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर ॥ २७

आदि, मध्य और अन्तमें कहीं भी मेरा (आत्माका) प्रभुत्व (वर्चस्व) नहीं है. जो हुआ है, हो रहा है तथा होगा वह सब सर्वशक्ति सम्पन्न परमात्माके द्वारा ही है.

ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम ।
बुलाई अपना इलम दे, कर विध विध रोसन हुकम ॥ २८

निश्चय ही धामधनीने मेरी क्षमताका बोध करवा कर मुझे अपने चरणोंमें ले लिया. उन्होंने अपना तारतम ज्ञान देकर मुझे विभिन्न प्रकारसे प्रकाशित किया और अपने पास बुला लिया.

हकें गिरो बुलाई मोमिनों, हकें कराई सोहोबत ।
नूर पार बचन विध विध के, हकें दई नसीहत ॥ २९

धामधनीने ही तारतम ज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माओंको बुला कर मुझसे मिलवाया. विभिन्न प्रकारके वचनोंके द्वारा अक्षरसे परे अक्षरातीतका उपदेश भी सद्‌गुरुके रूपमें आकर धामधनीने ही दिया है.

मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक ।
हकें इलम जोस देय के, करी सो हुकमें हक ॥ ३०

मैं कुछ भी नहीं हूँ, मुझे कुछ ज्ञान भी नहीं है, मेरा कोई विशेष अस्तित्व भी नहीं है. धामधनीने ही अपना ज्ञान तथा जोश प्रदान कर अपने आदेशसे अपना कार्य करवाया है.

हकें किया हक करत हैं, और हकै करेंगे ।
ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे ॥ ३१

यह सब धामधनीने ही किया है, वे ही कर रहे हैं तथा भविष्यमें भी वे ही करनेवाले हैं. मेरी आत्माको भी यह निश्चय हो गया है और मैंने भी अपनी आँखोंसे भी यह सब देख लिया है.

ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल ।
और मुझमें जरा न देखिया, बिना नूर जमाल ॥ ३२

मेरे वचन, कर्म तथा मनोभाव सभी धामधनीकी प्रेरणासे कार्यरत हैं. मैंने अपने अन्दर धामधनीके आदेशके अतिरिक्त कुछ भी नहीं देखा है.

अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे ।
जिन दिल अरस खावंद, तित क्यों कर कोई मूसे ॥ ३३

अब धामधनी मेरे हृदयमें किसी भी प्रकारका भय आने नहीं देंगे. जिस हृदयमें परमधामके धनी विराजमान हों उसमें कैसे यह माया प्रवेश कर उसे लूट सकती है ?

दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दजाल ।
इलम देखें ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल ॥ ३४

वस्तुतः परमात्माके अतिरिक्त किसीका अस्तित्व ही नहीं है, यह मन मायाके कारण ही दुष्ट (दज्जाल) बना हुआ है. तारतम ज्ञानसे जागृत होकर देखें तो इस मनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, इसीलिए ज्ञान हो जाने पर यहाँ किसीकी लेशमात्र भी अवनति नहीं होगी.

जब हकें इलम ए दिया, तेहेकीक रूह को तुम ।
कर मनसा बाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकुम ॥ ३५

हे आत्मा ! जब धामधनीने तुझे निःसन्देह बना देने वाला यह तारतम ज्ञान दे दिया तब अब तू मन, वचन एवं कर्मसे उनको ही याद कर. उनके आदेश (हुकुम) के बिना यहाँ कुछ भी संभव नहीं है.

यों ज्यों एह बिचारिए, त्यों त्यों तेहेकीक होता जाए ।
इत जरा नूर जमाल बिना, रूह में कछू न समाए ॥ ३६

जैसे जैसे इस पर विचार करते हैं, वैसे वैसे निश्चय दृढ होता जाता है कि अक्षरातीत परमात्माके अतिरिक्त ब्रह्मात्माओंमें कुछ भी समाया हुआ नहीं हैं.

रूहे तन हादीयका, हादी तन हैं हक ।
नूर तन नूर जमाल का, इत जरा नाहीं सक ॥ ३७

ब्रह्मात्माएँ श्यामाजी की अंग स्वरूपा हैं और श्यामाजी श्री राजजीकी अंग स्वरूपा हैं. इसी प्रकार अक्षर ब्रह्म भी अक्षरातीत के ही अंग हैं. इसमें कोई सन्देह नहीं हैं.

ए मैं तैं सब हक की, ए इलम अकल धनी ।
नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी ॥ ३८

यह मैं या तू भी सब परब्रह्म परमात्मा की है, यह ज्ञान और बुद्धि (विवेक) भी उनकी ही दी हुई है. इस प्रकार अंगी अंगना के भावसे उनका तेज, आवेश तथा आदेश भी हमारी सम्पदाएँ हैं.

एह खेल हकें किया, आप भी संग इत आए ।
अरस में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए ॥ ३९

इस नश्वर खेल की रचना परमात्माने ही करवायी है और वे स्वयं आवेश के रूपमें इस खेलमें आए हैं. वस्तुतः धामधनीने ऐसा नश्वर खेल रचाकर हमें परमधाममें बैठे बैठे दिखाया है.

भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी ।
मेहेर करी इन विध की, बैठे खेलै में जागी ॥ ४०

धामधनीने ही यह खेल दिखा कर इसमें हमें परमधाम तथा धामधनीको भूला दिया एवं वियोगका अनुभव करवाया. अब उन्होंने ही तारतम ज्ञान देकर हम पर ऐसी कृपा की कि हम खेलमें बैठे हुए भी जागृत हो गईं.

जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल ।
यामें संदेसा कहे, इत बैठे हैं सामिल ॥ ४१

ब्रह्मात्माओंको जागृत कर धामधनीने परमधाममें अपने चरणोंमें ही ले लिया. इस संसारमें भी वे अपनी आत्माओंके बीच विराजमान होकर अपना सन्देश दे रहें हैं.

इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हुकमें किया पसार ।
ए मैं हुकमें मैं करी, अब हुकम देत मैं मार ॥ ४२

न मैं (ब्रह्मात्मा) इस संसारमें आई और न ही यहाँसे जागृत होकर परमधाम लौटी. धामधनीके आदेशने ही इस जगतरूप स्वप्नका विस्तार किया है. इस भौतिक अहंभावको भी इसी आदेश ने उत्पन्न किया है और अब यही इसे मिटा भी रहा है.

जब लग मैं सुपने मिने, नाहीं खसम पेहेचान ।
तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान ॥ ४३

जब तक मैं स्वयंको स्वप्नमें मान रही थी तब तक अपने धनीकी पहचान नहीं कर सकी. तब तक मैने संसारका सम्पूर्ण भार अपने सिरपर लिया हुआ था.

अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम ।
तब मैं में जरा ना रही, मैं बैठी तले कदम ॥ ४४

अब तारतमज्ञानके द्वारा मुझे अपने धनी तथा इस स्वप्नवत् संसारकी सुधि हुई और धामधनीके आदेशको भी मैंने जान लिया. तब मुझमें यह भौतिक अहंभावका लेशमात्र भी अस्तित्व नहीं रहा तथा मैंने स्वयंको धामधनीके चरणोंमें ही बैठी हुई पाया.

इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोंचत ।
नूर तजल्ला के अन्दर की, कौन इसारतें खोलत ॥ ४५

यदि यह तारतम ज्ञान नहीं आया होता तो इस जगतमें धामधनीका सन्देश कैसे पहुँच पाता ? और परम चैतन्य स्वरूप परब्रह्म परमात्माकी दिव्य लीलाओंके रहस्योंका सङ्केत कौन स्पष्ट कर पाता ?

सब म्याराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें देत ।
जो अरस अरवाहें इतना होतीं, तो मता खिलवत का कौन लेत ॥ ४६

रसूल मुहम्मदको हुए साक्षात्कार (म्याराज) के साङ्केतिक वचनोंको कुरानकी साक्षी देकर कौन स्पष्ट करता ? यदि परमधामकी आत्माएँ यहाँ आई नहीं होती तो परमात्माकी ऐकान्तिक लीलाओंका रहस्य कौन ग्रहण करता ?

चौथे आसमान लाहूत में, रूह अल्ला बसत ।
पेहेलें बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत ॥ ४७

चौथे आसमान परमधाममें श्यामाजी (रूहअल्लाह) रहती हैं, यह बात कुरानमें पहलेसे ही बताई गई है. इस रहस्यको ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकती हैं.

कुंजी नूर के पार की, रूह अल्ला दई मुझ ।
केहे बातून मगज मुसाफ का, करूं जाहेर जो है गूझ ॥ ४८

अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामके रहस्योंको स्पष्ट करनेवाली कुञ्जी (तारतमज्ञान) श्यामा स्वरूप सद्गुरुने मुझे प्रदान की और कुरान आदि धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेका आदेश दिया अब मैं उन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर रही हूँ.

जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए ।
सो मोकों कुंजी देय के, कौल पर जाहेर कराए ॥ ४९

परमात्माके आदेशसे रसूल मुहम्मदने जिन रहस्योंको सबसे छिपाकर (गुप्त) रखा था उन्हीं वचनोंको सद्गुरुने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी देकर मुझसे नियत समय पर स्पष्ट करवाया.

तो गुनाह अरस अजीम में, लिख्या सब म्याराज के माहें ।
करें जाहेर अरस दिल मोमिन, जित जबराईल पोहोंच्या नाहें ॥ ५०

म्याराजनामा ग्रन्थमें रसूल मुहम्मदने बताया है कि परमधाममें आत्माओंको दोष (गुनाह) पहुँचा है. जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता भी पहुँच नहीं पाया ऐसे परमधाममें दोष कैसे पहुँचता ? इस रहस्यको ब्रह्मात्माएँ ही स्पष्ट करेंगी जिनका हृदय परमात्माका धाम है.

ए मैं बोले जो कछू, सो संदेसे रूहअल्ला जान ।
ए इलम हकीकत वतनी, कहूं हक बिना ना पेहेचान ॥ ५१

यह मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह श्यामा स्वरूप सद्गुरुका ही सन्देश है (वे ही मेरे हृदयमें विराजमान होकर यह कहलवा रहे हैं). यह ब्रह्मज्ञान परमधामकी ही यथार्थता प्रकट कर रहा है. परमात्माकी पहचानके अतिरिक्त इसमें अन्य कोई विवरण नहीं है.

हक पैगाम भेजत हैं, सो देत साहेदी कुरान ।
दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान ॥ ५२

कुरान यह साक्षी देता है कि स्वयं परब्रह्म परमात्मा ही अपनी आत्माओंके

लिए सन्देश भेजते हैं. वे स्वयं ही अपनी साक्षी देते हैं और स्वयं जगतमें आकर उसे स्पष्ट भी करते हैं.

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर जलाल पास नाहें ।
सो रोसनी नूरजमाल की, लजत आवत मोमिनों माहें ॥ ५३

मेरी आत्मा अक्षरातीतके उस प्रेमकी साक्षी देती है जो अक्षरब्रह्मको भी ज्ञात नहीं है. परब्रह्मके इस प्रेमके प्रकाशसे ब्रह्मात्माओंको ही आनन्दका अनुभव होता है.

जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर ।
ना तो सुख नूर जमाल को, बैठे लेवें कायम घर ॥ ५४

जब तक हमारी दृष्टि स्वप्नवत् जगतमें लगी रहती है तब तक हमें इस प्रकारके आनन्दकी प्रतीति नहीं होती. अन्यथा हम ब्रह्मात्माएँ सर्वदा परमधाममें बैठी हुई ही अक्षरातीतका प्रेमानन्द प्राप्त करतीं.

इलहाम आवत परदे से, सो नाहीं चौदे तबक ।
सो मोमिन इन ख्वाबमें, लेत सुख बेसक ॥ ५५

इस पाञ्चभौतिक शरीररूपी परदेसे तारतमवाणीके रूपमें दिव्य सन्देश अवतरित हो रहे हैं. जो चौदह लोकोंमें कहीं भी नहीं है. इसी ब्रह्मज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माएँ इस स्वप्नवत् संसारमें भी अखण्ड सुख प्राप्त करती हैं.

झूठ न सुन्यो कबूं इत थें, जिन करो झूठी उमेद ।
ए गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद ॥ ५६

'हे ब्रह्मात्माओ ! तुमने कभी भी यहाँ असत्य नहीं सुना है इसलिए मिथ्या खेल देखनेकी आशा मत रखो' इस प्रकार कहकर अपनी आत्माओंको सावचेत करनेवाले अक्षरातीत धनीके हृदयका गूढ़ रहस्य इसी तारतमवाणीके द्वारा तुम्हें स्पष्ट होगा.

आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन ।
क्यों ना बिचारो अकलसों, कर पाक दिल रोसन ॥ ५७

इस पाञ्चभौतिक शरीररूपी परदेसे परमात्माका सन्देश (तारतमवाणीके

रूपमें) ब्रह्मात्माओंको प्राप्त हो रहा है. हे ब्रह्मात्माओ ! तुम इस ब्रह्मज्ञानके प्रकाशसे अपने हृदयको निर्मलकर इस पर विवेकपूर्वक विचार क्यों नहीं करतीं ?

इतथें अरज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक कों ।
जो असल अकलें बिचारिए, तो आवे दिल मों ॥ ५८

इस नश्वर संसारसे जो भी प्रार्थना की जाती है, वह निश्चय ही परमात्मा तक पहुँचती है. अपनी जागृत बुद्धिसे विचार करोगे तो इसका अनुभव हृदयमें हो जाएगा.

तेहेकीक अरज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल ।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल असल ॥ ५९

पवित्र हृदयसे की गई प्रार्थना निश्चित रूपसे परमात्मा तक पहुँचती है. धामधनीने मुझे ऐसी स्थिति प्रदान की है कि मेरा हृदय अखण्ड परमधामका अनुभव करने लगा है.

ए जो पाक दिलें बिचारिए, देखो आवत इलहाम ए ।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे ॥ ६०

पवित्र हृदयसे विचार करो तो अनुभव होगा कि परमात्माका सन्देश परोक्ष रूपसे प्राप्त हो रहा है. परन्तु जिस यथार्थताको पवित्र हृदय अनुभव कर सकता है वह बाह्यदृष्टिसे प्रत्यक्ष नहीं होगा.

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत ।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत ॥ ६१

धामधनीसे मिल रही प्रेरणा तथा उनके लिए की गई प्रार्थनाको यह आत्मा इसी हृदयसे देख (अनुभव कर) रही है. वस्तुतः यह आत्मा धामधनीके चरणोंमें बैठी हुई इस आनन्दका अनुभव कर रही है.

महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में ।
ए मैं असल अरस की, ए मैं मोमिनों हक से ॥ ६२

महामति कहते हैं, धामधनीकी कृपासे जागृत हुआ यह आत्मिक अहंभाव

अखण्ड परमधाममें पहुँच गया है. वस्तुतः यह अहंभाव अखण्ड परमधामका ही है और हम ब्रह्मात्माओंको भी यह धामधनीकी कृपासे ही प्राप्त हुआ है.

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं ।
ए केहेने को भी ना कछू, तो कहा कहूं तुमसे ॥ १

हे धनी ! आप मुझे जैसे रखना चाहें रखें मैं तो आपकी ही अङ्गना हूँ. इसमें मुझे कुछ कहना भी नहीं है और कहूँ तो भी आपसे क्या कहूँ ?

कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत ।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुमहीं हक जानत ॥ २

वैसे तो कुछ-कुछ कहनेकी इच्छा अन्तरसे उत्पन्न होती है, उसे भी आप ही उत्पन्न करा रहे हैं. मेरे हृदयके बाहर, भीतर तथा अन्तरात्माके सभी भावोंको आप स्वयं ही जानते हैं.

जोलों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए ।
ए मैं मांगे तुमारी तुमपें, तुम मंगावत जे ॥ ३

जब तक आपने मुझे होशमें रखा तब तक ही आपसे कुछ माँगनेकी इच्छा उत्पन्न होती रही. मैंने आपकी 'मैं' आपसे ही माँगी है और यह भी आप ही मँगा (माँगनेकी प्रेरणा दे) रहे हैं.

मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम ।
मैं मांगे तुमारी तुम पें, ना तो क्यों डरे अंगना खसम ॥ ४

मैं आपसे माँगती हुई भी डरती हूँ और इस प्रकार भय उत्पन्न कराने वाले भी आप ही हैं. मैंने आपकी 'मैं' आपसे ही तो माँगी है अन्यथा अङ्गना अपने स्वामीसे माँगनेमें क्यों डरती ?

हजरत ईसें मांगिया, हक अपनाइत कर ।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर ॥ ५

स्वयं निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (हजरत ईसा) ने

अपने स्वामी समझकर आपसे कुछ (जागनी कार्यके उत्तराधिकारीके विषयमें) माँगा. उनकी इस माँगको दोष सिद्ध कर दिया गया. यह देखकर मुझे माँगनेमें भय लगता है.

फुरमान देख के मैं डरी, देख रूह अल्ला पर गुना ।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका ॥ ६

कुरानके इन वचनोंको देककर मैं भयभीत हो गई कि स्वयं श्यामाजी (श्रीदेवचन्द्रजी) पर दोषारोपण हुआ है. हे ब्रह्मात्माओ ! श्री श्यामाजी तो स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माकी विशेष अङ्गरूपा (आनन्दअङ्ग) हैं (तथा ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि हैं) इस पर कोई सन्देह ही नहीं है.

तो डर बडा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर ।
माफक रूह अल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर ॥ ७

उन पर किए गए दोषारोपणको देखकर मुझे बड़ा भय लगा क्योंकि श्यामाजीके अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके समान समर्थ आत्मा अन्य कोई नहीं है.

ए खावंद है अरस अजीम का, हादी हमारा सोए ।
इस मानिंद जौदे तबक में, हुआ न होसी कोए ॥ ८

वे स्वयं परमधामके स्वामी तथा हमारे सद्गुरु हैं. इन चौदह लोकोंमें उनके समान न कोई हुआ है और न ही होगा.

मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहें सुनो सब मिल ।
मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल ॥ ९

मैं उनके विषयमें थोड़ी बात कहती हूँ. हे पवित्र आत्माओ ! तुम सब मिलकर सुनो. इसे ध्यानपूर्वक ग्रहण करना. यह अहंभाव (मैं पन) बड़ा ही कठोर है.

रूह अल्ला करी बंदगी, तिनमें उनकी मैं ।
तो गुनाह कह्या इन पर, इन मैं मांग्या हक पें ॥ १०

श्यामाजी स्वरूप सद्गुरुने धामधनीकी बड़ी आराधना (पूजा) की तथा

अपनत्व जानकर धनीसे कुछ माँगनेकी चाहना की. इसीलिए उनपर दोषारोपण हुआ कि उन्होंने धनीसे कुछ माँग की.

मेरे ना कछू बंदगी, ना कछू करी करनी ।
ओ मैं मुझमें ना रही, ए तो मैं हकें करी अपनी ॥ ११

मेरी तो कोई सेवा (आराधना) भी नहीं है और मैंने कोई श्रेष्ठ कर्म भी नहीं किए हैं. इसलिए मुझमें ऐसी मैं रही ही नहीं किन्तु यह जो मैं (अहंभाव) है वह भी धामधनीके द्वारा ही जागृत की हुई है.

मैं थी बीच लडकपने, धनी तुमारी पढायल ।
मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल ॥ १२

मैं तो बाल्यावस्था (अज्ञानावस्था) में थी. हे धनी ! आपने ही तो मुझे शिक्षित किया. मुझमें न ऐसा कोई विश्वास था तथा पूजा-आराधना करनेकी आशा ही थी. मैं तो मात्र आपकी कृपापात्र हूँ.

मैं जो मांगी बेखबरी, सो उमेद पूरी सब तुम ।
तब उस खुदी की मैं को, दिल चाह्या दिया हुकम ॥ १३

मैंने अज्ञानतामें जो माँग की थी उसे भी आपने ही पूर्ण की. मेरे उस भौतिक अहंभावको भी आपने ही अपने आदेशसे अनुकूल बनाया.

अब मांगूं सिर हुकुम, हुज्जत लिए खसम ।
अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम ॥ १४

हे धनी ! अब मैं आपके ही आदेशको शिरोधार्यकर आपके द्वारा दिए गए सम्मानके अधिकारके साथ आपसे माँगती हूँ. अब मेरी इच्छाएँ कैसे पूर्ण नहीं होंगी जब आपने सब कुछ अपने ही आदेशके आधीन कर दिया है.

खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार ।
ना हुज्जत रूह अरस की, तो होत ना दिल करार ॥ १५

मैं आपको वारंवार अपने स्वामी (धामधनी) कहती हूँ किन्तु आपके स्वामित्वका महत्त्व समझकर मैं अपना दायित्व नहीं निभा रही हूँ.

परमधामकी आत्मा होनेका अधिकार (दावा) भी मैं नहीं जता रही हूँ इसीलिए मनमें शान्ति नहीं हो रही है.

जो मांगू हक जान के, अरस रूह कर हुज्जत ।
तो तबहीं उमेद पोहोंचहीं, जो दिल में यों उपजत ॥ १६

मैं आपको अपने स्वामी समझकर कुछ माँगू तथा स्वयं परमधामकी आत्मा होनेका दावा करने लगूँ तो निश्चय ही मेरी आशा पूर्ण हो जाएगी, ऐसा मनमें विचार उत्पन्न होता है.

जैसा हक है सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें ।
बिसर जात है नींद में, दृढ होत न ख्वाब के माहें ॥ १७

जिस प्रकार परमात्मा हमारे सिर पर हैं (वे सब प्रकारसे हमारी रक्षा करते हैं) उस प्रकार उन (की कृपा) को हम निश्चय ही नहीं जानतीं. अज्ञानकी नींदमें हम सबकुछ (उनकी कृपाको) भूल जातीं हैं इसलिए स्वप्नवत् संसारमें परमात्माकी अनुभूति दृढ़ नहीं हो पाती.

जो मांग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया ।
सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया ॥ १८

इस स्वप्नवत् जगतमें मैंने जो माँगा, धामधनीने मेरी सभी इच्छाएँ पूर्ण कीं. तथापि धामधनीने इस स्वप्नवत् जगतमें मुझ पर जो कृपा की उसकी मुझे पर्याप्त जानकारी नहीं हुई.

जो मैं मांगूं जाग के, और जागे ही में पांऊं ।
तो कारज सब सिध होवहीं, जो फैलें नींद उडाऊं ॥ १९

यदि मैं जागृत होकर कुछ माँगूँ और जागृत अवस्थामें ही मेरी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँ तो मैं अपने आचरणसे ही अज्ञानरूपी नींदको उड़ा दूँगी जिससे मेरे सभी कार्य (मनोरथ) सिद्ध हो जाएँगे.

ए जो नींद उडाई कौल में, जो कदी फैल में उडत ।
तो निसबत इन की हक सों, आवत अरस लज्जत ॥ २०

मैंने यह नींद मात्र कथनसे ही उड़ा दी है. यदि यह कर्मसे भी उड़ जाती

तो परमात्माके साथ आत्माका सम्बन्ध प्रत्यक्ष हो जाता और परमधामके आनन्दका भी अनुभव होता.

जो पाइए इत लज्जत, सो होवे सब विध ।
कायम सुख इन अरस के, सब काम होवें सिध ॥ २१

यदि इसी संसारमें परमधामके आनन्दकी अनुभूति हो जाए तो सभी बातें बन जातीं. परमधामके अखण्ड सुख प्राप्त होते ही सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं.

तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल न आवत हाल ।
हाल आए क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर जमाल ॥ २२

जब तक कर्म तथा मनस्थिति (रहनी) परमात्माके अनुकूल न हों तब तक संसारमें अखण्ड सुखकी अनुभूति नहीं हो सकती. यदि मन परमात्मा परक बन जाए तो उनका वियोग कैसे सहन हो पाएगा ?

ऐसा हक है सिर पर, कर दई हक पेहेचान ।
ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान ॥ २३

सद्गुरुधनीने हमें पहचान करवाई है कि ऐसे समर्थ परमात्मा हमारे रक्षक (सिर पर) हैं. तब उनके द्वारा जागृत हुई यह समर्थ आत्मा धामधनीके दर्शन किए बिना कैसे शरीर (प्राण) धारण कर रह सकेगी ?

ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन ।
क्यों रहे सुने बिना, मीठे पीउ के बचन ॥ २४

सद्गुरु धनी द्वारा जगाई हुई यह आत्मा धामधनीके दर्शन बिना कैसे रह पाएगी ? अपने पियाके मीठे वचन सुने बिना उसे कैसे शान्ति मिलेगी ?

एक पल जात पीउ दीदार बिना, बडा जो अचरज ए ।
ए जो मैं है हक की, सो क्यों खडी बिछोहा ले ॥ २५

बड़े आश्चर्यकी बात है कि अपने पियाके दर्शन बिना यह पल बीतता जा रहा है. धनीकी जगाई हुई यह आत्मा उनका वियोग कैसे सह रही है ?

छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम ।
मैं आप पेहेचान ना कर सकी, ना कछू चीन्ह्या खसम ॥ २६

इस मायामें आपने दर्शन दिए और अपना ज्ञान (तारतमज्ञान) भी दिया तथापि मैं स्वयंको तथा धामधनीको पहचान न सकी.

धनी मेरा अरस का, मैं तुमारी अरधांग ।
भेष बदल सुनाए बचन, दिया दीदार बदल के अंग ॥ २७

आप स्वयं परमधामके स्वामी हैं और मैं आपकी अर्द्धाङ्गिनी हूँ. आपने वेश बदलकर (सद्‌गुरु बनकर) हमें ज्ञान दिया और मानवके रूपमें दर्शन दिया.

मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल ।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल ॥ २८

मैं तो अज्ञानताकी गहरी नींदमें पड़ी थी, आप स्वरूप बदलकर (सद्‌गुरुके रूपमें) इस जगतमें आए. इस नश्वर शरीरकी बुद्धिसे मैं आपको कैसे पहचान सकती ?

तालब तो भी तुमसे, इसक नाहीं तुम बिन ।
सबद सुख भी तुम से, तुमहीं दिया दरसन ॥ २९

अब तो माँगना भी आपसे ही है. आपके दिए बिना प्रेम भी प्राप्त नहीं होगा. आपने ही मुझे दर्शन दिए हैं. अतः मीठे वचनोंका सुख भी आपसे ही प्राप्त होगा.

ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं देखलावत ।
तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समे बदलत ॥ ३०

जगतका खेल देखनेकी इच्छा उत्पन्न करवाने वाले भी आप ही हैं और इसे दिखाने वाले भी आप ही हैं. यह खेल भी आप ही खेला रहे हैं और समय परिवर्तन भी आप ही कर रहे हैं.

मैं को तुम खडी करी, मैं को देखाई तुम ।
मैंको तले कदम के, खडी राखी माहें हुकम ॥ ३१

हे धनी ! आपने ही मुझे (आत्मिक अहंको) जागृत किया और स्वयं

(आत्मा) की पहचान करवाई. आपने ही मुझे अपने चरणोंमें बैठाकर अपने आदेशके अधीन खड़ा किया है.

तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए ।
तुमहीं तलब करावत, तो दरसन को हरबराए ॥ ३२

आपने ही (सद्‌गुरु बनकर) नश्वर खेलमें आई हुई आत्माओंको जागृत किया और अपने वचनानुसार आत्म-जागृति (कयामत) की घड़ी दिखा दी. आप ही दर्शनकी इच्छा उत्पन्न करवा रहे हैं, इसलिए आत्माएँ आपके दर्शनके लिए व्याकुल हो रहीं हैं.

तुमहीं दिलमें यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर ।
सो पट तुम हीं से खुले, तुमसे टले अन्तर ॥ ३३

आप ही मेरे हृदयमें यह चाहना जागृत कर रहे हैं कि मैं आपका प्रत्यक्ष दर्शन कर लूँ. इसलिए अज्ञानका आवरण भी आपसे ही दूर होगा तथा आप और मेरे बीचकी दूरी भी आपसे ही मिटेगी.

श्रवनों सबद सुनाए के, दिल दीदे दीदार ।
अनेक हक मेहेरबानगी, सो कहां लों कहूं सुमार ॥ ३४

आपने ही श्रवणोंसे मीठे वचन सुनाकर अन्तःचक्षुसे दर्शन भी करवाए. मुझ पर आपके बहुतसे अनुग्रह हैं उनका मैं कहाँ तक गणना करूँ ?

जोस इसक और बंदगी, चलना हक के दिल ।
ए बकसीस सब तुम से, खुसबोए वतन असल ॥ ३५

जोश, प्रेम, उपासना तथा आपके इच्छानुकूल चलना, यह सम्पूर्ण कृपा प्रसादी आपसे ही प्राप्त हुई है. आपने ही परमधामकी सुगन्ध हमें प्रदान की है.

और कै इनायतें तुम से, सो कहां लों कहूं बचन ।
सो कै आवत हैं नजरों, पर कह्यो न जाए सुकन ॥ ३६

आपसे और भी सम्पदाएँ वरदान स्वरूप प्राप्त हुई हैं, उनका वर्णन मैं किन

शब्दोंमें करूँ ? आपके ऐसे अनेक अनुग्रह वारंवार दृष्टिगोचर भी होते हैं परन्तु उनको शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब ।
बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब ॥ ३७

मैं अपनी तुच्छ बुद्धिसे कितना कहूँ ? सब कुछ करवाने वाले आप ही हैं. इससे पूर्व या अब बाह्यरूपसे, मनसे या अन्तरात्मासे सब कुछ करने तथा करवाने वाले आप ही हैं.

जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर ।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर ॥ ३८

हे धनी ! आप मुझे प्रसन्न रखें या दुःखी रखें, चाहे मुझे पवित्र बनाकर सद्गुरुकी शरणमें रखें या दोषी सिद्ध कर दण्ड दें. यह सब आपके ही हाथोंमें है.

अब मेरा केहेना ना कछू, तुमहीं केहेलावत ए ।
मेरे कहे मैं रहत है, पर सब बस हुकम के ॥ ३९

मेरा तो कहना भी कुछ नहीं है, यह भी आप ही कहला रहे हैं. मेरे कहनेसे तो अहंभाव माना जाएगा परन्तु यह सब आपके आदेशके अधीन है.

अब सब के मनमें ए रहे, इत दिल चाह्या होए ।
तो पाइए खेल खुसाली, हक जानत सब सोए ॥ ४०

अब सभी आत्माओंके मनमें यही बात रहेगी कि यहाँके सभी कार्य उनके इच्छानुकूल रहें तभी इस खेलका आनन्द लिया जा सकेगा. यह सब तो आप धामधनी जानते ही हैं.

ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के ।
अरस वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए ॥ ४१

यह भी आप अपनी अङ्गनाओंके लिए मुझसे कहलवा रहे हैं. यह कहनेकी इच्छा भी आप मेरी पर-आत्माके हृदयमें पहले ही उत्पन्न करवा कर मुझसे यहाँ कहलवाते हैं.

असल हमारी अरस में, ताए ख्वाब देखावत तुम ।
जैसा उत ओ देखत, तैसा करत इत हम ॥ ४२

हमारा मूलस्वरूप (परात्मा) तो परमधाममें है आप उसको ही यह स्वप्न जगत दिखा रहे हैं. पर आत्मा वहाँ जैसा देखती है हम इस नश्वर तनसे यहाँ वैसा ही करते हैं.

इन विध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए ।
मैं तो इत नाहीं कितहूं, इत उत किया हक का होए ॥ ४३

इसीलिए हम पर कोई भी दोष आरोपित नहीं होता. मेरा तो यहाँ पर कहीं कोई अस्तित्व ही नहीं है, यहाँ (संसारमें) तथा वहाँ (परमधाममें) सर्वत्र आपका करवाया हुआ ही होता है.

भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम ।
ताथें खुदी मैं ले खडी, झूठे खेल में आतम ॥ ४४

हे धनी ! आपने ही हमें अपने स्वरूपकी, परमधामकी तथा अपने धनीकी विस्मृति करवा दी है. इसीलिए इस नश्वर खेलमें आकर यह आत्मा नश्वर देहको ही स्वयं मानने लगी है.

आप छिपाया तुम हम सों, झूठे खेल में डार ।
फेर कर तुम खडी करी, कर के गुन्हेगार ॥ ४५

हे धनी ! इस स्वप्नवत् संसारमें हमें भेजकर आपने अपना स्वरूप छिपा लिया. फिर तारतमज्ञानसे जागृत कर हमें अपने दोषसे अवगत करवाया एवं दोषी सिद्ध करते हुए भी हमें अपने चरणोंमें खड़ा किया.

फेर तुम हमको अकल दई, मैं खुदी पकडी सोए ।
जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए ॥ ४६

पुनः आपने हमें मायावी बुद्धि दी जिससे हमने वही भौतिक अहंभाव (देहाध्यास) ग्रहण किया. इस संसारमें जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है.

आप भी भेष बदल के, आए अपना दिया इलम ।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान ना सके हम ॥ ४७

आपने पुनः सद्‌गुरुके रूपमें (वेश बदलकर) आकर हमें अपना ज्ञान (तारतमज्ञान) दिया. आपने परमधामकी सभी बातें समझाईं परन्तु हम आपको पहचान न सकीं.

इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल ।
तुम रोए लर खीज कह्या, तो भी रही ना मूल अकल ॥ ४८

इसमें भी हमारे सिर पर दोषारोपण हुआ कि हमें अपने मूल घरका स्मरण नहीं हुआ. आपने रोकर, झगड़कर तथा क्रुद्ध होकर भी हमें समझानेका प्रयत्न किया तब भी हममें जागृत बुद्धि नहीं आई.

यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर ।
हम कछू ना कर सके, तो भी खबर लई हकें फेर ॥ ४९

इस प्रकार हमारे सिर पर (भूल जानेके) अनेक प्रकारके दोष आरोपित हुए. हम संसारमें आकर कुछ भी श्रेष्ठकार्य नहीं कर सकीं तथापि धामधनीने सद्‌गुरुके रूपमें आकर हमारी सुधि ली.

कै सुख हमको अरस के, भांत भांत दिए अपार ।
तो भी नींद हमारी ना गई, इत भी हुए गुन्हेगार ॥ ५०

सद्‌गुरुने आकर हमें परमधामके भाँति-भाँतिके असंख्य सुख प्रदान किए तथापि हमारी अज्ञाननिद्रा दूर नहीं हुई. यहाँ भी हम अपराधी सिद्ध हुईं.

कर मनसा बाचा करमना, सब अंगों कर हेत ।
केहे केहे हारे हम सों, पर मैं न हुई सावचेत ॥ ५१

सद्‌गुरुधनीने हमें मन, वचन, कर्म तथा हृदयसे स्नेहपूर्वक समझाया. वे कह-कहकर थक गए तथापि मैं सचेत नहीं हुई.

यों कै गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल ।
कै देखाए गुन अपने, ताको तौल ना मोल ॥ ५२

इस प्रकारके अनेक अपराधोंकी मैं कैसे गणना करूँ ? सर्वत्र मैं भूल ही

करती गई. तथापि धामधनीने कृपा पूर्वक हम पर अनेक उपकार (गुण) किए जिनका निरूपण तथा मूल्याङ्कन नहीं हो सकता.

सो गुन देखे मैं नजरों, जिनको नहीं सुमार ।
तो भी पेहेचान न हुई, ना छूटी नींद बिकार ॥ ५३

उन उपकारोंको मैंने अपनी आँखोंसे देखा जिनका कोई पारावार ही नहीं है. तथापि मुझे पहचान नहीं हुई और अज्ञानरूपी नींद तथा मेरे मनोविकार नहीं छूटे.

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान ।
सो पढ्या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान ॥ ५४

फिर सद्गुरुने अन्तर्धान होकर मेरे पास कुरान भिजवाया. मैंने उसे भलीभाँति पढ़ा और उसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त की.

सो कुंजी दई हाथ मेरे, कोई खोले ना मुझ बिन ।
सक्ति नहीं त्रैलोक को, ना कछू सक्ति त्रैगुन ॥ ५५

सद्गुरुने ही मुझे सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्यको स्पष्ट करनेकी कुञ्जी स्वरूप वह तारतम ज्ञान दिया. मेरे अतिरिक्त किसीने भी वे रहस्य स्पष्ट नहीं किए. यहाँ तक कि तीनों लोकोंके प्राणियों तथा त्रिगुणाधिपति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में भी वह क्षमता नहीं है.

इन विध गुन केते कहूं, कै देखे मैं नजर ।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर ॥ ५६

सद्गुरु धनीके इन उपकारोंको मैं कहाँ तक कहूँ ? ऐसे अनेक उपकार मैंने अपने आँखोंसे देखे हैं. उन्होंने मेरे द्वारा ही ये रहस्य स्पष्ट करवाकर संसारमें ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैला दिया.

कै लिखी इसारतें अरस की, कै रमूजें अनेक ।
पेहेले पढाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक ॥ ५७

कुरानमें भी परमधामके रहस्योंके विषयमें अनेक सङ्केत दिए गए हैं. सद्गुरुने

मुझे इस ग्रन्थको इसलिए पहले पढ़ाया कि एक मात्र मैं ही उन रहस्योंको स्पष्ट करूँ.

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम ।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम ॥ ५८

महामति कहते हैं, धामधनीकी 'मैं' ने ही कुरान आदि धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट किया है. अन्यथा चौदह लोकोंके सभी लोग क्यों न मिल जाएँ किन्तु परमात्माके वचनोंका गूढ़ रहस्य कौन स्पष्ट कर सकता है ?

प्रकरण ४ चौपाई २०९

यों कै देखाई माया, और कै विध कराई पेहेचान ।
कै विध बदली मजलें, कै पुराए साख निसान ॥ १

इस प्रकार परब्रह्म परमात्माने मायाके विभिन्न खेल दिखाए और उनसे छुटने (मुक्त होने) के लिए अनेक प्रकारसे पहचान भी करवाई. व्रज, रास एवं जागनीकी विभिन्न परिस्थितियोंको भी बदला तथा विभिन्न धर्मग्रन्थोंकी साक्षियाँ भी दिलाई.

हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख ।
इन झूठे खेलमें बैठाए के, कै दिए कायम सुख ॥ २

परमात्माकी लीलाएँ अनेक हैं, इस जिह्वासे उनका वर्णन नहीं हो सकता. इस नश्वर खेलमें बैठकर भी उन्होंने हमें परमधामके अनेक सुखोंका अनुभव करवाया.

मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब ।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया ना सिर पर तब ॥ ३

मैं पहले सद्गुरुसे सुने हुए उपदेश ही दूसरोंको देती रही और मायाके सभी कार्य भी करती गई. उस समय मैंने सद्गुरुके एक भी उपदेशको शिरोधार्य कर जीवनमें नहीं उतारा.

अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर ।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड दुनी ले अरस नजर ॥ ४

अब तो सद्‌गुरुके उपदेशके अनुरूप आचरण करनेका समय आ गया. अज्ञानकी रात्रि मिट गई और ज्ञानके प्रभातका उदय हुआ. अब वे उपदेश आचरणके द्वारा चरितार्थ होना चाहते हैं इसलिए संसारसे दृष्टि हटाकर परमधामकी ओर लगा लूँ.

अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे ।
जो होवे असल अरस की, सो फैल ले हाल देखाए ॥ ५

अब आचरण करनेका समय आ गया है, मेरी आत्मा भी सद्‌गुरुके वचनोंको जीवनमें उतारना चाहती है. इसलिए जो परमधामकी आत्माएँ हैं वे अपने आचरण द्वारा मनोभाव (मनोदशा) को बदलें (परमधामकी ओर लगाएँ).

केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज ।
हक अरस नजर में लेय के, उडाए दियो दुनी बोझ ॥ ६

अज्ञानकी रात्रिमें बहुत कुछ कहा गया, अब तो आचरणके द्वारा मनस्थितिको बदलनेका समय आ गया है. इसलिए अब परमधाम तथा परब्रह्म परमात्माकी ओर दृष्टि रखकर संसारके भारको उतार दो (मुक्त हो जाओ).

जो हकें केहेलाया सो कह्या, इत मैं बीच कहूं नाहें ।
फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें ॥ ७

धामधनीने जैसा कहलाया है वही मैंने कहा है, इसमें मेरा अहंभाव कुछ भी नहीं है. मेरा आचरण तथा मनस्थिति सभी धामधनीके आदेशके अधीन हैं, उन्होंने ही तारतम ज्ञान देकर मेरे मनके सभी सन्देहोंका निराकरण कर दिया है.

इलम दिया हकें अपना, और दई असल अकल ।
जोस इसक सब हक के, सब उमत करी निरमल ॥ ८

धामधनीने अपना ज्ञान (तारतमज्ञान) देकर मुझे जागृत बुद्धि प्रदान की. यह जोश और प्रेम भी उनका ही है. इसीके द्वारा उन्होंने सभी ब्रह्मात्माओंको निर्मल बना दिया.

इन जडथें तब मैं निकसी, जब यकीन दिया आप ।
सकें सारी भांन के, तुम साहेब किया मिलाप ॥ ९

मैं इस जड़वत् संसारके बन्धनोंसे तभी मुक्त हो सकी जब धनीने स्वयं मुझे विश्वास दिलाया. मेरी सभी शङ्काओंका निवारण कर आप ही (सद्गुरुके रूपमें) मुझसे आ मिले.

ए मैं काढी तुम इन विध, इन मैं में न आवे सक ।
यों काढी खुदी मैं साथ की, हकें किए आप माफक ॥ १०

इस प्रकार आपने मेरे भौतिक अहंभावको दूर कर मुझे आत्मभावमें स्थित कर दिया अब इस आत्मिक अहंभावके जागृत होने पर मुझमें कोई सन्देह शेष नहीं रहा. इस प्रकार सुन्दरसाथके भी भौतिक अहंको दूर कर आपने स्वामीके अनुरूप कार्य किया है.

हुकमें हाथ पकड के, दिया फैल हाल बेसक ।
तब जोस इसक देखाइया, जासों पाया हक ॥ ११

धामधनीके आदेशसे ही आपने मेरा हाथ पकड़कर निस्सन्देह मेरे मनोभाव तथा आचरणमें परिवर्तन कर दिया. पश्चात् आवेश तथा प्रेम प्रदान किया जिससे मैं अपने धनीको पा सकी.

जोस हाल और इसक, ए आवे न फैल हाल बिन ।
सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस न पाए किन ॥ १२

ऐसे आवेश, उत्कृष्ट मनोभाव तथा प्रेम, भौतिक व्यवहार एवं मनोभावमें परिवर्तन किए बिना प्राप्त नहीं होते. इस प्रकार परमात्मपरक व्यवहार तथा मनोभाव सद्गुरुकी कृपा बिना किसीको भी प्राप्त नहीं हुए हैं.

कलाम हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक ।
इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक ॥ १३

परमात्माके द्वारा कहे गए (कुरानके) वचनोंका मैं विवेचन कर रही हूँ. इन्हीं वचनोंसे सांसारिक जीवोंने भी एक परमात्माका रहस्य समझ कर अखण्ड सुख प्राप्त किया.

जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्तका द्वार ।
सो केहेनी छुडाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार ॥ १४

तारतमज्ञानरूपी जिस कुञ्जीसे मुक्तिस्थलोंके द्वार खुल गए हैं, अब धामधनीके आदेशने मात्र उपदेशको महत्त्व न देकर आचरण (व्यवहार) में चरितार्थ करना ही साररूप बताया.

ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक ।
सो छुडाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक ॥ १५

धर्मग्रन्थोंका यह ज्ञान ही इतना महत्त्वपूर्ण है कि इससे चौदह लोकोंके जीवोंको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ. जिन वचनोंके द्वारा संसारके जीवोंको अखण्डका बोध हुआ है, उन उपदेशोंको छुटाकर धामधनीने उनसे भी अधिक महत्त्व आचरणको दिया.

कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें ।
जोस इसक हक मिलावहीं, सो फैल हाल के माहें ॥ १६

धामधनीके आदेशका तात्पर्य (कथन) यही है कि आचरणके समक्ष मात्र कथनका कोई महत्त्व नहीं है. सद् आचरण एवं शुद्ध मनोभाव होने पर ही परमात्मा उसके अन्तर्गत अपना आवेश एवं प्रेमको सम्मिलित कर देते हैं.

दुनियां केहेनी केहेत है, सो डूबत मैं सागर ।
मैं लेहेरें मेर समान में, कोई निकस न पावे बका घर ॥ १७

संसारके जीव मात्र कथन ही करते हैं, इसीलिए अहङ्कारके कारण वे भवसागरमें डूब जाते हैं. पर्वतके समान बने हुए अहंभावके तरङ्गोंसे बाहर निकल कर कोई भी व्यक्ति अखण्ड घरको प्राप्त नहीं कर सकता.

ए खेल मोहोरे कथ कथ गए, सो जले खुदी बेखबर ।
आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर ॥ १८

इस खेलके खिलौनेके समान संसारके जीव मात्र कथन ही करते हुए चले गए. बेसुधिके कारण वे अपने अहंभावमें ही जलते रह गए. वस्तुतः अपने अहंभावके तरङ्गोंमें ही वे वारंवार गोते खाते रहे हैं.

एही इनों का किबला, छोडे नाहीं ख्याल ।
मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल ॥ १९

यह अहंभाव ही उनका आराध्य है जिसे वे त्याग नहीं सकते. ऐसे लोग सदैव 'मैं' 'मैं' करते रहते हैं तथापि उनका अहंभाव कभी कम नहीं होता. इनके आचरण (कर्म) तथा मनोभाव ही ऐसे हैं.

अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर ।
ए जो नाबूद कछुए नहीं, तो मैं कहत क्यों कर ॥ २०

जादूगरके खेलके कबूतरोंके समान अस्तित्वहीन सांसारिक जीवोंके अहंभावका महत्त्व ही क्या है ? जिनका स्वयं ही अस्तित्व नहीं है वे अपना अहंभाव कैसे व्यक्त कर सकते हैं ?

ए खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन ।
सो देख के उडावसी, जिन विध झूठ सुपन ॥ २१

हे ब्रह्मात्माओ ! वस्तुतः इस नश्वर खेलकी रचना तुम्हारे लिए ही की गई है और तुम स्वयं परमधाममें ही बैठकर इसे देख रही हो. इसे देखकर जब तुम जागृत हो जाओगी तब यह नश्वर खेल उसी प्रकार उड़ जाएगा जैसे नींदसे जागृत होने पर स्वप्न उड़ जाता है.

जो रूहें होए अरस की, सो तो तले हुकम ।
जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम ॥ २२

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ सदैव धामधनीके आदेशके अधीन रहती हैं क्योंकि परमधाममें बैठे हुए धामधनी जैसा चाहते हैं वैसे ही इन्हें खेला रहे हैं.

इन में भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम ।
फैल हाल इसक लेवहीं, तब हक की मैं आतम ॥ २३

यदि ये ब्रह्मात्माएँ मूल (तारतम) ज्ञानका रहस्य समझ लें तो वस्तुतः इनमें अहंभाव (मैं) का अस्तित्व ही नहीं रहेगा अर्थात् ये स्वयंको धामधनीसे भिन्न नहीं समझेंगी. वस्तुतः सत् आचरण (कर्म), शुद्ध मनोभाव तथा प्रेमको ग्रहण करने पर उनमें 'मैं धामधनीकी ही अङ्गना हूँ' ऐसा भाव बना रहता है.

तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल ।
सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल ॥ २४

उपर्युक्त आचरणके होते हुए ब्रह्मात्माओंको किसी भी प्रकारका दोष नहीं लगेगा. ब्रह्मात्माएँ अपनी मनोदशा (मनस्थिति) बदल लें इस हेतु इस प्रकारके वचन पहले ही कहे गए हैं.

इन विध मैं मरत है, बैठे तले कदम ।
जोस इसक आवे हाल में, लेय के हक इलम ॥ २५

'हम धामधनीके चरणोंमें ही बैठी हैं तथा उनकी ही अङ्गनाएँ हैं' ऐसा समझने पर भौतिक अहंभाव (देहाध्यास) मिट जाता है. इस प्रकार तारतम ज्ञानका रहस्य ग्रहण करने पर अपनी मनस्थिति धनीके जोश तथा प्रेमसे परिपूर्ण होती है.

जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर वतन ।
सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढी बकसीस इन ॥ २६

जिस प्रेमकी सुधि वैकुण्ठ (मलकूत) तथा अक्षरधाम (नूर वतन) में भी नहीं है, धामधनीने उसे ब्रह्मात्माओंके भौतिक अहंभाव 'मैं' को मिटाकर उपहार (बकसीस) के रूपमें उन्हें प्रदान किया, जिससे उनकी हार्दिक मनोकामनाएँ पूर्ण हुईं.

इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढी जाए ।
सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे को देत उडाए ॥ २७

धामधनीके बिना इस भौतिक अहंभाव (मैं) को कभी भी निकाला नहीं जा सकता. धामधनीने मुझ पर ऐसी कृपा की कि मैंने इस अहंभावको धूलीके कणकी भाँति उड़ा दिया.

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए ।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए ॥ २८

अन्यथा यह अहंभाव (मैं) इतना सरल नहीं कि अन्य प्रयत्नोंसे निकल जाए. त्रिगुणाधिपति (ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश) भी प्रयत्न करते हुए थक गए वस्तुतः कोई भी इसे संसारसे मोड़कर परमात्माकी ओर लगा न सका.

ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल ।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौडाए थके अकल ॥ २९

इन चौदह लोकोंके प्राणियोंमें-से किसीने भी इस अहंभाव (मैं) की शक्तिको नहीं पहचाना. अनेक लोग अपनी बुद्धि दौड़ाते हुए थक गए किन्तु कोई भी इस अहंभावका पार नहीं पा सका.

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए ।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक बकसीस होए ॥ ३०

संसारके सभी लोग इसी अहंभाव (मैंपन) में डूब गए हैं, उनमें-से कोई भी इसका पार नहीं पा सका. वस्तुतः वही इसका पार पा सकता है जिसे धामधनीकी अपार कृपा प्राप्त हुई हो.

ए बानी मैं मारेय की, सुनी होए मोमिन ।
दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन ॥ ३१

अहंभाव (मैं) को मिटाने वाली यह वाणी जिन ब्रह्मात्माओंने सुनी होगी, उनमें अवश्य ही सांसारिक अहंभाव (मैं) कभी जीवित नहीं रहेगा.

ए मैं इन गिरोह की, काढें एक धनी धाम ।
ए मरे पेड से हुकमें, ले साहेब के कलाम ॥ ३२

ब्रह्मात्माओंके इस अहंभाव (मैं) को केवल धामधनी ही मिटा (बाहर निकाल) सकते हैं. वस्तुतः धामधनीके वचनोंको (ब्रह्मज्ञान-तारतमज्ञान) ग्रहण करने पर ही उनके आदेशसे यह अहंभाव मूलतः मिट सकता है.

इलम खुदाई लुदंनी, बकसीस असल रोसन ।
जोस इसक ले बंदगी, निसबत असल वतन ॥ ३३

यह प्रकाशमय ब्रह्मज्ञान धामधनीका ही वरदान स्वरूप है. इसलिए उनके आवेश तथा प्रेमके साथ की गई प्रार्थनासे ही परमधामके मूल सम्बन्धकी पहचान होगी.

अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढाए ।
ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब मैं देऊं उडाए ॥ ३४

हे आत्मा ! अब तू इस प्रकार परब्रह्म परमात्माका स्मरण कर तथा उनके आदेशको शिरोधार्य कर. ऐसा निश्चय कर कि धामधनीके अतिरिक्त इस भौतिक अहं (मैं) को मैं पूर्णतः उड़ा दूँ.

इत मैं नेक न आवहीं, खडी हुकम तले जे ।
ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत ए ॥ ३५

जो आत्माएँ धामधनीके आदेशके अधीन रहतीं हैं, उनमें भौतिक अहंभाव (मैं) लेशमात्र भी नहीं होता. अतः हे आत्मा ! परमात्माकी 'मैं' तथा उनकी ही कृपा प्राप्त कर तुम निश्चिन्त हो जाओ, यही तो सद्गुरुका निर्देशन है.

ए सुनियो खास उमत, इन मैं को काढूं जड मूल ।
ले साहेदी लुदंनीय से, कौल ईसा इमाम रसूल ॥ ३६

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, अब मैं ईसा, इमाम एवं रसूलके वचनोंकी साक्षी ग्रहण कर इस अहं (मैं) को जड़मूलसे ही बाहर निकाल देती हूँ.

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल ।
जैसा देखत सुपन में, ए जो वरतत इत नकल ॥ ३७

परमधाममें परब्रह्म परमात्माने जैसा आदेश दिया है उसीका प्रभाव ब्रह्मात्माओंकी पर-आत्मा पर पड़ा है. परआत्मा स्वप्नमें जैसा देखती है उसीके अनुरूप इस स्वप्नवत् संसारमें आचरण होता है.

ए करो तेहेकीक बिचार के, जो होए अरस उमत ।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत ॥ ३८

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ विचार पूर्वक यह निश्चय कर लें, परब्रह्म परमात्मा परमधाममें पर-आत्माको जैसे जागृत करते (निर्देशन देते) हैं, उसीके अनुरूप उनके इन नश्वर तनकी स्थिति (आचरण) बदलती है.

कहे लुदंनी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत ।
तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत ॥ ३९

तारतमज्ञानसे यह स्पष्ट होता है कि परब्रह्म परमात्मा रङ्गमहलकी प्रथम भूमिका (मूलमिलावा) में बैठाकर अपनी आत्माओंको यह स्वप्नवत् खेल दिखा रहे हैं. इसलिए वे वहाँ जैसा आदेश देते हैं वैसा ही यहाँ होता है.

मोहे दिया लुदंनी रूह अल्ला, सो मैं कह्या बेवरा कर ।
ए किया उमत कारने, जो बिचारो दिल धर ॥ ४०

जो तरातम ज्ञान मुझे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने प्रदान किया उसीके द्वारा मैंने यह विवरण दिया है. वस्तुतः परब्रह्म परमात्माने अपनी आत्माओंके लिए ही यह खेल बनाया है. इस तथ्य पर विचार कर इसे हृदयमें धारण करो.

ए रसूल अरस अजीम से, ले आया रमान ।
मैं जो कह्या तुमें लुदंनी, सो जोड देखो निसान ॥ ४१

रसूल मुहम्मद परमधामसे यह सन्देशपत्र (कुरान) लेकर आए हैं. मैंने तुम्हें जो तारतम ज्ञान दिया है उससे कुरानके सङ्केतोंका मिलान कर देखो.

कहे विध विध की साहेदी, या फुरमान या हदीस ।
और भेजे नामे वसीयत, सो गिरो पर बकसीस ॥ ४२

कुरान अथवा हदीसोंमें ऐसी अनेक साक्षियाँ दी गई हैं. इसके अतिरिक्त अधिकारपत्रों (वसीयतनामें) को भी भिजवाया गया. यह सब ब्रह्मात्माओंके लिए वरदान स्वरूप है.

इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले ।
सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लुदंनी जे ॥ ४३

विभिन्न साक्षियोंको लेकर अवतरित परमात्माके आदेश स्वरूप की तीनों सूरत-बशरी, मलकी एवं हकी यहाँ (मुझमें) एकत्रित हुई हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! इस तारतम ज्ञानसे अन्तरात्माको प्रकाशित कर देखो तभी उक्त रहस्य ज्ञात होगा.

एह करत सब हुकम, ले अवल से आखर ।
इत मैं बीच काहूं में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर ॥ ४४

आरम्भसे लेकर अन्त तक परमात्माका आदेश ही सब कुछ कर रहा है. इसलिए यहाँ पर अहं (मैं) का कोई स्थान ही नहीं है. जो लोग 'मैं कर रहा हूँ' ऐसा अहंभाव रखते हैं वे परमात्मासे विमुख (अविश्वासी) कहलाते हैं.

विचार देखो इमदाए से, ले अपना तारतम ।
अपन सोवत हैं नीद में, खेल खेलावत खसम ॥ ४५

हे ब्रह्मात्माओ ! तारतम ज्ञानके द्वारा आरम्भसे ही विचार कर देखो, हम तो स्वयं नींदमें सो रहीं हैं और धामधनी हमें स्वप्नमें यह खेल खेला रहे हैं.

ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल ।
सो अब हीं देत उडाए के, होसी हांसी बडी खुसाल ॥ ४६

जिस खेलको तुम स्वप्नावस्थामें देख रही हो उसे स्वयं धामधनी तुम्हें दिखा रहे हैं, वे उसे तत्काल उड़ा भी देंगे. उस समय भारी प्रसन्नताके साथ तुम्हारी हँसी होगी.

अब मैं काहूं में नहीं, ए जो लेत सिर मैं ।
ए हांसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तैं ॥ ४७

जिस अहंभाव (मैं) के वशीभूत होकर लोग फिरते हैं अब उसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहा. आत्माएँ भी व्यर्थ ही 'मैं' और 'तू' कर रहीं हैं जिसके कारण उनकी हँसी होगी.

ताथें जो मैं हक की, रेहेत तले हुकम ।
मैं दुनी की मार के, रही देख खेल खसम ॥ ४८

इसलिए धामधनीकी 'मैं' को स्वीकार करनेवाली आत्माएँ सर्वदा उनके ही आदेशको शिरोधार्य करती हुई कार्य करतीं हैं. वे तो भौतिक 'मैं' को मिटाकर द्रष्टाभावसे अपने धनी द्वारा दिखाया गया खेल देखतीं हैं.

ताथें मैं इन धनी की, करत हक का काम ।
ए खेल खुसाली लेय के, जाग बैठे इत धाम ॥ ४९

इसलिए धामधनीकी 'मैं' को स्वीकार करनेवाली आत्माएँ खेलमें भी अपने स्वामीका ही कार्य करतीं हैं. ऐसी आत्माएँ मायाके खेलका भी आनन्द लेतीं हैं और जागृत होने पर स्वयंको परमधाममें ही पातीं हैं.

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत ।
ए मैं बका हक की, करें हिदायत महामत ॥ ५०

परमात्माके साथ सम्बन्धकी पहचान होने पर ही आत्माएँ ज्ञानका यह सम्पूर्ण रहस्य (प्रकाश) ग्रहण करती हैं. जिसका उपदेश महामति दे रहे हैं. वह 'मैं' वस्तुतः धनी (परमात्मा) की ही है और स्थायी है.

पंच रोसनी का मंगलाचरन

गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत ।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह अल्ला ल्याए न्यामत ॥ १

प्रियतम परमात्माकी परमधाम (मूलमिलावा) की लीलाओंका रहस्य अति गूढ़ है. उन्होंने यह रहस्य मेरे लिए ही भेजा है. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी यह अलौकिक सम्पदा लेकर आए हैं.

रूह अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान ।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान ॥ २

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ब्रह्मात्माओंके लिए ही परमधाम (चौथे आसमान) से अवतरित हुए हैं. वे परमधामकी सभी सुधि लेकर आए हैं जिनका उल्लेख कुरानमें साङ्केतिक रूपसे हुआ है.

इलम लुदंनी हक का, कुंजी बका की जे ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए ॥ ३

परब्रह्म परमात्माका यह ज्ञान (तारतमज्ञान) वस्तुतः परमधामकी कुञ्जी है.

ऐसा ज्ञान प्रदान कर सद्गुरुने मुझ पर अति कृपा की एवं अज्ञानके आवरणोंको दूर कर दिया.

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर ।
अरवाहें जेती अरस की, तिन बुलावन खातर ॥ ४

उन्होंने मुझसे मिलकर कहा, मैं ब्रह्मात्माओंके लिए आया हूँ परमधामकी उन आत्माओंको बुलानेके लिए ही मेरा यहाँ पर आना हुआ है.

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अरस अजीम सों ।
कुंजी देत हों तुझ को, पट खोल दे सबकों ॥ ५

उन्होंने मुझसे पुनः कहा, ''तुम्हारी आत्मा परमधामसे आई है. मैं तुम्हें तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी देता हूँ तुम इससे सभीके लिए अखण्डके द्वार खोल दो.''

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत कदर के माहें ।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जाहें ॥ ६

महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में परमधामकी अखण्ड सम्पदा (तारतमज्ञान) लेकर सद्गुरु धनी पधारे और उन्होंने मुझे आदेश दिया कि ज्ञानका प्रभात कर ब्रह्मात्माओंको अखण्ड घर ले आओ.

अरस चौदे तबकों, नजर न आवत किन ।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन ॥ ७

इन चौदह लोकोंमें परमात्मा (धनी) का धाम किसीकी भी दृष्टिमें नहीं आया, सद्गुरुने उस अखण्ड धामको प्राणनलीसे भी निकट दिखा दिया.

एह इलम जिन आइया, सेहेरग से नजीक ताए ।
ए पट नजरों खोल के, लिए अरस में बैठाए ॥ ८

यह तारतमज्ञान जिसे प्राप्त हुआ उसके लिए परमधामप्राण नलीसे भी निकट है. इस प्रकार ज्ञानकी दृष्टिसे अज्ञानके आवरणोंको दूर कर धामधनीने ब्रह्मात्माओंको परमधाममें जागृत कर दिया.

ए नेक हकीकत केहेत हों, है बात बिना हिसाब ।
सो जाने जो लेवे कुंजी, खोले माएने मगज किताब ॥ ९

मैंने संक्षेपमें ही यह वास्तविकता कही है, वस्तुतः यह तथ्य अवर्णनीय है. इसे वही जान सकता है जो तारतमज्ञानरूपी कुञ्जीके द्वारा धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करता है.

सब किताबन की, जब पाई हकीकत ।
तब तिन सब जाहेर हुई, महंमद हक मारफत ॥ १०

तारतम ज्ञानके द्वारा जब सभी धर्मग्रन्थोंका रहस्य यथार्थ रूपसे जान लिया, तब रसूल मुहम्मद द्वारा उल्लेखित परब्रह्म परमात्माकी पहचान भी स्पष्ट हो गई.

एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार ।
जो पट कानों ना सुने, सो खोले नूर के पार ॥ ११

तारतमज्ञानरूपी यह सम्पदा ज्यों ही प्राप्त हुई तब पारके सभी द्वार खुल गए. जिस अखण्ड धामके विषयमें अभी तक सुना भी नहीं था, उसके द्वार भी इस तारतम ज्ञानने खोल दिए.

बादल रूह अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर ।
अरस बका का नासूत में, हुआ सब जहूर ॥ १२

बादलोंसे वर्षाकी भाँति सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजका ब्रह्मज्ञान अब बरसने लगा. इस प्रकार इस नश्वर जगतमें भी अखण्ड परमधामका प्रकाश फैल गया.

जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अवल ।
बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल ॥ १३

जबसे सृष्टिकी रचना हुई है, आरम्भसे लेकर अभी तक अखण्ड धामके द्वार किसीने भी नहीं खोले वैसे तो ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बनकर मिट भी गए हैं.

अव्वल पैदा होए के, दुनी हो जात फना ।
तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड जात सुपना ॥ १४

आदिकालसे ही यह सृष्टि उत्पन्न होकर लय हो जाती है. प्रलय होने पर इस सृष्टिमें कुछ भी शेष नहीं रहता, स्वप्नकी भाँति यह सब उड़ जाता है.

ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात ।
एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका की बात ॥ १५

इस प्रकार अनेक ब्रह्माण्ड बने और मिट भी गए. लय होने पर इनका अस्तित्व लेशमात्र भी शेष नहीं रहता, इसलिए इस सृष्टिमें किसीने भी अखण्ड धामकी चर्चा नहीं की.

दौडे कई पैगंमर, कई तीथंकर अवतार ।
अवल से आखर लग, किन खोल्या न बका द्वार ॥ १६

यहाँ पर अनेकों पैगम्बरों, तीर्थङ्करों तथा अवतारी पुरुषोंने खोज की परन्तु सृष्टिके आरम्भसे लेकर अन्त तक कोई भी अखण्डके द्वार नहीं खोल सका.

चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ ।
तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ ॥ १७

चौदह लोकोंमें किसीने भी अखण्ड धामके विषयमें एक शब्दका भी उच्चारण नहीं किया. जब उन्हें अखण्ड धामकी दिशा ही नहीं मिली तो वे परमात्माके स्वरूपको कैसे जान सकते ?

जो हक पैदा होए नासूत में, तो होय सबे हैयात ।
इलम अपना देय के, करें जाहेर बका विसात ॥ १८

यदि इस नश्वर जगतमें परमात्मा अवतरित हुए होते तो सभीको अखण्ड सुखका अनुभव हो गया होता. क्योंकि वे तो अपना ज्ञान देकर अखण्ड घरकी सम्पदाको भी प्रकट कर देते.

सो इलम रूह अल्ला, ले आया हक का ।
सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका ॥ १९

परमात्माका वह दिव्यज्ञान (तारतमज्ञान) सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज ले

आए हैं. वे इसके प्रतापसे परमात्माको प्राणनलीसे भी अति निकट दिखा कर ब्रह्मात्माओंको अखण्ड परमधाममें ही बैठे हुए अनुभव करवाते हैं.

ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक ॥ २०

हे ब्रह्मात्माओ ! यह बात सुनो, मैं अपनी आपबीती समझाऊँ. सद्गुरुने मुझ पर अपार कृपा कर यह सन्देह निवारक ब्रह्मज्ञान दिया है.

कौल अलस्तो बे रब्ब का, किया रूहों सों जब ।
हक इलम से देखिए, सोई साइत है अब ॥ २१

जब पूर्णब्रह्म परमात्माने अपनी आत्माओंको इस जगतमें भेजते हुए "क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ ?" ऐसा कहकर अपने स्वामित्वके वचन दिए थे, वस्तुतः इस तारतम ज्ञानसे देखो, अभी भी वही घड़ी है.

दुनियां दिल जो मजाजी, कह्या सो कछुए नाहें ।
और दिल हकीकी मोमिन, हक अरस कह्या इनों माहें ॥ २२

संसारके लोगोंको दिल मजाजी अर्थात् हृदयमें भौतिक वस्तुओंको धारण करने वाले कहा है, जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, जबकि ब्रह्मात्माएँ दिल हकीकी (सत्य हृदया) कहलाती हैं. वस्तुतः इनका हृदय ही परमात्माका धाम कहलाया है.

इलम हक और दुनी का, कही जाए न तफावत ।
ए सुकन सुन रूह मोमिनों, आवसी अरस लज्जत ॥ २३

ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) और लौकिक ज्ञानका अन्तर बताया नहीं जा सकता (इसकी तुलना ही नहीं हो सकती). तारतमज्ञानके वचनोंको सुनते ही ब्रह्मात्माओंको तो परमधामका आनन्द प्राप्त होता है.

बीच बका के रूहन सों, हकें करी खिलवत ।
सो साथ रूह अल्लाह के, भेजे संदेस इत ॥ २४

परमधाम (मूलमिलावा) में बैठकर धामधनीने ब्रह्मात्माओंके साथ जो चर्चा की थी उसीका सन्देश उन्होंने सद्गुरुके साथ इस नश्वर जगतमें भेजा.

रूह अल्ला आए अरस से, मुझ सों किया मिलाप ।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप ॥ २५

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज पमरधामसे अवतरित हुए हैं. उन्होंने मुझे दर्शन देकर कहा, 'मैं तुम्हारे लिए आया हूँ, स्वयं परब्रह्म परमात्माने मुझे भेजा है'.

ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन ।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूं आगे मोमिन ॥ २६

धामधनीके हृदयकी सम्पदा स्वरूप इस तारतम ज्ञानको वही (सद्गुरु ही) समझ सकते हैं जिन्होंने मुझे यह प्रदान किया है अथवा मेरी आत्मा ही इसे जानती है. अब यही तारतम ज्ञान मैं ब्रह्मात्माओंके समक्ष स्पष्ट करता हूँ.

ए न्यामत वाहेदत की, हक के दिल की बात ।
और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात ॥ २७

अखण्ड धामकी यह सम्पदा वस्तुतः परब्रह्मके हृदयकी बातें हैं. इसलिए परब्रह्म परमात्माकी अङ्गनाओंके अतिरिक्त इस रहस्यको कौन ग्रहण कर सकता है ?

रूह अल्ला कहे अरस से, तेरी रूह आई उतर ।
मैं दई तोहे बका न्यामत, अव्वल से आखर ॥ २८

श्यामास्वरूप सद्गुरुने मुझे कहा 'तेरी आत्मा परमधामसे अवतरित हुई है. इसलिए मैंने तुझे अखण्ड सम्पदा (तारतम) प्रदान की है. जिससे आदिसे लेकर अन्त तककी समझ तुझे प्राप्त होगी'.

बादल बरस्या रूहअल्ला, ए बूंदे लई जो तिन ।
और कोई ना ले सके, बिना अरस रूहन ॥ २९

सद्गुरुने बादलकी भाँति तारतम ज्ञानकी वर्षा की परन्तु ज्ञानकी उन बूँदोंको ब्रह्मात्माएँ ही ग्रहण कर सकी. ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी यह ज्ञान न ले सका.

जिन पिया मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें ।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें ॥ ३०

जिन्होंने तारतमज्ञान रूपी अमृत रसका पान किया उनकी मस्ती संसारमें छिपी नहीं रहती. ब्रह्मात्माओंकी वह मस्ती अब चौदह लोकोंमें प्रकट हो गई है.

हकें न छोडे अव्वल से, अपना इसक दिल ल्याए ।
आप इसक न छोडी निसबत, पर मैं गई भुलाए ॥ ३१

परब्रह्मने तो पहलेसे ही हम ब्रह्मात्माओंको कभी भी अलग नहीं छोड़ा है वे तो सदैव हृदयमें प्रेम ही रखते हैं. उन्होंने अपने प्रेम व सम्बन्धको कभी नहीं छोड़ा परन्तु मैं ही मायावश होकर उस प्रेमको भूल गई हूँ.

जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए ।
मैं परी बीच फरेब के, मोह थके जगाए जगाए ॥ ३२

उन्होंने तो सद्गुरुके रूपमें यहाँ आकर अनेक उपेदश दिए, इस प्रकार उनके जगाने पर भी मैं जागृत न हो सकी. मैं तो झूठी मायामें ही पड़ी रही, वे मुझे जगा-जगाकर थक गए.

इसक न आवे पेहेचान बिना, सो मोकों दई पेहेचान ।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान ॥ ३३

परमात्माके साथके सम्बन्धकी पहचानके बिना उनका प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता. सद्गुरुने मुझे वह पहचान भी करवाई. धामधनीकी अङ्गना समझकर उन्होंने धनीके हृदयकी बातें भी बताईं.

मैं ना कछू जानी पेहेचान, मुझ पर करी मेहेनत ।
मैं इसक न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत ॥ ३४

सद्गुरुने मुझे जागृत करनेके लिए बड़ा परिश्रम किया तथापि मुझे उनकी लेशमात्र भी पहचान न हो सकी. मैं न उनके प्रेमको ही पहचान सकी और न ही उनके साथके सम्बन्धको. अन्यथा उन्होंने तो मुझे परमधामकी अपार सम्पदा प्रदान की थी.

इसक पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भुलाए ।
हकें इसक अपना, आखर लों निवाहे ॥ ३५

मुझे धनीका प्रेम तथा उनके साथके सम्बन्धकी पहचान कुछ भी नहीं रही, इस मायाने सब कुछ भुला दिया. धामधनी तो अन्त तक अपना प्रेम निभाते रहे.

ए सुख सबदातीत के, क्यों कर आवें जुबान ।
बाले थें बुढापन लग, मेरे सिर पर खडे सुभान ॥ ३६

शब्दातीत परब्रह्म परमात्माके इन सुखोंका वर्णन इस नश्वर जिह्वासे कैसे हो सकता है ? वे तो बाल्यावस्थासे वृद्धावस्था पर्यन्त मेरे सिर पर ही रहे हैं अर्थात् उन्होंने मुझे सदैव अपने संरक्षणमें रखा है.

तो भी घाव न लग्या अरवाह को, जो देखे अलेखें एहेसान ।
न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान ॥ ३७

इस प्रकारके असंख्य उपकारोंको देखकर भी मेरी आत्माको चोट नहीं लगी. वस्तुतः उनकी ही कृपासे मुझे अखण्ड धामकी सम्पदा (तारतमज्ञान) प्राप्त हुई है और उन्होंने ही आत्माकी पहचान भी करवाई है.

नजर से न काढी मुझे, अव्वल से आज दिन ।
क्यों कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन ॥ ३८

आरम्भसे लेकर अभी तक धामधनीने मुझे अपनी कृपादृष्टिसे दूर नहीं रखा. प्रियतम धनीकी अपार कृपाका वर्णन कैसे हो सकता है जो वे अपनी आत्माओंके प्रति करते रहते हैं.

तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना ।
ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना ॥ ३९

हमारे मूल स्वरूप (पर-आत्मा) तो धामधनीके चरणोंमें ही है. मात्र सुरताने इस संसारमें स्वप्नके शरीर धारण किए हैं. संसारके इन नश्वर शरीरके निकट (हृदयमें) भी धामधनी विराजमान हैं.

नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन ।
तिनको भी हकें न छोडिया, सिर पर रहे रात दिन ॥ ४०

अज्ञानरूपी नींदने हमारे स्वप्नके शरीरको भी बेसुधिमें गोते खिलाए. ऐसे नश्वर तनको भी धामधनीने अलग नहीं छोड़ा, वे रात-दिन हमारी रक्षा करते रहे.

उमर अव्वल से आखर लग, गुजरी सांई संग ।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इसक तरंग ॥ ४१

जीवनके प्रारम्भसे लेकर अन्त तक मेरी आयु धामधनीके साथ (संरक्षणमें) व्यतीत हुई. परन्तु प्रारम्भमें धनीके प्रेम तरङ्गोंको मैं समझ न सकी.

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल ।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल ॥ ४२

परब्रह्म परमात्मा जैसा करना चाहते हैं वे उसे सर्वप्रथम अपने हृदयमें लेते हैं. फिर उनकी इच्छा अद्वैत परमधामकी सभी आत्माओंमें प्रसरित हो जाती है.

एक पातसाही अरस की, और वाहेदत का इसक ।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक ॥ ४३

परमधामका ऐश्वर्य एवं अद्वैत भावका प्रेम ब्रह्मात्माओंको दिखाने (अनुभव करवाने) के लिए धामधनीने सर्वप्रथम अपने हृदयमें विचार किया.

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर ।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर ॥ ४४

परब्रह्मने सर्वप्रथम जो इच्छा अपने हृदयमें धारण की वही इच्छा पुनः अक्षरब्रह्मके हृदयमें उत्पन्न हुई. तत्पश्चात् श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें वह उत्पन्न हुई. इस प्रकार यह नश्वर खेल अस्तित्वमें आया.

वास्ते नूर जलाल के, और हादी रूहन ।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन ॥ ४५

अक्षरब्रह्म, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका मनोरथ पूर्ण करनेके लिए इस

खेलकी रचना हुई है. इस मायाजन्य खेलका विस्तार बहुत बड़ा है, वस्तुतः श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए ही इसकी रचना हुई है.

महामत कहें ऐ मोमिनो, हक साहेबी बुजरक ।
बेसक इलम हक का, और हक का बडा इसक ॥ ४६

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! परब्रह्म परमात्माकी महिमा अपार है. उनका ज्ञान(तारतम ज्ञान) भी सभी सन्देहोंको मिटानेवाला है और उनका प्रेम भी सर्वाधिक महान है.

बेसकी का प्रकरण (निःसन्देहताका प्रकरण)

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अरस के गुझ ॥ १

अद्वैत परमधामका (तारतम) ज्ञान प्रदान कर धामधनीने मुझे निस्सन्देह बना दिया. इस ब्रह्मज्ञानने अक्षरसे भी परे अखण्ड परमधामके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया है.

चौदे तबकों ढूंढ्या, सब रहे दूर से दूर ।
रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर ॥ २

चौदह लोकोंके जीवोंने परमात्माको ढूँढ़नेका प्रयत्न किया तथापि वे परमात्मासे दूर ही रह गए. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा लाए गए तारतम ज्ञानके बिना कोई भी परमात्माके सान्निध्यका अनुभव न कर सका.

कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें ।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका माहें ॥ ३

संसारमें अनेक साधक (विद्वान) हो गए परन्तु किसीने भी अखण्ड धामकी दिशा तक प्राप्त नहीं की. वस्तुतः सद्गुरु प्रदत्त तारतमज्ञान ही आत्माको परमधाम पहुँचा सकता है.

सो साहेदी देवाई महंमद की, सेहेरग से नजीक हक ।
नूर के पार नूर तजल्ला, इलम माहें बैठावे बेसक ॥ ४

इसी ब्रह्मज्ञानने रसूल मुहम्मदकी वह साक्षी भी दिलाई कि परमात्मा प्राणनलीसे भी अति निकट हैं. यह ज्ञान ही निस्सन्देह ब्रह्मात्माओंको अक्षरसे परे अक्षरातीत धाममें बैठा देता है.

गिन तूं सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत ।
मेहेर करी मेहेबूब ने, हकें जान निसबत ॥ ५

हे आत्मा ! अब तू शङ्का रहित होकर उन सुखोंकी गणना कर जिनका उपदेश तारतमज्ञानके द्वारा दिया गया है. प्रियतम परमात्माने अपना सम्बन्ध जानकर तुझ पर इतनी बड़ी कृपा की है.

सक ना तीन उमत में, सक ना खास उमत ।
सक ना उमत फिरस्ते, सक ना कुंन कुदरत ॥ ६

अब तो जीव, ईश्वरी एवं ब्रह्म तीनों सृष्टियोंके विषयमें कोई सन्देह नहीं रहा. उनमें भी विशेष समुदाय ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि एवं परमात्माके द्वारा 'होजा' कहनेसे उत्पन्न जीवसृष्टि इन सभीके महत्त्वके विषयमें कोई सन्देह नहीं रहा.

खासल खास रूहें इसक, और खासे बंदगी दिल ।
आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल ॥ ७

ब्रह्मात्माएँ सर्वोच्च हैं वे धनीसे प्रेम करती हैं, ईश्वरीसृष्टि भी विशिष्ट हैं जो हृदयसे उपासना करती हैं. सामान्य जीव हठ करनेवाले हैं, क्योंकि उनकी बुद्धि ही नश्वर जगतकी है.

रूहों लई हकीकत मारफत, गिरो फिरस्तों हकीकत ।
आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरियत ॥ ८

इन समुदायोंमें ब्रह्मात्माओंको यथार्थ ज्ञान एवं पूर्ण पहचान है तथा ईश्वरीसृष्टिको यथार्थ ज्ञान है. सामान्य जीव मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण कर कर्मकाण्डका मार्ग स्वीकार करते हैं.

दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन ।
सो तेता ही नजीक, जिनका जेता यकीन ॥ ९

ब्रह्मसृष्टि एवं ईश्वरीसृष्टि दोनों अपने-अपने धाममें जागृत होंगी. तीसरी जीवसृष्टि सामान्य कहलाती है. इनमें-से जिनको जितना विश्वास होता है वे उतने ही अपने गन्तव्यके निकट मानी जाती हैं.

पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इसक ।
ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक ॥ १०

तारतम ज्ञानके द्वारा तीनोंके आचरण - सामान्य जीवोंका अन्धविश्वास (कर्मकाण्ड), ईश्वरीयसृष्टिकी उपासना एवं ब्रह्मसृष्टिका प्रेम, निस्सन्देह स्पष्ट हो गए हैं. धामधनीने इस नश्वर जगतमें ऐसा ज्ञान भेजा जिससे अखण्ड धामके विषयमें कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना पैदा फना की, सक ना दोजक भिस्त ।
हिसाब ठौर की सक नहीं, सक ना ठौर कयामत ॥ ११

तारतम ज्ञानके अवतरणसे संसारकी उत्पत्ति तथा लय एवं कर्मानुसार जीवोंकी गति-नरक या मुक्तिस्थल (बहिश्त) के सम्बन्धमें कोई सन्देह नहीं रहा. इतना ही नहीं सबके कर्मोंका लेखा-जोखा एवं आत्मजागृति (कयामत)के स्थानके विषयमें भी कोई शङ्का नहीं रही.

सक ना आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए ।
बेसक किए आखर लों, अव्वल से इमदाए ॥ १२

अब तो कुरानमें वर्णित आठों मुक्तिस्थल (बहिश्तों) तथा अन्तिम (कयामतके) समयमें परमात्मा द्वारा न्यायाधीश (काजी) बनकर न्याय (कजा) करनेके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा. इस प्रकार तारतम ज्ञानके अवतरणसे आरम्भसे लेकर अन्त तककी सभी शङ्काओंका निवारण हो गया है.

क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार ।
क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह अल्ला खोले द्वार ॥ १३

कयामतके समय कब्रोंसे मुर्दे कैसे उठेंगे ? कैसे सभीको न्यायाधीश बने हुए

परमात्माके दर्शन होंगे ? परमात्मा कैसे सभी जीवोंका लेखा-जोखा अपने हाथमें लेंगे इत्यादि कुरानके इन गूढ़ रहस्योंका स्पष्टीकरण सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने तारतमज्ञानके द्वारा कर दिया है.

केते दिन कयामत के, क्यों कयामत के निसान ।
ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान ॥ १४

कयामत (आत्मजागृति) का समय कौन-सा है और कयामतके चिह्न (लक्षण) क्या-क्या हैं इत्यादि कुरानमें उल्लेखित प्रसङ्गोंके विषयमें अब कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना दाभातलअरज की, सक ना सूरज मगरब ।
बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब ॥ १५

हे ब्रह्मात्माओ ! कयामतके लक्षणोंमें दाभातुल अर्जका प्रकट होना, पश्चिमसे सूर्यका उदय होना तथा परमात्मा द्वारा स्वयं न्यायाधीश बनकर आनेके लिए दिए हुए वचन इत्यादिमें अब कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना आजूज माजूज की, आडी अष्ट धात दिवाल ।
लिख्या टूटेगी आखर, ए बेसक दुनी के काल ॥ १६

अब याजूज और माजूजके प्रकट होनेके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा जो अष्टधातुकी बनी हुई दीवारको चाटेंगे. अन्तमें वह दीवार टूट जाएगी और संसारके सभी जीव कालके ग्रास बनेंगे इत्यादि कुरानकी भविष्यवाणीके विषयमें भी अब कोई सन्देह नहीं रहा.

रूह अल्ला सब रूहन को, पाक कर देवें यकीन ।
कुफर दजाल को तोड के, बेसक करें एक दीन ॥ १७

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि कयामतके समय रूहअल्लाह (सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी) सभी आत्माओंको (तारतमज्ञानसे) पवित्र कर उन्हें परमात्माके प्रति विश्वास दिलाएँगे. संसारमें फैले हुए अज्ञानता (कुफ्र) एवं अहङ्कारको मिटाकर सबकी भ्रान्तियाँ दूर करेंगे और एक धर्मकी स्थापना करेंगे.

ल्याया ईसा वास्ते मोमिनों, बेसक बका न्यामत ।
करें हक जात पर सेजदा, इमाम मोमिनों इमामत ॥ १८

वस्तुतः सद्गुरु (ईसा) यह सन्देह निवारक तारतम ज्ञानरूपी सम्पदा ब्रह्मात्माओंके लिए ही लेकर आए हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! यही तो सद्गुरु (इमाम) का गुरुत्व (इमामत) है कि वे सभीको एक परमात्मा पर नमन करवाते हैं.

सक ना किसी अरस की, सक ना नूर मकान ।
सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान ॥ १९

तारतमज्ञानके प्रतापसे अब किसीको भी परमधाम, अक्षरधाम, शून्य-निराकार (बैचून बेचगून) तथा चारों आसमानोंके विषयमें कोई सन्देह नहीं रहा.

कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती मलकूत ।
सक ना आसमान जबरूत, ना सक आसमान लाहूत ॥ २०

इन चार आसमानोंका विवरण इस प्रकार है-मृत्युलोक (नासूत), वैकुण्ठ (मलकूत), अक्षरधाम (जबरूत) तथा परमधाम (लाहूत). अब इनके विषयमें भी सन्देह नहीं रहा.

सक नाहीं सरियत में, ना सक रही तरीकत ।
सक नाहीं हकीकत में, सक ना हक मारफत ॥ २१

अब तो कर्मकाण्ड (शरीयत), उपासना (तरीकत), यथार्थ ज्ञान (हकीकत) एवं पूर्णपहचान -आत्मजागृति (मारफत) के विषयमें भी कोई सन्देह शेष नहीं रहा.

सक ना जुदी जुदी कयामत, सक नाहीं वाहेदत ।
बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत ॥ २२

इसी प्रकार आत्माएँ कैसे अलग-अलग प्रकारसे जागृत होंगी तथा उनमें किस प्रकार अद्वैत भाव है इस विषयमें तथा अलग-अलग प्रकारसे उत्पन्न होने वाली सृष्टि एवं समर्थ परमात्माकी इच्छाशक्ति (प्रकृति) के विषयमें भी कोई सन्देह शेष नहीं रहा.

सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, जो जाहेर होसी आखरत ॥ २३

अब रसूलकी पहचानमें भी कोई सन्देह नहीं रहा. साथ ही मुहम्मदकी तीन सूरत–बशरी, मलकी और हकी जो अन्तिम (कयामतके) समयमें प्रकट होंगी, की पहचानमें भी कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना जबराईल में, और सक ना मेकाईल ।
सक ना सूर बजाए की, सक ना असराफील ॥ २४

अब (सृष्टिके आदिसे अवतीर्ण) जिब्रील तथा मेकाईल फरिश्ताके विषयमें एवं (कयामतके समयमें) सूर बजाने वाले इस्राफील फरिश्ताके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना अरवाहें अरस की, जो तीन बेर उतरे ।
लैल में आए जिन वास्ते, कछू सक ना रही ए ॥ २५

अब उन ब्रह्मात्माओंके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा जो (व्रज, रास और जागनी ब्रह्माण्डमें) तीन बार अवतरित हुई हैं. वे जिस खेलको देखनेके लिए इस अज्ञानमयी रात्रिमें आई हैं उसके विषयमें भी अब कोई सन्देह नहीं रहा.

सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड ।
कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अरस चढ ॥ २६

अब इस बात पर कोई सन्देह नहीं रहा कि ब्रह्मात्माएँ धामधनीसे विछुड़कर जगतका खेल देखने आईं हैं और इस जगतमें एकत्र होकर सद्गुरुका उपदेश ग्रहण करतीं हुईं परमधाम लौट जाएँगी.

महंमद ईसा अरस में, पोहोंचे हक हजूर ।
कर अरज सब म्याराज में, बेसक करी मजकूर ॥ २७

अब कुरानकी इस बात पर भी कोई शङ्का नहीं कि धर्मोपदेशक (ईसा) रसूल मुहम्मद परमात्माके निकट पहुँचे और दर्शनके समय उन्होंने आत्माओंके लिए परिचर्चा की.

महंमद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक ।
सक नहीं पडउतर में, जो हकें दिए बुजरक ॥ २८

उस समय धर्मोपदेशक रसूल मुहम्मदने जो प्रत्युत्तर दिया अब उस विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा. इतना ही नहीं परमात्माने अपने प्रत्युत्तरमें जो विशेष ज्ञान दिया उस पर भी कोई सन्देह शेष नहीं रहा.

बीच सब म्याराज के, जेती भई मजकूर ।
ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला नूर ॥ २९

साक्षात्कार (म्याराज) के समय तेजोमय परमधामके एकान्तस्थलमें रसूलने परमात्माके साथ जो भी परिचर्चा की, अब उस विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा.

छिपी बातें बीच अरस के, कोई रही न माहें सक ।
पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक ॥ ३०

अब तो परमधामके गूढ़ रहस्योंके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं रहा क्योंकि ऐसा सन्देह रहित ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्राप्त हो गया जिससे परमात्माके हृदयकी बातें भी स्पष्ट हो गईं.

आगूं बेसक बडे अरस के, नूर रोसन जोए किनार ।
दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार ॥ ३१

अब निस्सन्देह ज्ञात हुआ कि विशाल परमधाममें रङ्गमहलके सम्मुख तेजोमय तटवाली यमुना नदी बह रही है. उसके दोनों तट रत्नजडित लगते हैं तथा उनका प्रकाश जगमगा रहा है.

सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिसरी ।
सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी ॥ ३२

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यमुनाजीका उज्ज्वल जल मिश्रीकी भाँति मधुर (मीठा) है चारों ओर वन, उपवन हैं तथा वहाँ बने हुए अनेक भवन रत्नजड़ित हैं.

खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत ।
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत ॥ ३३

परमधामकी भूमि अति उज्ज्वल तथा सुगन्धित है, वृक्ष भी सुवर्ण तथा रत्नोंकी भाँति प्रतीत होते हैं. निश्चय ही वहाँकी वनराजि रत्नजड़ित प्रतीत होती है और उनसे तेजोमय प्रकाश झिलमिलाता है.

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक ।
बृख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक ॥ ३४

हौज कौशर ताल भी निश्चय ही सुन्दर है, यहाँ पर अनेक श्रेष्ठ भवन सुशोभित हैं. इसका जल, तटके वृक्ष तथा घाट आदिकी शोभा देखते ही बनती है.

बेसक बडे अरसकी, क्यों कहूं बडी मोहोलात ।
बाग बडा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात ॥ ३५

निश्चय ही अब मैं विशाल परमधामके बड़े-बड़े भवनोंके विषयमें क्या कहूँ ? रङ्गभवनके चारों ओर बड़े वन, उपवन सुशोभित हैं. उनका वर्णन इस जिह्वासे सम्भव नहीं है.

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसू खेलत ।
गिरदवाए गुंजे अरस के, कई विध जिकर करत ॥ ३६

अब मुझे कोई सन्देह नहीं रहा कि परमधामके वन तथा गलियोंमें पशु-पक्षी खेल खेलते हैं. उनके स्वर परमधामके विशाल भवनोंके चारों ओर गूँजते हैं, वे धामधनीकी महिमा अनेक प्रकारसे गाते रहते हैं.

यों केती कहूं बेसकी, इनकी नहीं हिसाब ।
महामत देखावें हक इसक, जो साकी पिलावें सराब ॥ ३७

इस प्रकार निश्चय ही परमधामकी क्या शोभा बताएँ, इसका कोई लेखा-जोखा ही नहीं है. अब महामति परब्रह्मका प्रेम दिखा रहे हैं जो (परमात्मा) साकी (पिलानेवाले) बनकर प्रेम (मद) का प्याला पिलाते हैं.

साकी पिलावें सराब, रूहें प्याले लीजिए ।
हक इसक का आब जो, भर भर प्याले पीजिए ॥ १

प्रियतम परमात्मा साकी बनकर अपने प्रेमरूपी मदिरा (मद) का पान करवा रहे हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! तुम अपने हृदयरूपी प्याले भर-भरकर धामधनीके प्रेमरसका पान करो.

हक आसिक रूहन का, इन इसक का आब जे ।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले ॥ २

परब्रह्म परमात्मा अपनी आत्माओंके चाहक (प्रेमी) हैं. उनके प्रेम रसका स्वाद तो उसको पान करनेवाले ही जान सकते हैं.

नहीं हिसाब इसक का, स्वाद को नहीं हिसाब ।
हिसाब ना तरंग आलम के, ए जो आवत साकी के सराब ॥ ३

परब्रह्म परमात्माके प्रेम तथा उसके स्वादका कोई माप नहीं है. प्रेम मस्तीकी तरङ्गोंका भी कोई माप नहीं है जो पिलाने वालेके प्रेम रससे उठा करती है.

कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान ।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान ॥ ४

परब्रह्म परमात्मा द्वारा पिलाया गया प्रेम-अमृत अनेक प्रकारके रसोंसे परिपूर्ण है. परम कृपालु परमात्मा कृपा पूर्वक यह मस्तीयुक्त प्रेमरस अपनी आत्माओंको सदैव पिलाते हैं.

रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल ।
मुंह पकड तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल ॥ ५

अपनी आत्माओंको अज्ञानरूपी नींदसे जागृत कर प्रियतम परमात्मा प्रेमरसके प्याले भर-भरकर पिलाते हैं. पिलाते हुए वे उनका मुख पकड़कर उसमें प्रेमरस उडेल देते हैं. इस प्रकार वे प्रसन्नताके साथ ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुख प्रदान करते हैं.

ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई विध रूहों पिलावत ।
सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत ॥ ६

प्रियतम परमात्मा कृपापूर्वक यह प्याला अपनी आत्माओंको पिलाते हैं. अपनी अङ्गरूपा आत्माओंको अपने निकटका अखण्ड सुख प्रदान करनेके लिए वे इस प्रकार अपना सम्बन्ध प्रेमपूर्वक दिखा रहे हैं.

कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान ।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान ॥ ७

इस प्रकार कृपालु परमात्मा अनेक प्रकारसे कृपाकी वर्षा कर रहे हैं. अद्वैत परमधामके धनी इस नश्वर जगतमें आकर ब्रह्मात्माओंके चाहक (प्रेमी-आशिक) बने हैं.

रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से ।
ना कछू चित में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में ॥ ८

ब्रह्मात्माओंके मनमें कोई भी इच्छा नहीं थी. वे धामधनीसे न कुछ कहती थीं और न ही कुछ माँगती थीं. न वे चित्तमें कुछ चिन्तन ही करतीं थीं, उनके मनमें धनीसे दूर होनेका विचार नितान्त नहीं था.

आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद ।
आप इसक की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद ॥ ९

प्रियतम परमात्माके आदेशने ही उनसे कुछ माँगने (आशा) की प्रेरणा दी एवं उसीने ब्रह्मात्माओंकी इस आशाकी पूर्ति भी कर दी. इस प्रकार परब्रह्मने अपार कृपा कर अपने प्रेमकी महिमाके अनेक रहस्य स्पष्ट कर दिए.

यों कई सुख दिए इसक के, कई सुख दिए जोस मेहेर ।
कई सुख अपनी बडाई के, जासों और लगे सब जेहेर ॥ १०

इस प्रकार परमात्माने प्रेम तथा कृपाके अनेक सुख प्रदान किए. साथ ही अपनी महिमाके अनेक सुख भी दिए जिससे अन्य सभी (भौतिक) सुख विषतुल्य लगने लगे.

कई सुख दिए अरस के, कई सुख दिए निसबत ।
कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत ॥ ११

परब्रह्म परमात्माने ब्रह्मात्माओंको परमधामके अनेक सुख प्रदान किए. अपने सम्बन्धकी पहचान करवाकर अनेक प्रकारसे आनन्दित भी किया. इस प्रकार सन्देह रहित ज्ञान (तारतमज्ञान) का उपदेश देकर अनेक प्रकारके सुख प्रदान किए.

कई सुख दिए रूहन में, ए मेला बैठा विध जिन ।
हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन ॥ १२

परब्रह्म परमात्माने अपनी आत्माओंको अनेक सुख प्रदान किए जिससे इस अन्धकारमय संसारमें भी ब्रह्मात्माओंका परस्पर मिलन सम्भव हुआ. इस प्रकार परब्रह्मने स्वयं संरक्षक बनकर सभी ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुख प्रदान किया.

सुख दिए अरस जिमीय के, सुख दिए जल जोए ।
सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारें सोए ॥ १३

परब्रह्मने परमधामकी दिव्य भूमिकाके अनेक सुख अपनी आत्माओंको प्रदान किए. उनमें यमुनाजीका मधुर जल तथा यमुना तटके रत्नजड़ित अनेक भवनोंके सुख भी संलग्न हैं.

सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक ।
कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥ १४

परब्रह्मने अपनी आत्माओंको हौज कौसर ताल तथा उसके जलके अनेक सुख प्रदान किए जिनका वर्णन करोड़ों जिह्वा भी नहीं कर सकतीं तो मेरी एक जिह्वा भला क्या कर पाएगी ?

सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए ।
ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूं, इन जुबां केहे न जाए ॥ १५

इतना ही नहीं प्रकाशमय भवन तथा उसके चारों ओरके वन, उपवन आदिका सुख भी परब्रह्मने प्रदान किया. इन भवनोंके समूहका सुख कैसे वर्णन करूँ ? इस जिह्वासे यह कहा नहीं जा सकता.

कई सुख बडे अरस के, बन गिरद मोहोलात ।
ए कायम सुख हक अरस के, सुख हमेसा दिन रात ॥ १६

विशाल परमधामकी चारों दिशाओंके वन, उपवन तथा भवनोंमें सुख अनंत हैं. ब्रह्मात्माएँ रातदिन इन अखण्ड सुखोंका आनन्द लेती हैं.

कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन ।
कई सुख पसू पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन ॥ १७

यमुनाजी तथा यमुना तटके वन, उपवन एवं कुञ्ज-निकुञ्ज वनकी गलियोंके सुख भी अनेक हैं. वहाँ पर पशु-पक्षी भी मधुरवाणी बोलकर अनेक सुख प्रदान करते हैं.

ए खेलौनें सुख हक के, ए सुख दिए रूहन ।
खूबी इनके परनकी, आकास न माए रोसन ॥ १८

ये पशु-पक्षी धामधनीको रिझानेके लिए खिलौनेके समान हैं तथा इनसे ब्रह्मात्माओंको भी अपार सुख प्राप्त होता है. इनके पङ्खोंमें ऐसी विशेषता है कि इनका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है.

देखी कायम साहेबी हक की, जिनका नाहीं सुमार ।
इन नासूत में बैठो के, सुख देखाए नूर के पार ॥ १९

ब्रह्मात्माओंने श्रीराजजीकी शाश्वत महिमा (तारतम ज्ञानके द्वारा) का अनुभव किया जिसका कोई पारावार नहीं है. वस्तुतः धामधनीने इस नश्वर जगतमें बैठाकर ब्रह्मात्माओंको अक्षरसे परे अक्षरातीतके सुखोंका साक्षात्कार करवाया.

कई सुख दिए लैलत कदर में, जो अव्वल दो तकरार ।
सुख दिए फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार ॥ २०

परब्रह्म परमात्माने महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के प्रथम दो खण्डों (व्रज एवं रास) में भी अपनी आत्माओंको अनेक प्रकारके सुख प्रदान किए. साथ ही इस तीसरे खण्डमें भी तारतम ज्ञानका प्रभात कर अनेक प्रकारसे आनन्दित किया.

कई सुख दिए निसबत के, ए झूठा तन कर यार ।
क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार ॥ २१

परब्रह्म परमात्माने अपनी ब्रह्मात्माओंको मूल सम्बन्धका सुख प्रदान किया. उनके नश्वर तनोंको भी अपना मित्र बनाकर वे स्वयं उनके हृदयरूपी सिंहासनमें विराजमान हो गए ऐसे प्रियतम परमात्माके अपार तथा अखण्ड सुखोंकी विशेषताओंका वर्णन कैसे करूँ ?

और सुख सब म्याराज में, केते कहूं जुबान ।
जुदी जुदी जंजीरों, लिखे माहें फुरमान ॥ २२

दर्शन (म्याराज) के समय रसूल मुहम्मदको अनुभव हुए सुखोंका वर्णन भी इस जिह्वासे कितना करूँ ? वे सभी सङ्केत कुरानकी अलग-अलग आयतोंमें लिखे गए हैं.

हक कह्या उतरते, तुम जात बीच नासूत ।
आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत ॥ २३

इस झूठे जगतमें अवतरित होते समय परब्रह्म परमात्माने ब्रह्मात्माओंको सचेत करते हुए कहा, तुम संसारमें जा रही हो. वहाँ जाकर तुम स्वयंको, अपने धामको तथा मुझको मत भूलना, मैं परमधाममें ही बैठा हूँ.

तब फेर कह्या अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको ।
तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको ॥ २४

तब ब्रह्मात्माओंने उत्तर दिया, हे धनी ! हम आपको कैसे भूल सकेंगी, क्योंकि आपने पहलेसे ही सचेत कर दिया है. अब यह झूठा खेल हमारा क्या बिगाड़ सकेगा.

ए बातें बीच अरस के, अव्वल जो मजकूर ।
सो याद देने लिखी रमूजें, जो हुई हक हजूर ॥ २५

ब्रह्मात्माओंके अवतरणसे पूर्व (आरम्भमें ही) परमधाममें ब्रह्मात्माओं एवं परब्रह्मके बीच हुए इस प्रकारके परिसम्वादका उल्लेख कुरानमें सङ्केतरूपमें किया गया है.

बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फुरमान ।
इनमें लिखी इसारतें, वाहेदत के सुभान ॥ २६

इस नश्वर जगतमें हमें भेज (बैठा) कर भी धामधनीने हमारे लिए सन्देश (कुरान) भेजा, जिसमें परब्रह्मके अद्वैतस्वरूप होनेकी बातें सङ्केत रूपमें वर्णित हैं.

मोमिन मेरे एहेल हैं, हकें लिख्या माहें कुरान ।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान ॥ २७

कुरानके अन्तर्गत परब्रह्म परमात्माका सन्देश इस प्रकार लिखा है कि ब्रह्मात्माएँ मेरे प्रिय हैं, वे ही मेरे भेजे हुए सङ्केतोंको समझने योग्य हैं. इसलिए इस सन्देशके सङ्केतोंको वे ही स्पष्ट कर सकती हैं. क्योंकि इनको परमधामके कण-कणकी पहचान है.

और जिन छूओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत ।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत ॥ २८

अन्य लोग इस कुरानको पढ़ने (स्पर्श करने) का प्रयत्न न करें. ऐसा कहकर परमात्माने यथार्थता स्पष्ट कर दी कि अद्वैत परमात्माकी कृपा (सहायता) बिना उनके हृदयकी मलिनता दूर नहीं होगी.

सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन ।
ए दुनियां को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन ॥ २९

अद्वैत परमात्माकी पूर्ण कृपा (सहायता) ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य जीवोंके लिए सम्भव नहीं होती. क्योंकि ब्रह्मात्माएँ संसारके नश्वर सुखोंकी चाहना नहीं रखती. उनका हृदय परब्रह्म परमात्माकी बैठक होनेसे सदैव प्रकाशित है.

सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन ।
सो हक बिना कछू ना रखें, ऐसा इनका यकीन ॥ ३०

अतः ब्रह्मात्माएँ पवित्रहृदया कहलाती हैं, उन्होंने सत्यधर्मको ग्रहण किया है. वे अपने हृदयमें परब्रह्मके स्वरूपके अतिरिक्त कुछ भी रखना नहीं चाहती. इस प्रकार उनका विश्वास दृढ़ है.

हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार ।
उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार ॥ ३१

इन ब्रह्मात्माओंको ही कुरानके गूढ़ रहस्य व पूर्ण पहचानके द्वार खुले हैं. ये सभी चिन्मय परमधाम (नूर बलन्द) से अवतरित हुई हैं. इनका धाम अक्षरसे भी परे है.

जहां जबराईल जाए ना सक्या, रह्या नूर मकान ।
पर जलावे नूर तजल्ली, चढ सक्या न चौथे आसमान ॥ ३२

उस तेजोमय परमधाममें जिब्रील फरिश्ता भी प्रवेश न कर सका, वह अक्षरधाममें ही रुक गया. अक्षरातीतके तेजसे मेरे पङ्ख जलते हैं ऐसा कहकर वह परमधाम (चौथे आसमान) में प्रवेश नहीं कर सका.

जित हक हादी रूहें, अरस अजीम का नूर ।
कौल किया रूहोंसों हकें, सो महंमद मसी ल्याए मजकूर ॥ ३३

जहाँ पर पूर्णब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं ऐसे परमधामका प्रकाश अति तेजोमय है. वहीं पर परब्रह्मने अपनी आत्माओंको जगानेके लिए संसारमें आनेके वचन दिए थे. उसी सन्देशको लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी अवतरित हुए हैं.

और हुज्जत न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान ।
मोमिनों ऊपर अहंमद, ल्याया एह फुरमान ॥ ३४

इन चौदह लोकोंकी सृष्टिमें (ब्रह्मज्ञानके विषयमें) ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीके भी दावे मान्य नहीं किए गए. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए परमात्माका आदेश लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज आए हैं.

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अरस उमत धरे आकार ।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंने इस जगतमें आकर नश्वर (क्षणभङ्गुर) तन धारण किया है तथापि परमात्माने कुरानमें लिखवाया है कि ये नश्वर तन भी मेरे प्रिय हैं.

यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे एहेल ।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल ॥ ३६

परब्रह्मने कुरानमें यह भी लिखवाया है कि ब्रह्मात्माएँ ही मुझे जानने तथा समझने योग्य हैं यद्यपि उनके ये पार्थिव तन नश्वर तथा मलिन (गन्दे) हैं.

औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत ।
ऐसे निजस तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत ॥ ३७

कुरानके अन्तर्गत परमात्माने यह भी लिखवाया कि ये ब्रह्मात्माएँ मेरे उत्तराधिकारी तथा अन्तरङ्ग मित्र हैं. यद्यपि ब्रह्मात्माओंने अपवित्र (नश्वर) तन धारण किया है तथापि परब्रह्मने कहा कि इनके साथ ही मेरा सम्बन्ध है.

कहे नूर जमाल कुरान में, छोड के एह अंधेर ।
एक साद करो मुझको, मैं तुमे जी जी कहूं दस बेर ॥ ३८

परब्रह्मने कुरानमें यह भी कहलाया कि तुम संसारकी अज्ञानताको दूरकर मुझे एक बार भी पुकारोगे तो मैं तुम्हें दस बार 'जी हाँ' कहूँगा.

यों हके लिख्या कुरान में, हक रूहों की करे जिकर ।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर ॥ ३९

कुरानमें इस प्रकार लिखा हुआ है कि परब्रह्म परमात्मा स्वयं पहले ब्रह्मात्माओंको याद करते हैं उसके पश्चात् हम आत्माएँ उनका स्मरण करतीं हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें तुम अपने हृदयमें क्यों धारण नहीं करती ?

हकें लिख्या कुरानमें, पेहेले मेरा प्यार ।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार ॥ ४०

कुरानमें परमात्माने यह भी लिखवाया है कि मैं पहले तुमसे प्यार करूँगा. पश्चात् तुम मुझसे मित्रता करोगी तो भी तुम मेरे सच्चे मित्र मानी जाओगी.

रूहें सुनो एक मैं कहूं, जो हकें करी मुझसों ।
पडी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों ॥ ४१

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, धनीने मुझ पर कैसी कृपा की है मैं तुमसे वह बात कहूँगी. मैं तो अथाह भवसागरमें पड़ी हुई थी. मुझे किसी भी प्रकारका ज्ञान नहीं था.

भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार ।
दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार ॥ ४२

भवसागरके जीवोंमें-से किसीने भी इसका पार नहीं पाया है. यह मोहजल अति दुःखरूप है. इसमें फँसे हुए जीव (काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिकी) अग्निमें जल रहे हैं.

लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड जैसी बेर बेर ।
ऊपर तले लग भमरियां, जीव पडे माहें फेर फेर ॥ ४३

इस भावसागरमें पर्वतके समान ऊँची-ऊँची अन्धकारमयी लहरें उठती रहतीं हैं. इसमें ऊपरसे नीचे तक सर्वत्र (सत्व, रज एवं तमरूपी) भयानक भँवर हैं जिनमें जीव वारंवार पड़ते (डूबते-उतरते) रहते हैं.

निपट अंधेरी लाएकी, सिर ना सूझे हाथ पाए ।
टापू पहाडों बीच में, सब बंधे गोते खाए ॥ ४४

यह भावसागर ऐसा अन्धकारमय है कि इसमें पड़े हुए जीवोंको अपने सिर, हाथ, पैर भी नहीं सूझते. यहाँ पर द्वीप तथा पर्वतोंकी भाँति अहङ्कार लिए हुए विभिन्न मत-मतान्तर चल रहे हैं जिसमें बँधे हुए सभी जीव गोते खा रहे हैं.

मगर मछ माहें बुजरक, वजूद बडे विकराल ।
खेलें निगलें जीव को, एक दूजे का काल ॥ ४५

जैसे सागरोंमें बड़े-बड़े विकराल मगर मच्छ छोटे जीवोंके साथ खेलते हैं तथा बादमें उनको ही अपना आहार बनाकर एक दूसरेके काल बन जाते हैं उसी प्रकार इस भवसागरमें भी विभिन्न मत-मतान्तरके लोग अज्ञानतावश परस्पर मतभेद रखते हैं.

ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा ।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढी होए मरजिया ॥ ४६

पातालसे वैकुण्ठ, शून्य निराकार पर्यन्त विस्तृत यह भवसागर क्षर जगत (ला मकान) का है. ऐसे अज्ञानमय अथाह सागरमें-से सद्‌गुरुने गोताखोर बनकर मुझे बाहर निकाला.

काढ के बूझ ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का ।
बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका ॥ ४७

इस संसार सागरसे बाहर निकाल कर सद्‌गुरुने मुझे इसकी पूरी पहचान करवाई. फिर ऐसा सन्देह निवारक ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्रदान किया, जिससे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं परमधाममें बैठी हुई अखण्ड सुख ले रही हूँ.

ए सब किया हक ने, वास्ते इसक के ।
एक जरे जरा जो दुनीय में, जो बिचार देखो तुम ए ॥ ४८

हमें अपने प्रेमकी पहचान करवानेके लिए ही इस नश्वर जगतकी रचना की है, यदि विचार कर देखें तो ज्ञात होगा कि यहाँके कण-कणमें धनीका आदेश और प्रेमका हेतु समाया हुआ है.

मैं कह्या नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फुरमान ।
लिखी गुझ बातें दिल की, हाए हाए केहेवत यों सुभान ॥ ४९

'मैंने तुम्हें सन्देश देनेके लिए अपना नूरी रसूल (हजरत मुहम्मद) को कुरान देकर भिजवाया है और इस (कुरान) में मेरे हृदयकी बातें सङ्केतोंमें लिखी हैं'. बड़े खेदकी बात है कि धामधनीने वार वार इस प्रकार कहलाया तथापि हम सचेत नहीं हुए.

लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे ।
कुंजी भेजी हाथ रूह अल्ला, जाए दीजो अपनी रूहों को ए ॥ ५०

इस प्रकार धामधनीने परमधामके गूढ़ रहस्य कुरानमें सङ्केतोंमें लिखवाए. पुनः उन रहस्योंको स्पष्ट करनेके लिए तारतमज्ञानरूपी कुञ्जी देकर सद्‌गुरुको भेजा और उनसे कहा कि तुम संसारमें जाकर यह ज्ञान अपनी ब्रह्मात्माओंको दे देना.

सो कुंजी दई मुझ को, और खोलने की कल ।
तिनसे ताले सब खुले, पाई आखर अव्वल असल ॥ ५१

सद्गुरु धनीने तारतमज्ञानकी वह कुञ्जी मुझे प्रदान की और विभिन्न धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेकी समझ दी. उसीके द्वारा ये सभी रहस्य स्पष्ट हुए जिससे आदिसे लेकर अन्त तककी सभी बातें ज्ञात हुईं.

और कोई ना खोल सके, तीन सूरत का हाल ।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोकों लिखियां नूरजमाल ॥ ५२

सद्गुरुने मुझे यह भी समझाया कि मुहम्मदकी तीन सूरत (बशरी, मलकी, हकी) का स्पष्टीकरण तेरे अतिरिक्त कोई भी नहीं कर सकेगा. ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि इन दोनों समुदायोंके आचरण तथा मनोभाव (करनी-रहनी) को स्पष्ट करनेका दायित्व भी परमात्माने तुझे सौपा है.

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत ।
चिन्हाए इसक हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत ॥ ५३

अब तुम दोनों समुदायको इस नश्वर जगतमें भी अखण्ड सुख प्रदान करो तथा श्री राजजीका प्रेम और उनकी महिमाकी पहचान करवा कर ब्रह्मात्माओंको परमधाममें बुला ले आओ.

इन विध सुख केते कहूं, झूठी इन जुबान ।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान ॥ ५४

इस प्रकार धनीके सुखोंका वर्णन इस नश्वर जिह्वासे क्या करूँ ? इन सुखोंको या तो मेरी आत्मा ही जानती है या ब्रह्मात्माएँ समझती हैं जिनको स्वयं धनीने अपने सुख प्रदान किए हैं.

दे आडो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ ढूंढ रहे सब दूर ।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची बका हजूर ॥ ५५

परब्रह्मकी खोज करनेवालोंके बीच यह चौदह लोक वाला ब्रह्माण्ड ऐसा आवरण बन गया है कि लोग परमात्माको ढूँढ़-ढूँढ़कर थक गए परन्तु उसका पार नहीं पा सके. ऐसी स्थितिमें परमात्माने स्वयं सद्गुरुके रूपमें

प्रकट होकर तारतमज्ञान प्रदान किया जिसके प्रभावसे मैं धनीके चरणों (अखण्ड धाम) में पहुँच गई.

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर ।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर ॥ ५६

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! प्रियतम परमात्माकी कृपाका वर्णन कहाँ तक करूँ ? तुम परस्पर विचार कर देखो. जब तुम आत्मदृष्टिसे देखने लग जाओगी तब ज्ञात होगा कि धनीकी कृपा अपरम्पार है.

प्रकरण ८ चौपाई ३९८

निसबत का प्रकरण (सम्बन्धका प्रकरण)

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल ।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल ॥ १

महामति कहते हैं, हे मेरी आत्मा ! तू अपनी आँखें खोल और श्रीराजजीके साथके अपने सम्बन्धकी पहचान कर. तूने स्वयं उनके वचनोंको अपने कानोंसे सुना है.

कौन जिमी में तूं खडी, कहां है तेरा वतन ।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन ॥ २

हे आत्मा ! विचारपूर्वक देख, तू इस समय कौन-सी भूमि पर खड़ी है और तेरा मूलघर (परमधाम) कहाँ है, तेरे (आत्माके) पति कौन हैं तथा तेरा मूल तन (पर-आत्मा) कौन-सा है ?

कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर ।
तो तोहे याद न आवहीं, जो तें सुन्या नहीं दिल धर ॥ ३

तेरी मूल बैठक (मूलमिलावा) कौन-सी है और तू वहाँसे कैसे बिछुड गई है ? सद्गुरुके वचनोंको तूने ध्यानपूर्वक नहीं सुना इसीलिए तुझे इन बातोंका स्मरण नहीं हो रहा है.

सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक ।
बाहेर माहें अन्तर, एक जरा न रही सक ॥ ४

सद्गुरुने तुझे ब्रह्मज्ञान दिया और इसे समझनेके लिए विवेक भी प्रदान किया जिससे तेरे बाह्य तथा अन्तरमें कोई भी सन्देह शेष नहीं रहा.

चौदे तबकों में नहीं, रूह अल्ला का इलम ।
ए दिया एक तोही को, करके मेहेर खसम ॥ ५

सद्गुरु धनीका यह तारतम ज्ञान चौदह लोकोंमें कही भी नहीं है. धनीने कृपा कर एक तेरेको ही यह ज्ञान प्रदान किया है.

मूल मिलावा चीन्ह्या, चीन्ह्या बिछुरे वास्ते जिन ।
बेसक हुई इन बातों, जो हक बका का बातन ॥ ६

इस तारतम ज्ञानके प्रतापसे मूलमिलावाकी पहचान हुई. और यह भी जान लिया कि हम कैसे वहाँसे बिछुड़ कर इस संसारमें आईं हैं. इस प्रकार परमधामकी सभी अन्तरङ्ग बातोंको जान लेनेके पश्चात् हमें किसी भी प्रकारकी शङ्का नहीं रही.

दुनियां में अरस कहावहीं, ताए सब जाने हक ।
ए इलम तिनको नहीं, जो तें पाया बेसक ॥ ७

इस संसारमें स्वर्ग, वैकुण्ठ आदिको ही धाम कहा गया है इसलिए संसारके जीव इसीको सत्य मानते हैं. इन लोगोंके पास वह सन्देह रहित ज्ञान नहीं है जो तुझे प्राप्त हुआ है.

त्रिगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान ।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान ॥ ८

इन चौदह लोकोंके स्वामी माने जाने वाले त्रिगुण स्वरूप (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी परब्रह्म परमात्माका गुणानुवाद करते हैं. वे भी परमात्माकी खोज करते हुए शून्य निराकारमें ही थक गए. परन्तु परमात्माको प्राप्त नहीं कर सके.

मलकूत साहेब फिरस्ते, हक ढूँढ्या चहूं ओर ।
रहे बेचून बेसब्बीय में, ना पाया बका ठोर ॥ ९

वैकुण्ठके अधिपति तथा अन्य अनेक देवी-देवताओंने परब्रह्म परमात्माको चारों दिशाओंमें ढूँढ़ा. परन्तु वे सभी शून्य और निराकारमें ही उलझ गए, अखण्डधामको नहीं पा सके.

ए नूर बका किने ना पाइया, कर कर गए सिफत ।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तें पाई न्यामत ॥ १०

तेजोमय अक्षरधामको भी कोई प्राप्त न कर सका यद्यपि अनेक लोग उसकी महिमा गाते हुए चले गए. अक्षरधामके अधिपति ऐसे अक्षरब्रह्मको भी अखण्ड परमधामकी प्रेम सम्पदाकी सुधि नहीं है जिसको तूने प्राप्त किया है.

नूर बका इत दायम, आवें हक के दीदार ।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार ॥ ११

ऐसे अक्षरब्रह्म भी प्रतिदिन अक्षरातीतके दर्शनार्थ दिव्य परमधाम आते हैं. वे यमुनाजीको पार कर चाँदनी चौकमें झरोखेके नीचे खड़े होकर अक्षरातीतके दर्शन करते हैं.

नूर जमाल के दीदार को, आवें नूर जलाल ।
नूर जमाल के अरस में, इत रूहें रहें कमाल ॥ १२

इस प्रकार अक्षरातीत (नूरजमाल) के दर्शनार्थ प्रतिदिन अक्षरब्रह्म (नूरजलाल) आया करते हैं. अक्षरातीतके इस परमधाममें विशिष्ट (ब्रह्म) आत्माएँ रहती हैं.

इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार ।
उतरी लैलत कदर में, एह तीसरा तकरार ॥ १३

इसी दिव्य परमधाममें ब्रह्मात्माओंकी अन्तरङ्ग बैठक (मूलमिलावा) है. जिन (ब्रह्मात्माओं) की संख्या बारह हजार कही गई है, वे ब्रह्मात्माएँ इसी मूलमिलावासे महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में उतर आई हैं. वर्तमान समय इस रात्रिका तृतीय खण्ड है.

अरस अजीम तेरा वतन, खसम नूर जमाल ।
ए इलम पाया तें बेसक, देख कौल फैल हाल ॥ १४

हे आत्मा ! परमधाम तेरा घर है एवं परब्रह्म परमात्मा तेरे स्वामी हैं. इनकी पहचान कराने वाला तारतमज्ञान तुझे प्राप्त हुआ है, अब तू अपने कथन, आचरण (कर्म) एवं मनोभावको भली भाँति देख.

देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत ।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत ॥ १५

तू धनीकी कृपाको तो देख. उन्होंने इन सभी तथ्योंकी यथार्थता स्पष्ट कर दी है. अब तू इस तारतम ज्ञानको भी देख (समझ) जिसके द्वारा धनीने तुझे अपनी पहचान करवाई है.

जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन ।
रूह अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन ॥ १६

हे आत्मा ! जिसके लिए तेरा इस संसारमें आना हुआ तथा इस विषयमें सद्गुरुने जो कुछ समझाया है वह मैं अब ब्रह्मात्माओंके समक्ष प्रकट करती हूँ.

दायम करत रबद, रूहें हादी हक ।
सब कोई केहेतीं अपना, बडा है मेरा इसक ॥ १७

परमधाममें श्रीराजजी, श्यामाजी व ब्रह्मात्माओंका परस्पर प्रेम सम्वाद होता रहा. इसमें सभी ब्रह्मात्माएँ यही कहती रहीं कि मेरा प्रेम सबसे अधिक है.

बीच अरस खिलवत में, होत दायम विबाद ।
इसक अपना रूहें हक को, फेर फेर देतीं याद ॥ १८

इस प्रकार दिव्य परमधाममें सदैव परिसम्वाद चलता रहा. इसमें ब्रह्मात्माएँ सदैव परब्रह्मको अपने प्रेमकी याद दिलाती रहीं.

तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक ।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इसक मेरा बुजरक ॥ १९

तब परब्रह्मने श्यामाजी और ब्रह्मात्माओंको कहा, मैं तुम्हारा प्रेमी (आशिक)

हूँ. तुम यह निश्चित ही समझ लो कि मेरा प्रेम ही सबसे अधिक है.

तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक ।
हक का इसक हमसे बडा, ए क्यों होवे मुतलक ॥ २०

तब श्यामाजी सहित सभी ब्रह्मात्माओंके दिलमें सन्देह हुआ कि धामधनीका प्रेम हमसे बड़ा कैसे हो सकता है ?

हकें कह्या रबद मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमकों ।
इसक मेरा तब देखोगे, नेक न्यारे हो मुझ सों ॥ २१

इस सम्वादमें परब्रह्मने कहा, मैं तुमसे वादविवाद करना नहीं चाहता. मैं तो स्पष्ट दिखा दूँगा कि मेरा प्रेम अधिक है. किन्तु जब तुम मुझसे बिछुड़ (अलग हो) जाओगी तभी तुम्हें मेरे प्रेमकी अनुभूति होगी.

न्यारे तो हम होएं नहीं, निमख न छोडें कदम ।
ए जेती अरवाहें अरस की, कदम तले सब हम ॥ २२

तब ब्रह्मात्माओंने कहा, हे धनी ! हम एक क्षणके लिए भी आपसे अलग नहीं होंगी. पलमात्रके लिए भी हम आपके चरणकमल नहीं छोडेंगी. परमधामकी ये सभी ब्रह्मात्माएँ आपके चरणोंकी छायामें ही हैं.

जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों ।
हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों ॥ २३

हे धनी ! पहली बात तो यह है कि हम आपसे अलग नहीं हो सकतीं. श्यामाजी और हम ब्रह्मात्माओंमें भी परस्पर वियोग नहीं हो सकता.

खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल ।
ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल ॥ २४

तब धामधनीने कहा, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम सभी मेरे चरणोंके पास मिलकर बैठ जाओ. अब मैं तुम्हें वियोगका खेल दिखाऊँगा. यह स्वप्नका खेल ऐसा होगा कि तुम समझने लगोगी कि हम सब वस्तुतः (हृदयसे ही) अलग-अलग हो गईं हैं.

हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इसक ।
हादी रूहों को अरस में, ए सुध नहीं मुतलक ॥ २५

तब परब्रह्मने यह भी कहा कि परमधाममें रहते हुए श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको मेरे ऐश्वर्य एवं प्रेमकी सुधि निश्चय ही नहीं है.

जो ए खबर होती तुमकों, जैसी मेरी साहेबी बुजरक ।
तो बडा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इसक ॥ २६

यदि तुम्हें मेरे ऐश्वर्य एवं वर्चस्वकी जानकारी होती तो तुम अपने मुखसे अपने प्रेमकी प्रशंसा कभी नहीं करती.

अरस न छूटे छिन एक, तो क्यों देखो मेरा इसक ।
तो क्यों पाइए इसक बेवरा, आप अपने माफक ॥ २७

परमधामसे तुम एक क्षण भी अलग नहीं हुईं थीं इसलिए तुम मेरे प्रेमको कैसे देख सकतीं हो, तब यह निर्णय भी कैसे हो सकता कि मेरा प्रेम तुम्हारे समान है या अधिक ?

अरस साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इसक ।
तो रूहों हक सों कह्या, इसक अपना बुजरक ॥ २८

ब्रह्मात्माओंको परमधामके ऐश्वर्यका ज्ञान नहीं था इसलिए वे धनीके प्रेमको पहचान न सकीं. इसलिए उन्होंने धामधनीसे कहा कि हमारा प्रेम अधिक है.

ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इसक असल ।
तो बुजरक इसक अपना, रबद किया सबों मिल ॥ २९

न तो उन्हें धनीके वर्चस्वका ज्ञान था और न ही उन्होंने धनीके वास्तविक प्रेमको ही देखा था. इसीलिए सभी आत्माओंने मिलकर अपने प्रेमको अधिक बताते हुए विवाद किया.

दायम बातें इसक की, करत माहों माहें प्यार ।
खेलते हंसते रमते, करत बारंबार ॥ ३०

परमधाममें सदैव परस्पर प्रेमकी ही चर्चा होती है. हँसते, खेलते तथा स्मरण

करते समय भी वारंवार ब्रह्मात्माएँ यही चर्चा करतीं हैं.

एक इसक दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर ।
तो हमेसा अरस में, होता एह मजकूर ॥ ३१

परमधाममें सदैव प्रेमकी ही चर्चा चलती रही. इसलिए धामधनीने अपने मनमें यह निश्चय कर लिया कि ब्रह्मात्माओंको अपना प्रेम और ऐश्वर्य अवश्य दिखाना है.

ए बात हकें करनी, सुध देने सबन ।
इसक और पातसाही की, खबर न थी रूहन ॥ ३२

सभी ब्रह्मात्माओंको अपने स्वामित्व एवं प्रेमकी सुधि दिलानेके लिए परमात्माको ऐसा प्रेम संवाद करवाना था. क्योंकि आत्माओंको उनके प्रेम और स्वामित्वकी सुधि नहीं थी.

बहुत बातें हैं हक की, बीच अरस खिलवत ।
इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत ॥ ३३

परमधाम मूलमिलावामें धामधनीके साथ अनेक परिचर्चाएँ हुई. इस जिह्वासे इनका कितना वर्णन करूँ ?

एक साहेबी हक की, और इसक हक का ।
ए दोऊ कोई न चीन्हहीं, बीच अरस बका ॥ ३४

धामधनीका ऐश्वर्य (स्वामित्व) एवं प्रेम इन दोनोंको परमधाममें कोई भी ब्रह्मात्मा पहचान (समझ) न सकी.

एक जरा कोई वाहेदत का, ना सके जुदा होए ।
तोलों न चीन्हे कोई हक की, इसक साहेबी दोए ॥ ३५

अद्वैत परमधामसे कोई एक कण भी अलग नहीं हो सकता. इसलिए जबतक परमधामसे अलग न हों तब तक परब्रह्मका प्रेम और उनके ऐश्वर्य (स्वामित्व) की पहचान नहीं हो सकती.

अरस से जुदे होए के, ए देखे जो कोए ।
इसक साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए ॥ ३६

परमधामसे अलग होकर कोई अनुभव करना चाहे तभी उसे ज्ञात होगा कि परब्रह्मका प्रेम और प्रभुत्व (ऐश्वर्य) दोनों ही महान (श्रेष्ठ) हैं.

ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इसक है तुम ।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड कदम ॥ ३७

ब्रह्मात्माओंने परब्रह्मसे कहा, हे धनी ! आप अपना प्रभुत्व व प्रेम अवश्य दिखाएँ. इन दोनोंको दिखाकर आप हमें आनन्दित करें. हम आपके चरणकमलोंको पकड़कर बैठीं हैं.

जोलों जुदे होए नहीं, हक बका अरस सों ।
तोलों नजरों न आवहीं, अरस सुख खिलवत मों ॥ ३८

जब तक अखण्ड परमधामसे अलग होकर देखा न जाए तब तक परमधामके एकान्त सुखोंका अनुभव भी नहीं हो सकता.

ए अनहोनी क्यों होवहीं, झूठ न आवे बका माहें ।
और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहें ॥ ३९

यह असम्भव कार्य कैसे सम्भव हो सकता ? क्योंकि अखण्ड धाममें असत्यका प्रवेश ही नहीं है और अखण्ड धामकी सत्य आत्माएँ असत्यको कभी देख भी नहीं सकतीं.

जरा एक अरस अजीम का, उडावे चौदे तबक ।
तो रूहे बका क्यों देखहीं, झूठा खेल मुतलक ॥ ४०

दिव्य परमधामका एक कण भी चौदह लोकको उड़ा सकता है, तो ब्रह्मात्माओंके सामने यह झूठा खेल कैसे टिक सकेगा और वे इसे कैसे देख सकेंगी ?

अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर ।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर ॥ ४१

ऐसा विचार कर धामधनीने इस असम्भवको भी सम्भव कर दिया.उन्होंने

अखण्ड परमधाममें ही विस्मृतिके परदेमें ब्रह्मात्माओंको नश्वर खेल दिखाया.

मेहेर पूरी मेहेबूब की, बडी रूह रूहों ऊपर ।
इसक साहेबी अरस की, खेल देखाया और नजर ॥ ४२

श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम धनीकी पूर्ण कृपा है. उनको अपना प्रभुत्व व प्रेमका अनुभव करवानेके लिए उन्होंने उनकी दृष्टिमें विस्मृतिका आवरण डालकर एक नयाँ ही प्रकारका खेल दिखाया.

हकें नेक करी महंमद सों, सब म्याराज में मजकूर ।
सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूह अल्ला करी जहूर ॥ ४३

दर्शनके समय परब्रह्मने हजरत मुहम्मदके साथ जो कुछ चर्चाएँ कीं, वह भी ब्रह्मात्माओंको साक्षी दिलानेके लिए ही की थी उसीको सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीने तारतम ज्ञान द्वारा स्पष्ट कर दिया.

महामत कहे मेहेर मोमिनो, हकें करी वास्ते तुम ।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम ॥ ४४

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! परब्रह्म परमात्माने तुम्हारे लिए ही यह कृपा की है. धामधनीके अतिरिक्त अन्य कौन इस नश्वर संसारमें अखण्ड सुख प्रदान कर सकता है ?

प्रकरण ९ चौपाई ४४२

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें ।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इसक आया नाहें ॥ १

महामति अपनी आत्माको कहते हैं, हे आत्मा ! तूने अपने लिए कुछ नहीं किया. क्या तू केवल अन्य आत्माओंको जागृत करनेमें ही उलझी रहेगी ? तेरा सम्पूर्ण समय (उम्र) धामधनीके गुणगानमें ही व्यतीत हुआ तथापि तुझमें अभी तक प्रेम प्रकट नहीं हुआ.

हक सिर पर इन विध खडे, देखत ना हक तरफ ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ ॥ २

हे आत्मा ! धामधनी तेरे सिरपर ही खड़ें है फिर भी तू उनकी ओर नहीं देखती. प्रियतम धनीके प्रेमका स्वाद तुझे लग गया होता तो मुखसे एक शब्दका भी उच्चारण नहीं हो पाता.

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए ।
इन बका की खिलवत से, कछू तोकों भी नसीहत होए ॥ ३

हे आत्मा ! तू अपनी आत्माओंसे धामधनीके सम्बन्धमें बातें करती है. परन्तु अद्वैत परमधामकी इन एकान्त चर्चासे कुछ तुझे भी तो शिक्षा लेनी चाहिए.

ए सबद कहे तें नींद में, के सुपने करत स्वाल ।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल ॥ ४

हे आत्मा ! अब तक तू क्या नींदमें उपदेश दे रही थी क्या वे प्रश्नोत्तर भी स्वप्नके थे ? या तेरे उत्तर जागृत अवस्थाके थे, तू अपनी स्थिति पर विचार ही नहीं कर रही है.

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात ।
तूं कौन गुफ्तगोए किनकी, ना बिचारत हक जात ॥ ५

हे आत्मा ! तू कैसी बातें कर रही है, कौनसे स्थानकी बात कर रही है, तू स्वयं कौन है एवं किसकी चर्चा कर रही है ? तुझे यह भी ज्ञात नहीं है कि तू धनीकी अङ्गना है.

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह ।
जो तू बात करे जागते, तो तेरी रहे क्यों झूठी देह ॥ ६

हे आत्मा ! तू जो कुछ कह रही है, यह बात नींदमें तो नहीं हो सकती और स्वप्नमें भी यह सम्भव नहीं है. यदि तू जागृत अवस्थामें बात कर रही है तो तेरा यह नश्वर शरीर कैसे टिका रहा है ?

ए बात ना नींद सुपन की, जो तूं बात करे जागृत ।
तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत ॥ ७

ये बातें न तो निद्रा अवस्था की हैं और न ही स्वप्न की. यदि तू जागृत अवस्थामें बोल रही है तो तेरी कथनी, करनी और रहनी इस प्रकारकी नहीं होती तथा तुझे अपनी देहकी सुधि- बुद्धि भी नहीं रह पाती.

जो ए बात करे तूं जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर ।
नैनों पल क्यों लेवहीं, क्यों बोले और बेर ॥ ८

यदि तू वे सभी बातें जागृत अवस्थामें कर रही है तो तुझे नींद कैसे आ सकती ? जागृत अवस्थामें पलमात्र भी नेत्र बन्द नहीं किए जा सकते और दूसरी बार मुखसे अन्य कोई शब्द ही निकल नहीं सकता.

के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर ।
बेसहूर क्यों केहे सके, ए हक का गुझ जहूर ॥ ९

हे आत्मा ! या तू बुद्धि रहित है या विवेक बिना ही बोल रही है, किन्तु परब्रह्मके ये गूढ़ रहस्य विवेक बिना कैसे स्पष्ट होते ?

अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम ।
हुकमें वजूद रेहेत है, और हुकमें दिया इलम ॥ १०

अब यह निश्चित हो गया है कि धामधनीका आदेश ही तुझसे कहलवा रहा है. उसीके कारण तेरा तन टिका हुआ है और उसी आदेशने तुझे यह ज्ञान भी प्रदान किया है.

आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर ।
बेसक हुए हक अरस सों, सो दम रहे न हक बिगर ॥ ११

परब्रह्म परमात्माका तारतम ज्ञान हृदयमें उतर आनेसे यह देह कैसे खड़ी रह सकती है ? यह निश्चित हो जाने पर कि हमारा घर परमधाम है और हमारे स्वामी अक्षरातीत धनी हैं तो आत्मा क्षणमात्रके लिए भी धनीके बिना नहीं रह सकती.

अरस हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती ।
ज्यों जाग के कहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की ॥ १२

तारतम ज्ञानके द्वारा परमधाम तथा परब्रह्मके सम्बन्धमें कण-कणकी पहचान हो गई है. अब ऐसा लगने लगा कि आत्मा जागृत होकर यह सब कह रही है, परन्तु नश्वर देहके माध्यमसे ही तो बोला जा रहा है.

बडा होत है अचरज, बात जागृत माहें सुपना ।
जब कछू होवे जागृत, तब तो ए आगे ही से फना ॥ १३

यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि जागृत अवस्थाकी बात इस स्वप्नवत् जगतमें हो रही है. वस्तुतः जागृत होने पर तो स्वप्न पहले ही मिट जाता है.

जो विचार विचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत ।
इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत ॥ १४

यदि अन्तःकरण पूर्वक विचार कर देखें तो ज्ञात होगा कि परमात्मा असम्भवको भी सम्भव बना देते हैं. उनके सम्मुख किसीका बल (वश) नहीं चलता है वे जैसा चाहते हैं वैसा ही कर दिखाते हैं.

अरस की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या ॥ १५

जरा विचार कर देखो, परमधामकी ब्रह्मात्माओंको यह स्वप्न कैसे आया ? वस्तुतः यह भी परमात्माने जैसा चाहा वैसा ही किया है.

देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, विचार देखो दिल से ॥ १६

उन्होंने ब्रह्मात्माओंकी स्वप्नकी देहको भी ज्योंका त्यों रखा और तारतम ज्ञानके द्वारा उन्हें निश्चित रूपसे जागृत भी कर दिया. यह भी तो परमात्माने जैसा चाहा वैसा ही किया है, इस पर विचारपूर्वक तो देखो.

आप अरस देखाइया, ज्यों देखिए नींद उडाए ।
जरा सक दिल ना रही, यों अरस दिया बताए ॥ १७

धनीने इस स्वप्नवत् संसारमें भी हमें परमधामका ऐसा दर्शन करवाया जैसे

नींदसे जागृत होने पर किया जाता है. उन्होंने इस प्रकार परमधामके दर्शन (अनुभव) करवाए कि उसके विषयमें मनमें लेशमात्र भी शङ्का नहीं रही.

फेर देखों सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग ।
फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग ॥ १८

इधर स्वप्नकी ओर दृष्टि डालते हैं तो लगता है कि यह स्वप्न (का शरीर) ज्योंका त्यों हमारे साथ जुड़ा हुआ है तथा अभी तक अज्ञानताकी नींद ही नहीं मिटी है, मानों किसी औरने ही जागकर परमधामके दर्शन किए है.

जो देखूं अरस जागते, तो इत नाहीं जरा सक ।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खडा मुतलक ॥ १९

जब जागृत होकर परमधामकी ओर देखती हूँ तो उसके विषयमें कोई सन्देह ही नहीं रहता, फिर स्वप्नकी ओर दृष्टि डालती हूँ तो यह स्वप्न वैसा ही खड़ा दिखाई देता है.

ए बातें नूर जमाल की, इनमें कैसा तअजुब ।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढांप के खोली अब ॥ २०

ये सम्पूर्ण लीलाएँ अक्षरातीत धनीकी हैं इसलिए इसमें आश्चर्य ही क्या है ? वे तो पलमात्रमें लाखों जन्मोंके ऐसे दृश्य एक साथ दिखा देते हैं तब ऐसा लगता है कि हमारी आँखें अभी-अभी बन्द होकर खुल गईं हैं.

एक खसखस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक ।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक ॥ २१

परब्रह्म ऐसे समर्थ हैं कि वे एक खसखसके दानेमें भी चौदह लोकोंको दिखा सकते हैं. इसलिए इसमें क्या आश्चर्य है कि उन्होंने अखण्ड परमधाममें ही ब्रह्मात्माओंको नश्वर खेल दिखाया.

ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन ।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावें दिन ॥ २२

परब्रह्म परमात्माकी लीलाएँ बड़ी विचित्र हैं इसलिए उन पर कोई भी सन्देह न करें. वे चाहे तो दिनमें रात और रातमें दिन भी लाकर दिखा सकते हैं

अर्थात् परमधाममें बैठाकर वे मायाको दिखा सकते हैं और संसारमें बैठाकर परमधामको भी दिखा सकते हैं.

ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अरस माहें ।
रूहे बकाएं लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें ॥ २३

ऐसे अनेक झूठे खेलोंका अनुभव धामधनी परमधाममें बैठे हुए करवा ही देते हैं. तदनुसार ब्रह्मधामकी ब्रह्मात्माओंने भी खेलमें स्वप्नकी देह धारण की है, वास्तवमें जिसका कुछ भी अस्तित्व नहीं है.

तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत ।
कजा चौदे तबक की, इन तन पें करावत ॥ २४

ब्रह्मात्माओंने संसारमें नश्वर तन धारण करके भी अक्षरातीतसे अपना सम्बन्ध जोड़ा है. इसीलिए धामधनी इन्हीं तनोंके माध्यमसे चौदह लोकोंके लोगोंका न्याय करवा रहे हैं.

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान ।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान ॥ २५

परब्रह्म परमात्माकी ऐसी अनेक आश्चर्यजनक बातें हैं जिनका वर्णन इस नश्वर जिह्वासे कैसे हो सकता है ? अद्वैत परमधामके ऐसे धनीको मैं तो इसी नश्वर देहके स्वामी कहकर पुकार कर रही हूँ.

दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन ।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन ॥ २६

ऐसा झूठा तन धारण करके भी मैं परमात्माको अपना मित्र कहकर पुकारती हूँ. तारतम ज्ञानसे मैंने अपना वतन देख लिया है इसीलिए मैं अपने सम्बन्धको दृढ़तासे कह रही हूँ.

एह विध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन ।
कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन ॥ २७

इस प्रकार मैं अपने धनीकी बातें कितनी कहूँ, उनकी लीलाओंमें आश्चर्य ही क्या ? यदि आत्मस्वरूपसे विचार कर देखें तो धनीकी ऐसी अनेक विचित्र लीलाएँ हैं.

अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए ।
ए भी जानो त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए ॥ २८

हे धनी ! अब कहना भी तो आपको ही है. आपसे चतुराई कैसी ? आप जैसा चाहें वैसा करें. मैं तो इस खेलमें आकर विवश हो गई हूँ.

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए ।
ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ्यो जाए ॥ २९

हे धनी ! मैंने जितनी भी बातें कीं हैं उन सबमें निश्चित ही मेरी चतुराई भरी हुई है. वस्तुतः यह चतुराई भी आपने ही दी है. अन्यथा मेरेसे तो एक शब्द भी बोला नहीं जाता.

एह बात रही हुकम पर, करें हक सांची सोए ।
या राजी या दलगीर, ए हाथ खसम के दोए ॥ ३०

अन्तमें सारांश तो यही है कि ये सभी बातें धनीके आदेश पर ही निर्भर हैं. धामधनी जो कुछ करते हैं वह ठीक ही होता है. वे प्रसन्न रखें या उदास (दुःखी) रखें दोनों ही बातें उनके ही हाथमें हैं.

उमर तो सब चल गई, अब आया उठने का दिन ।
या तो उठाओ हंसते, ज्यों जानों त्यों करो रूहन ॥ ३१

हे धनी ! इस देहकी आयु अब समाप्त होने जा रही है. अब तो जागृत होनेका समय आ गया है. या हमें आप हँसते हुए (प्रसन्नताके साथ) जागृत करें या हमारे लिए जैसा चाहें वैसा करें.

नींद आई हुकम से, हुकमें हुआ सुपन ।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन ॥ ३२

धनीके आदेशसे ही हमें अज्ञानरूपी नींद आई और उन्हींके आदेशसे स्वप्नवत् जगत भी तैयार हुआ अब उनके आदेशसे ही हमें जागृत होना है. वस्तुतः आदेशके बिना कुछ भी नहीं हो सकता.

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें ।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें ॥ ३३

धामधनीने मुझे ऐसा ज्ञान दिया, जो चौदह लोकोंमें कहीं भी नहीं है. यहाँ तक कि वह अक्षरधाममें भी नहीं है. ऐसे दिव्यज्ञानको धामधनीने मुझे इस स्वप्न जगतमें आकर दिया.

ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत ।
मुझ बिना किने न पाइया, मेरी बेसक रूह जानत ॥ ३४

या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक ।
तिनों नीकें कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इसक ॥ ३५

ऐसा दिव्य तारतमज्ञान अक्षरातीत धनीके अतिरिक्त अन्य कौन प्रदान कर सकता है ? वस्तुतः मेरे अतिरिक्त दूसरा कोई इसे ले भी नहीं सका. इस बातको मेरी आत्मा ही निश्चित रूपसे जानती है. या तो ब्रह्मात्माएँ इसे जानतीं हैं जिन्होंने यह सन्देह रहित ज्ञान प्राप्त किया है. उन्होंने ही इस ज्ञानको भलीभाँति पहचाना है और धनीके प्रेमको भी समझ लिया है.

मोमिन तिन को जानियो, नूर जमाल सों निसबत ।
मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत ॥ ३६

ब्रह्मात्माएँ वही कहलाती हैं, जिनका सम्बन्ध अक्षरातीत धनीसे है. जिन्होंने धनीके तारतम ज्ञानरूपी निधिको प्राप्त कर लिया है वे ही मेरी बातोंकी साक्षी देंगी.

अब इन ऊपर क्या बोलना, आगूं मेहेबूब तुम ।
जिन विध जानो त्यों करो, दोऊ तन तले कदम ॥ ३७

हे मेरे प्रियतम धनी ! अब इससे अधिक मैं आपसे क्या कहूँ ? आप जैसा चाहें वैसा करें. हमारी पर-आत्मा तथा स्वप्नके तन दोनों ही आपके चरणोंमें हैं.

जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर ।
जो देखाया इलमें, या देखाया नजर ॥ ३८

आप धामधनीके मनमें जो इच्छा उत्पन्न हुई उसे मैंने भलीभाँति देख लिया. चाहे आपने इसे तारतमज्ञानसे अनुभव करवाया अथवा आत्मदृष्टिके द्वारा साक्षात् अनुभव करवाया.

और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब ।
जो कछू तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब ॥ ३९

इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी इच्छा आपके मनमें शेष रह गई हो अथवा आप जो कुछ भी दिखाना चाहें वह सब हम ब्रह्मात्माएँ अवश्य देखेंगी.

केहेना केहेलावना ना रह्या, ऐसा तुम दिया इलम ।
तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥ ४०

हे धनी ! आपने हमें ऐसा तारतमज्ञान प्रदान किया है, जिससे अब कहना अथवा कहलाना कुछ भी शेष नहीं रहा. (इसी ज्ञानके द्वारा हमें ज्ञात हुआ कि) आपके बिना अन्य कुछ है ही नहीं. इसलिए आप जैसा चाहें वैसा ही करें.

बोलिए सो सब बंधन, ए भी बोलावत तुम ।
ए सहूर भी तुम देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥ ४१

हे धनी ! मैं जो कुछ बोल रही हूँ वह आपके आदेशके ही आधीन है. आप ही मुझसे यह बुलवा रहे हैं. यह विवेक भी आपने ही प्रदान किया है, इसलिए आप जैसा चाहें वैसा ही करें.

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें ।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें ॥ ४२

मैं आपको मेरे स्वामी कहकर इसीलिए पुकार करती हूँ कि मुझमें अब कोई अहंभाव शेष न रहे. अखण्ड परमधाममें तो आपकी अङ्गना पर कोई दोष लग ही नहीं सकता.

ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम ।
ठौर ना कोई बोलन की, बैठी हों तले कदम ॥ ४३

यह ज्ञान भी तो आपने ही प्रदान किया है, इसलिए हे धनी ! मैं आपसे और क्या कहूँ ? अन्यथा कहनेका कोई अन्य स्थान ही तो नहीं है क्योंकि मैं आपके ही चरणोंमें बैठी हूँ.

खसम खसम तो केहेती हों, जो तुम देखाई निसबत ।
भार भी तुमहीं देओगे, तुम ही देओगे लज्जत ॥ ४४

मैं आपको मेरे स्वामी कहकर इसीलिए पुकार करती हूँ कि आपने ही यह सम्बन्ध दिखाया है. इस सम्बन्धके पालनका दायित्व भी आप ही देंगे और अपनी अङ्गनाको अखण्ड सुखकी अनुभूति भी आप ही कराएँगे.

दोऊ तन तलें कदम के, आतम पर आतम ।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम ॥ ४५

मेरे दोनों ही तन–यह नश्वर तन अथवा पर आत्मा, आपके ही चरणोंमें हैं. तारतमज्ञानने यह निश्चित कर दिया है कि इसमें कोई सन्देह ही नहीं है.

सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम ।
सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम ॥ ४६

आप हमें जो कुछ सिखाएँ, चलाएँ या हमसे जो कुछ कहलाएँ, यह सब आपके आदेशके अधीन (हाथमें) है. इस विषयमें तारतम ज्ञानने सभी सन्देहोंको दूर कर दिया है. इसलिए हे धनी ! अब मैं आपसे क्या कहूँ ?

अन्तर माहें बाहेर की, सब जानत हो तुम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥ ४७

हमारे बाहर, अन्दर (मन) अथवा अन्तरात्माकी सभी बातें आप जानते हैं इस विषयमें भी तारतमज्ञानने ही मुझे निःसन्देह बना दिया है. हे धनी अब आपसे अधिक क्या कहूँ ?

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम ।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम ॥ ४८

सब सुन्दरसाथ जागृत होकर एकत्रित होगा यह भी आपके आदेशके आधीन

है. इन सभी बातोंका सन्देह तारतम ज्ञानने दूर कर दिया है. हे धनी ! अब मैं आपसे अधिक क्या कहूँ ?

खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम ।
इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम ॥ ४९

इस नश्वर खेल (ब्रह्माण्ड) की रचना कर हमें इसमें उतारा गया है, यह पहचान भी ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञानसे ही हुई है, इसमें भी कोई सन्देह नहीं है. हे धनी ! इससे अधिक मैं आपसे क्या कहूँ ?

हुकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥ ५०

आपके आदेशने ही हमारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं और जो शेष रह जाएँगी वे सभी आपके आदेशके अधीन होंगी. यह भी तारतम ज्ञानने ही स्पष्ट कर दिया है. अतः इससे अधिक क्या कहा जाए ?

दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम ।
जिन विध राखो त्यों रहूं, कहा कहूं तुमें खसम ॥ ५१

जितने दिन व्यतीत हो गए हैं वह आप ही जानते हैं और जो शेष रह गए हैं वह भी आप ही जानते हैं. आप जिस स्थितिमें रखना चाहोगे मैं उसी स्थिमें रहूँगी. हे धनी ! अब इससे अधिक मैं क्या कहूँ ?

ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम ।
ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम ॥ ५२

आपके अतिरिक्त अन्य कोई स्थान ही नहीं है. यह भी तारतम ज्ञानने ही स्पष्ट कर दिया है. यह विवरण भी आप ही कहलवा रहे हैं तभी मैं कह रही हूँ.

चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी फिरस्तों अरस ।
इन सिर ला मकान है, आगूं सबद न चले निकस ॥ ५३

इन चौदह लोकोंमें सर्वोपरि वैकुण्ठ है जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि

देवोंका धाम है. इससे आगे शून्य निराकार है. उससे आगे तो शब्दकी गम ही नहीं है.

फना तले ला मकान लग, आगूं नूर मकान बका ।
उततें उतरे सो चढे, और चढ ना सके इत का ॥ ५४

शून्य-निराकार पर्यन्तकी सभी सृष्टि कालके अधीन है. इससे आगे अखण्ड अक्षर धाम है. वहाँसे जो आत्माएँ इस नश्वर जगतमें आती हैं वे ही पुनः वहाँ लौट पाती हैं. अन्य कोई भी जीव वहाँ तक पहुँच नहीं पाते.

देख्या बेचून बेचगून को, और बेसब्बी बेनिमून ।
निराकार देख्या ला निरंजन, ए बेसक पडी सब सुन ॥ ५५

कुरानमें जिनको बेचूँ, बेचगूँ, बेशब्बीह तथा बेनिमून कहा है, उनको ही मैंने शास्त्रोंमें निराकार, निरञ्जन आदि कहते हुए देखा. निश्चय ही वे सब शून्यमें ही समाविष्ट हैं.

अव्वल इलमें देखाइया, आखर बेसक इलम ।
चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे तले कदम ॥ ५६

सृष्टिके आरम्भसे लेकर अन्त तकका अनुभव तारतम ज्ञानने करवा दिया है. इतना ही नहीं चौदह लोकोंमें दृष्टि दौड़ाकर अक्षरधाम पर्यन्त देखा. अन्तमें यही पाया कि आपके चरणकमलके अतिरिक्त अन्य कोई स्थान ही नहीं है.

और नजीक न कोई फिरस्ता, कोई नाहीं इन्सान और ।
हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर ॥ ५७

आपके चरणोंके निकट न कोई देवता है और न ही कोई मनुष्य है. श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही आपके चरणोंमें हैं. वस्तुतः यहाँ तक और कोई पहुँच ही नहीं सकता.

गिरो नजीकी फिरस्ते, इनका नूर मकान ।
ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ ना सके लाहूत आसमान ॥ ५८

ब्रह्मात्माओंके निकटका समुदाय ईश्वरीसृष्टिका है और उनका धाम अक्षरधाम

है. वे वैकुण्ठमें भी नहीं रह सकतीं और परमधाममें भी पहुँच नहीं सकती.

नूर मकान का खावंद, जिनके होत एक पल ।
कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही छिन में जात हैं चल ॥ ५९

अक्षरधामके स्वामी अक्षरब्रह्म हैं. उनके एक पलमें करोड़ों ब्रह्माण्डोंकी रचना होती है और उसी क्षणमें उनका लय भी हो जाता है.

इन नूर मकान का खावंद, जाको नामै नूर जलाल ।
आवत दायम दीदार को, जित अरस नूर जमाल ॥ ६०

अक्षरधामके इन स्वामीको कुरानमें नूर जलाल कहा गया है. वे अक्षरातीत धनीके दर्शनके लिए नित्य प्रति परमधाम आया करते हैं.

दई साख रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे जबराईल इत ।
कहे पर जलें तजल्ली से, ताथें जोए ना उलंघत ॥ ६१

रसूलने कुरानमें यह साक्षी दी है कि जिब्रील फरिश्ता भी परमात्माके इस धाममें पहुँच नहीं सकता. वह कहता है कि परमधामके तेजसे मेरे पङ्ख जलते हैं. इसीलिए वह यमुनाको पार नहीं कर सकता.

इन अरस नूर जमाल के, हादी रूहें इन दरगाह मांहें ।
रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई कांहें ॥ ६२

अक्षरातीत परमात्माके इस परमधाममें श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ रहती हैं. सभी ब्रह्मात्माएँ धामधनीके चरणकमलोंमें बैठी हुई हैं. इन चरणोंके अतिरिक्त इनका अन्य कोई स्थान ही नहीं है.

नूर जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत ।
नूर जमाल के कदमों बडी रूह रूहें बसत ॥ ६३

अक्षरब्रह्म भी रङ्गमहलके बाहरसे ही अक्षरातीतके दर्शन कर लौट जाते हैं. अक्षरातीतके चरणोंमें तो श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही रहतीं हैं.

ए ना खबर नूरजलाल को, सुख नूरजमाल कदम ।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूहअल्ला इलम ॥ ६४

अक्षरब्रह्मको भी अक्षरातीतके चरणकमलोंके सुखका अनुभव नहीं है.

सद्गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञानने ही मुझे इस विषयमें निःसन्देह कर दिया है.

हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तलें कदम ।
और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम ॥ ६५

श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको जो खेल दिखाया गया उसे उन्होंने धामधनीके चरणोंमें ही बैठकर देखा. धामधनीकी अङ्गनाओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी यह रहस्य स्पष्ट नहीं कर सकता.

मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम ।
दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे तलें कदम ॥ ६६

तारतमज्ञानने ही इन सभी बातोंकी पहचान करवाकर मुझे शङ्का रहित कर दिया है. वस्तुतः इस ज्ञानमें लेशमात्र भी सन्देहका स्थान नहीं है. इसी ब्रह्म ज्ञानने हम सबको निशङ्क बना दिया है कि आपके चरणोंके अतिरिक्त हमारा अन्य कोई स्थान नहीं है.

रूहें बारे हजार नूर बडी रूह के, बडी रूह नूर खसम ।
ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम ॥ ६७

बारह हजार ब्रह्मात्माएँ श्रीश्यामाजीकी अङ्गरूपा हैं और श्यामाजी श्रीराजजीकी अङ्गरूपा हैं. हमने निश्चय ही यह देख लिया है कि आपके चरणोंके अतिरिक्त हमारा कोई स्थान नहीं हैं.

फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम ।
जाने जिन भूलें रूहें खेल में, याद देने हक कदम ॥ ६८

धामधनीने हमें वारंवार निःसन्देह बनाया. इसके लिए ही उन्होंने तारतम ज्ञान भी भेजा. ब्रह्मात्माएँ इस खेलमें भूल न जाएँ तथा उनको धनीके चरणोंकी याद दिलानेके लिए यह तारतम ज्ञान भेजा गया.

ए हादी रूहें इन कदम तलें, जिनको कहे मोमिन ।
फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुंजी ऊपर इन ॥ ६९

धामधनीके इन चरणोंमें श्यामाजीकी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माएँ बैठी हुई हैं जिनको

कुरानमें मोमिन कहा गया है. कुरान तथा उसमें लिखे गए सङ्केत तथा उनको स्पष्ट करनेवाली कुञ्जी (तारतमज्ञान) भी इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए आई है.

कुंजी हाथ रूहअल्ला, और रसूल हाथ फुरमान ।
भेजे इमाम पें खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान ॥ ७०

परब्रह्म परमात्माने इस नश्वर खेलमें सद्गुरुके हाथमें कुञ्जी तथा रसूलके हाथमें कुरानका सन्देश इमाम पर भेजा. श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंने उन सङ्केतोंको ग्रहण किया है.

नासूत में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम ।
एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तलें कदम ॥ ७१

इस नश्वर जगतमें बैठाकर भी प्रियतम धनीने सन्देहको दूर करनेवाला तारतम ज्ञान भेजा. इससे लेशमात्र भी शङ्का शेष नहीं रही कि हम वस्तुतः धामधनीके चरणोंमें ही बैठी हुईं हैं.

ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तलें कदम ।
फरामोसी हम को मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम ॥ ७२

हमारा सन्देह इसीलिए समाप्त हो गया कि हम धनीके चरणकमलकी छायामें ही बैठी हुईं हैं. वस्तुतः हमारी अज्ञानतारूपी आवरणको दूर करनेके लिए ही आपने अपना तारतम ज्ञान भेजा है.

आया फुरमान खेल देखावने, और आया हक इलम ।
ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तलें कदम ॥ ७३

इस खेलमें भी हमें आपकी साक्षी देनेके लिए यह कुरान आया और उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेके लिए तारतम ज्ञानका अवतरण हुआ. वस्तुतः हम स्वयं आपके चरणोंमें ही बैठीं थीं तभी तो इस खेलको भली भाँति देख सकीं.

तुम मोहे ऐसा देखाइया, एक वाहेदत में हैं हम ।
दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तलें कदम ॥ ७४

आपने मुझे ऐसा अनुभव करवाया कि हम अद्वैत परमधाममें ही हैं. आपके

चरणोंकी छत्रछायाके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं.

ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर ।
दिलसों रूहों विचारिया, कछू है ना वाहेदत बिगर ॥ ७५

यह ज्ञान भी तो आपने ही दिया है जिसके कारण हम आपको ही अपने धनीके रूपमें निश्चय कर सकीं. तब सभी आत्माओंने हृदयपूर्वक निश्चय किया कि अद्वैत स्वरूपके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है.

ए तेहेकीक तुम कर दिया, तुम बिना कछुए नाहें ।
ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें ॥ ७६

हे धनी ! आपने यह निश्चय करा दिया कि आपके अतिरिक्त दूसरा कुछ भी नहीं है. यह भी आप ही कहला रहे हैं. अब तो मुझमें अहंभावका कोई अवकाश नहीं है.

ए जिन विध हक बोलावत, तिन विध रूह बोलत ।
हम बैठे तलें कदम के, ए हम पें हक कहावत ॥ ७७

धामधनी जैसे बुलवा रहे हैं उसी प्रकार आत्मा बोल रही है. हम सभी ब्रह्मात्माएँ तो धनीके चरणोंमें ही बैठीं हुईं हैं हमसे यह बात भी धामधनी ही कहला रहे हैं.

अनजानत को इलमें, बेसक दिए देखाए ।
कदमों नूर जमाल के, हम सब रूहें लई बैठाए ॥ ७८

मुझ जैसी अज्ञानीको भी इसी तारतमज्ञानने निःशङ्क बना दिया और यह भी अनुभव करवाया कि हम सभी आत्माएँ अक्षरातीत धनीके चरणोंमें ही बैठीं हुईं हैं.

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत ।
बैठी कदम तलें हक, ए भी तुम कहावत ॥ ७९

हे धनी ! आपके बैठाने पर ही मैं बैठी हुई हूँ, मुझमें अपनी कोई शक्ति ही नहीं है. मैं धामधनीके चरणोंमें बैठी हूँ इतना भी आप ही कहला रहे हैं.

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम ।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम ॥ ८०

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! मेरे लिए अब कोई उद्यम (प्रयत्न) शेष नहीं रहा. निश्चय ही आपके चरणकमलोंके अतिरिक्त अब मेरा कोई स्थान ही नहीं है.

प्रकरण १० चौपाई ५२२

खिलवत हक हादी रूहन की

(श्री राजजी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी अन्तरङ्ग लीला)

खिलवत हक रूहन की, जो इसक रूहों असल ।
ए बातून बका अरस की, बीच न आवे फना अकल ॥ १

परब्रह्म परमात्माके साथ हुई एकान्त बैठकमें ब्रह्मात्माओंने अपने जिस वास्तविक प्रेमकी बात कही है वह परमधामकी गूढ़ बात होनेसे नश्वर जगतकी बुद्धिमें नहीं आ सकती.

रूहें बडी रूहसों मिलके, बहस किया हकसों ।
हम तुमारे आसिक, इसक है हममों ॥ २

ब्रह्मात्माओंने श्यामाजीके साथ मिलकर धामधनीसे परिसम्वाद करते हुए कहा, हे धनी ! हम आपके प्रेमी (आशिक) हैं तथा हममें अधिक प्रेम है.

बडी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इसक मेरा काम ।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इसकै में मेरा आराम ॥ ३

तब श्यामाजीने कहा कि, तुम ठीक कह रही हो परन्तु मेरा तो कार्य ही प्रेम होनेसे सर्व प्रथम मैं धामधनीसे फिर अपनी अङ्गनाओंसे प्रेम करती हूँ, प्रेम ही तो मेरा विश्राम स्थल है.

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक ।
इसक तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक ॥ ४

ब्रह्मात्माओंकी इस चर्चाको सुनकर धामधनीने इस प्रकार उत्तर दिया, हे ब्रह्मात्माओ ! यद्यपि तुम मुझसे बहुत प्रेम करतीं हो तथापि मैं तुम्हारा प्रेमी (आशिक) हूँ.

हक आसिक बडी रूह का, और रूहों का आसिक ।
ए क्यों कहिए सीधा इसक, बंदों का आसिक हक ॥ ५

धनीके वचनोंको सुनकर ब्रह्मात्माओंको आश्चर्य हुआ कि श्रीराजजी स्वयंको श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका प्रेमी (आशिक) कहते हैं. धामधनी अपनी आत्माओंके आशिक कैसे हो सकते हैं, इसे प्रेमका सीधा ढंग कैसे कहा जाए ?

रूहें चाहिए आसिक हकके, और आसिक बडी रूह के ।
और बडी रूह भी आसिक हक की, सीधा इसक बेवरा ए ॥ ६

वास्तवमें तो ब्रह्मात्माओंको ही धामधनी तथा श्यामाजीके प्रेमी (चाहक) होना चाहिए. श्रीश्यामाजी भी श्रीराजजीके प्रेमी (चाहक) हैं. प्रेमका स्पष्ट विवरण तो यही है.

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुमसों इसक जो मेरे दिल ।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल ॥ ७

तब धनीने कहा, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम सभी मेरे ही अङ्गस्वरूपा हो. मेरे हृदयमें तुम्हारे प्रति जो प्रेम है इसका अनुभव तुम इस अखण्ड पमरधाममें कैसे कर पाओगी ? सब मिलकर इस पर विचार तो करो.

तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इसक ।
और देखाऊं साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक ॥ ८

तब परब्रह्म परमात्माके मनमें यह विचार आया कि मैं इन ब्रह्मात्माओंको अपना प्रेम और प्रभुत्व दिखा दूँ. क्योंकि ये इन दोनों बातोंको निश्चय ही नहीं जानतीं हैं.

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूर जलाल ।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इसक नूरजमाल ॥ ९

कैसा इसक बडी रूह सों, कैसा इसक साथ रूहन ।
बडी रूह का इसक हक सों, इसक हक सों कैसा है सबन ॥ १०

तब परब्रह्मके सत अङ्ग स्वरूप अक्षरब्रह्मके मनमें भी यह विचार उत्पन्न

हुआ कि मैं अक्षरातीत धनीके प्रेमका अनुभव करूँ. श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ श्रीराजजीका कैसा प्रेम है तथा श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका श्रीराजजीके साथ कैसा प्रेम है ?

एह रबद हमेसा रहे, बडी रूह रूहें और हक ।
अब घट बढ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इसक ॥ ११

परमधाममें परब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें इस प्रकारका प्रेम सम्वाद सदैव होता रहता है. परन्तु प्रेमसे परिपूर्ण अद्वैत भूमिकामें क्या कम है तथा क्या अधिक है यह कैसे जाना जाए ?

असल जुदागी अरस में, सो तो कबूं न होए ।
वाहेदत इसक घट बढ, क्यों कर होवे दोए ॥ १२

दिव्य परमधाममें वियोग तो कभी हो ही नहीं सकता. इसलिए अद्वैत भूमिकामें प्रेमका कम अधिक होना कैसे सम्भव हो सकता है ?

वाहेदत कहिए इनको, तन मन एक इसक ।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत का बेसक ॥ १३

ब्रह्मात्माओंको अद्वैतस्वरूपा इसीलिए कहा जाता है कि उनके दिव्य तन और मनमें प्रेम समाया हुआ है. उनमें क्षणभरका भी वियोग नहीं है इसलिए वे निःसन्देह अद्वैतस्वरूपा हैं.

तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अरस वाहेदत ।
इसक बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत ॥ १४

अद्वैत परमधाममें इस प्रेम विवादका निर्णय होना सम्भव नहीं है. इसका निर्णय तो तभी हो सकता है जब कुछ समयके लिए वियोग हो जाए.

जो इसक वाहेदत का, ए जो किया मजकूर ।
ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न पल एक दूर ॥ १५

अद्वैत भूमिकामें प्रेमके विषयमें जो परिचर्चा (सम्वाद) हुई उसका निर्णय वहाँ कैसे हो सकता ? क्योंकि वहाँ पर पलमात्रके लिए भी कोई दूर नहीं होता.

अरस बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए ।
तो हक इसक का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए ॥ १६

अखण्ड परमधाममें तो स्वप्नमें भी वियोग होना सम्भव नहीं है. फिर परब्रह्मके प्रेमका विवरण ब्रह्मात्माएँ कैसे प्राप्त कर सकती हैं ?

हकें कह्या रूहन को, मैं देखाऊं इसक ।
ए बेवरा इसक का, तुम पाओगे बेसक ॥ १७

उस समय परब्रह्मने ब्रह्मात्माओंसे कहा, मैं तुम्हें अपना प्रेम दिखाऊँगा. तब तुम मेरे प्रेमका विवरण निश्चय ही प्राप्त कर सकोगी.

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो कदम पकड के ।
ए तुम इसकै से पाओगे, आए मिलो मुझसे ॥ १८

तुम मेरे चरण पकड़ कर बैठो. मैं तुम्हें माया (फरामोशी) के परदेमें छिपा दूँगा. इन चरणोंको तुम पुनः प्रेमसे ही प्राप्त कर सकोगी और मुझसे आ मिलोगी.

ए इसक तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥ १९

जब तुम पहले मुझे भूल जाओगी तभी मेरे प्रेमका अनुभव कर पाओगी. जैसे ही तुम स्वयंको मुझसे अलग समझने लगोगी तब मैं तुम्हें स्मरण करवानेके लिए रसूलको भेजूँगा.

मैं भेजो किताबत तुम को, सब इत की हकीकत ।
तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत ॥ २०

परमधामकी यथार्थता समझानेके लिए मैं तुम्हारे पास विभिन्न धर्मग्रन्थ भेजूँगा. तब तुम कहोगी कि किन परमात्माने ये ग्रन्थ भेजे हैं ?

सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम ।
रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे ना तुम ॥ २१

उस समय तुम यह भी कहोगी कि हमारे परमात्मा कहाँ हैं ? हम कौन हैं

तथा यह खेल किस प्रकारका है ? तब मेरे रसूल तुम्हें इस घरकी साक्षियाँ देंगे तथापि तुम उनका स्वीकार नहीं करोगी.

कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर ।
क्योंकर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और ॥ २२

उस समय तुम यही कहोगी कि हमारा घर कहाँ है ? यह जगत क्या है ? हम यहाँ कैसे आईं ? क्या वैकुण्ठके अतिरिक्त भी अन्य कोई श्रेष्ठ स्थान है ?

पढोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखूंगा इसारत ।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत ॥ २३

धर्मग्रन्थोंके द्वारा भेजे गए सङ्केत तथा साक्षियोंको तुम पढ़ोगी तथा मनमें विचार भी करोगी तथापि मायाकी बेसुधि तुमसे नहीं छूटेगी.

मैं लिखूंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम ।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम ॥ २४

मैं परमधामके सङ्केत लिखकर भेजूँगा फिर अपना ज्ञान (तारतम ज्ञान) भी सिखाऊँगा. उस ब्रह्मज्ञानसे तुम सब कुछ पहचान भी जाओगी तथापि तुमसे मायाकी मिथ्या रीति (रसम) नहीं छूटेगी.

तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर ।
मैं आए इलम देऊं अरस का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर॥२५

तुम नश्वर संसारमें जाकर अपने अलग-अलग घर बनाकर बैठोगी. मैं स्वयं आकर तुम्हें परमधामका ज्ञान दूँगा तथापि तुम किसी प्रकार जागृत नहीं होगी.

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेष लेसी तुम माफक ।
देसी अरस की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक ॥ २६

मैं अपनी अङ्गना श्यामाजीको (सद्गुरु बनाकर)भेजूँगा. वह तुम्हारी जैसी ही नश्वर देह धारण कर आएगी. वह तुम्हें जागृत करनेके लिए परमधामके सङ्केत समझाएगी तथापि तुम परमात्माकी पहचान नहीं कर सकोगी.

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ॥ २७

उस समय सद्गुरु तुम्हें रो-रोकर परब्रह्मके वचन सुनाएँगे. उन वचनोंको सुनकर तुम भी रोओगी. परन्तु कोई भी सचेत नहीं हो पाओगी.

खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख ।
मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड न सको दुख ॥ २८

तुम नश्वर जगतके दुःखमय खेल देखोगी. उस समय मैं परमधामके सुखोंका स्मरण कराऊँगा. इसके लिए मैं सभी साक्षियाँ दूँगा तथापि तुम उन नश्वर दुखोंको छोड़ नहीं सकोगी.

मैं तुमारे वास्ते, करोंगा कई उपाए ।
ए बातें सब याद देऊंगा, जो करता हों इसदाए ॥ २९

तुम्हें जागृत करनेके लिए मैं अनेक उपाय करूँगा. यहाँकी इन सभी बातोंका स्मरण कराऊँगा. अभी आरम्भसे ही मैं यह कह रहा हूँ.

क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जुदे होसी माहें खेल ।
ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है कदर लैल ॥ ३०

तब ब्रह्मात्माएँ कहने लगीं, हे धनी ! हमसे ऐसी भूल कैसे होगी ? क्या हम खेलमें आपसे अलग हो जाएँगी ? हमारी बुद्धि ऐसी क्यों होगी ? यह अज्ञानताकी रात्रि कैसी है ?

दूर तो करोगे नहीं, कदम तलें बैठे हक ।
हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे होसी मुतलक ॥ ३१

हे धनी ! आप हमें दूर तो नहीं कर रहे हैं. हम तो आपके चरणोंमें ही बैठीं हैं. फिर भी हम आपके आदेशको लौटाएँगी ? क्या निश्चय ही हम ऐसी शून्यहृदया हो जाएँगी ?

तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम ।
क्यों होसी हम नादान, जो ऐसा करें जुलम ॥ ३२

आपके बिना हम एक पल भी नहीं रह सकतीं. फिर हम मूर्ख (नादान) बनकर ऐसा घोर अन्याय कैसे करेंगी ?

जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए ।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए ॥ ३३

हे धनी ! आप जैसा कह रहे हैं ऐसा हमसे कभी नहीं हो सकता. चाहे आप हमें सौ बार परख कर देख लें, हम ब्रह्मात्माएँ ऐसा कभी नहीं करेंगी.

आप भूलें या हक कदम, या भूलें अरस घर ।
ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर ॥ ३४

हे धनी ! हम स्वयंको भूल जाएँ, आपके चरणकमलोंको भूल जाएँ, अथवा परमधामको भूल जाएँ, ऐसी मूर्खता हमसे कैसे होगी ?

रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल हैं खूबतर ।
खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर ॥ ३५

उस समय ब्रह्मात्माओंके मनमें यह विचार आया कि मायाका खेल अति विशेष होगा जिसको देखते ही हम धामधनी, परमधाम तथा स्वयंको भी भूल जाएँगी.

ए जेती हुई रदबदलें, त्यों त्यों खेल दिल चाहे ।
फेर फेर मांगे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए ॥ ३६

इस प्रकार जितनी परिचर्चा होती गई उतनी ही खेल देखनेकी चाहना भी बढ़ती गई. ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि हम वारंवार खेल देखनेकी माँग करने लगीं.

ना तो जो बात आखर होएसी, सो रबें आगूं दई बताए ।
कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित ल्याए ॥ ३७

अन्यथा भविष्यमें होने वाली सभी घटनाएँ धनीने पहलेसे ही बता दी और यह भी कहा कि जिस खेलको तुम इतनी उत्कट इच्छासे माँग रही हो वह वियोगजन्य दुःखसे भरा हुआ है.

हक आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान ।
त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान ॥ ३८

धनीने स्वयंको सत्य सिद्ध करनेके लिए ब्रह्मात्माओंको पहलेसे ही सभी

बातोंसे अवगत करा दिया. उन पर अपना उपकार बतानेके लिए धनीने उनकी उत्सुकता और बढ़ा दी.

मिनों मिनें करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी ।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी ॥ ३९

उस समय ब्रह्मात्माएँ परस्पर सावधान करने लगीं कि धनी हमें वियोगका खेल दिखाने वाले हैं. एक ब्रह्मात्मा दूसरेको कहने लगीं हम परस्पर मिलकर (सटकर) बैठ जाएँ.

क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोडें नाहें ।
क्यों भूलें हम हक को, बैठे खिलवत के माहें ॥ ४०

फिर कहने लगीं, अब हम अलग कैसे हो जाएँगी ? हम तो एक दूसरेको छोड़ेंगी ही नहीं. हम तो मूलमिलावामें बैठीं हैं. इसलिए अपने धनीको कैसे भूलेंगी ?

हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित ।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत ॥ ४१

तब धामधनीने कहा, तुम जिस अखण्ड घरमें बैठी हो उसे तथा मुझे भी भूल जाओगी, यहाँ बैठे-बैठे तुम ऐसा खेल देखने जा रही हो.

ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम ।
खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम ॥ ४२

फिर ब्रह्मात्माओंने कहा, हे धनी ! हमसे ऐसी भूल कैसे होगी ? हम ऐसे बेसुध कैसे होंगी ? चाहे मायाके लाखों खेल क्यों न देख लें किन्तु हम अपने धनीको नहीं भूलेंगी.

एक दूजी कहे रूहन को, तुम हुजो खबरदार ।
खेल देखावें फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार ॥ ४३

तब एक ब्रह्मात्मा दूसरीको कहने लगी कि तुम सावधान हो जाओ. धामधनी मायाका खेल दिखा रहे हैं किन्तु हमें उनको भूलना नहीं है.

जो तूं भूले मैं तुझ को, देऊंगी तुरत जगाए ।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए ॥ ४४

हे सखि ! यदि खेलमें तू भूल गई तो मैं तुझे तुरन्त जागृत कर दूँगी. कदाच मैं भूल जाऊँ तो उसी क्षण तू मुझे सावधान कर देना.

इन विध एक दूजी सों, मसलहत करी सबन ।
क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन ॥ ४५

इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंने परस्पर परामर्श किया और कहा कि जब हम सभी एक तन और एक मन स्वरूप हैं तो यह मायावी खेल हमारा क्या बिगाड़ लेगा ?

सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगूं होवें खबरदार ।
खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार ॥ ४६

हे सखियो ! जो पहलेसे ही सावधान होगी, वह कैसे भूल जाएगी ? क्योंकि जब धामधनी स्वयं हमें सचेत कर खेल दिखा रहे हैं तो फिर हम निश्चय ही नहीं भूलेंगी.

सो भूलेंगे क्यों कर, इसक जिनको होए ।
एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए ॥ ४७

जिनमें परस्पर प्रेम होगा वे भूलेंगी ही कैसे ? वे तो पलके चतुर्थ अंश मात्रका वियोग भी कैस सहन कर पाएँगी ?

इसक सबों रूहों पूरन, वाहेदत का मुतलक ।
क्यों जरा पैठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक ॥ ४८

निश्चय ही सभी ब्रह्मात्माओंमें अद्वैत परमधामका प्रेम पूर्णरूपसे है. तो फिर श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अपने धनीका यह वियोग कैसे प्रवेश कर सकता है ?

ए बोहोत रबद बीच अरस के, रूहों हक सों हुआ मजकूर ।
अरस बका के हजूरी, ए क्यों होवें हक सों दूर ॥ ४९

इस प्रकार अद्वैत परमधाममें ब्रह्मात्माओं तथा परब्रह्मके बीच विशेष

परिचर्चाएँ हुईं. वस्तुतः अखण्ड परमधाममें धामधनीके निकट रहने वाली ब्रह्मात्माएँ धनीसे दूर कैसे हो सकती हैं ?

इसक का अरस अजीम में, रबद हुआ बिलंद ।
तो फरामोसी में इसक का, बेवरा देखाया खावंद ॥ ५०

परमधाममें इस प्रकार प्रेम सम्वादने जोर पकड़ा, इसलिए मायाके खेलमें भी धामधनीने प्रेमका ही महत्त्व दर्शाया.

आप बैठे दिल देए के, ऊपर बारे हजार ।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार ॥ ५१

ब्रह्मात्माओंको खेल दिखानेका मनमें निश्चय कर स्वयं परमात्मा सिंहासन पर विराजमान हुए एवं बारह हजार ब्रह्मात्माएँ उनके चरणोंमें बैठ गईं. अब ब्रह्मात्माओं पर विस्मृतिकी ऐसी हँसी होगी जिसका कोई पार नहीं रहेगा.

हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी हांसी होए ।
इसक हक का आवे दिल में, ए फरामोसी हांसी जाने सोए ॥ ५२

परब्रह्म परमात्मा ब्रह्मात्माओंको खेल दिखानेका निश्चय कर बैठ गए. अब ब्रह्मात्माओंको विचार करना है कि उन पर विस्मृतिकी हँसी न हो. जिसके हृदयमें परमात्माका प्रेम प्रकट होता है वे आत्माएँ ही अपनी भूल पर हुई हँसीका रहस्य समझ सकेंगी.

तिन वास्ते हकें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर ।
और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर ॥ ५३

ब्रह्मात्माओंकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए परमात्माने इस नश्वर खेलकी रचना करवाई और उनकी सुरताको परमधामसे हटाकर दूर इस मायामें पहुँचा दिया. इस प्रकार प्राणनलीसे भी निकट (अपने हृदयमें) रख कर मात्र उनकी सुरताको मायाकी ओर मोड़ कर परमात्माने ब्रह्मात्माओंको यह खेल दिखाया.

अरस बका बीच ब्रह्मांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें ।
किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें ॥ ५४

इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें परमधामकी सुधि नहीं है. तथापि परमधाममें

बैठी हुई ब्रह्मात्माओंकी सुरताको इसी जगतमें प्राण नलीसे भी निकट परमधामका अनुभव करवाया.

दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर ।
निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर ॥ ५५

एक ओर परमात्माने ब्रह्मात्माओंको परमधामसे सुरतारूपमें इस ब्रह्माण्डमें भेजकर वियोगका अनुभव करवाया तथा उनको भी परस्पर दूर-दूर रखा वहीं दूसरी ओर तारतमज्ञान देकर इतनी निकटताका अनुभव करवाया कि वे परस्पर सटकर धनीके चरणोंमें ही बैठी हैं.

ऐसा बुजरक खेल देखाइया, ऐसा न देख्या कब ।
ए बातें हांसी फरामोसी की, करसी इसक ले अब ॥ ५६

परब्रह्मने ऐसा विचित्र खेल दिखाया कि इससे पूर्व ऐसा कभी देखा नहीं था. अब जागृत होकर धनीके प्रेमका अनुभव करती हुई ब्रह्मात्माएँ अपनी भूल पर होने वाली हँसीकी चर्चा करेंगी.

फरामोसी दई जिन वास्ते, हांसी भी वास्ते इन ।
इसक ले ले हंससी, कयामत बखत मोमिन ॥ ५७

अपने जिस प्रेमका महत्त्व दर्शानेके लिए धामधनीने ब्रह्मात्माओंको यह विस्मृति दी है उसीके लिए उनकी हँसी भी होगी. अब ब्रह्मात्माएँ धामधनीके अपार प्रेमका अनुभव कर आत्मजागृति (कयामत) के समयमें अपनी भूल पर हँसेंगी.

ए बातें हुई सब अरस में, रूहें बडी रूहन हक साथ ।
सो ए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ ॥ ५८

इस प्रकार परमधाममें परब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें परस्पर प्रेमकी परिचर्चा हुई. उसीके फल स्वरूप इस नश्वर खेलकी रचना हुई जिसमें अज्ञानरूप अन्धकार इतना है कि एक हाथको दूसरे हाथकी भी सूझ नहीं है अर्थात् आत्मा एवं परमात्माकी नितान्त पहचान नहीं है.

कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब ।
भेष भाषा सब जुदियां, हक को ढूंढे सब ॥ ५९

इस नश्वर जगतमें अनेक प्रकारकी जातियाँ तथा धर्म-सम्प्रदाय हैं, उनकी रीति-स्थिति वेशभूषा तथा भाषा भी अलग-अलग हैं तथापि वे सब परमात्माकी खोज कर रहे हैं.

ढूंढ ढूंढ सब जुदे परे, हक न पाया किन ।
अव्वल बीच और आखर लों, किन पाया न बका वतन ॥ ६०

इस प्रकार परमात्माकी खोजके प्रयत्नोंमें वे अलग-अलग हो गए हैं, उनमें-से किसीने भी परमात्माकी प्राप्ति नहीं की. इस सृष्टिमें आदिसे लेकर मध्य तथा अन्त तक किसीको भी परमात्माके धामकी सुधि प्राप्त नहीं हुई.

रसमें सबों जुदी लई, माहों माहें कई लरत ।
आप बडे सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत ॥ ६१

इस प्रकार सब लोग अलग-अलग रीति-रिवाज बनाकर परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं तथा स्वयंको सबसे बड़े बताते हुए पानी पत्थर तथा आगकी पूजा करते हैं.

ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहे हम बुजरक ।
पर हक सुध काहूं में नहीं, छूटी ना सुभे सक ॥ ६२

यह खेल ही इतना अन्धकारपूर्ण है कि यहाँ सभी लोग स्वयंको श्रेष्ठ समझते हैं. परन्तु परमात्माकी सुधि किसीको भी नहीं है तथा कोई भी शङ्काओंसे मुक्त नहीं हैं.

काहूं तरफ न पाई अरस की, कहावत हैं दीनदार ।
डूबे सब अपनी स्यानपें, जात हाथ पटक सिर मार ॥ ६३

स्वयंको धार्मिक (दीनदार) समझने वाले लोगोंको भी परमात्माकी दिशाका ज्ञान नहीं है. ऐसे सभी लोग अपनी बुद्धिमत्ताके मदमें डूबे हुए हैं तथा हाथ एवं सिर पटकते हुए निराश होकर संसारसे चले जाते हैं.

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान ।
फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान ॥ ६४

ऐसे ही अज्ञानतापूर्ण जगतमें परमात्माका सन्देश हाथमें लेकर रसूल आए और उन्होंने ब्रह्मात्माओंकी पहचानके लिए उसका प्रकाश संसारमें विस्तरित किया.

आगूं आए खबर दई, आखर आवेगा साहेब ।
रूह अल्ला इमाम उमत, होसी नाजी मजहब ॥ ६५

उन्होंने पहले ही आकर समाचार दिया कि अन्तिम समयमें परमात्मा आएँगे. उस समय श्यामाजी (रूहअल्लाह) सद्गुरु बनकर अपनी आत्माओंके समुदायके साथ प्रकट होंगी. तब परमात्माके प्रति समर्पित होने वाले (नाजी) लोगोंका एक सत्य धर्म स्थापित होगा.

पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान ।
हिसाब ले भिस्त देएसी, ठौर हक बका पेहेचान ॥ ६६

रसूल मुहम्मदने पुकार-पुकार कर सबको कहा कि परमात्मा आएँगे. वे सबकी लेखाजोखा अपने हाथमें लेकर जीवोंको मुक्तिस्थलका सुख प्रदान करेंगे. उस समय सभीको अखण्ड परमधामकी पहचान होगी.

ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन ।
सोई खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन ॥ ६७

धामधनीने जैसा कहा था उसी प्रकार इस खेलकी रचना हुई और उसे देखनेके लिए परमधामकी आत्माएँ अवतरित हुईं. इस नश्वर खेलको देखकर परमधामकी आत्माएँ अपने मूल घरको ही भूल गईं.

और भूले खसम को, गए खेल में रल ।
कोई सुध बका की न देवहीं, जो कायम अरस असल ॥ ६८

ब्रह्मात्माएँ इस खेलमें ऐसी रत हो गईं कि वे अपने धनीको ही भूल गईं. उनमें-से कोई भी अखण्ड परमधामकी सुधि नहीं दे रही हैं.

बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह ।
नसल आदम हवाई, जो मारे खुदाई राह ॥ ६९

ब्रह्मात्माएँ ऐसी स्वप्ननगरीमें आई हैं जहाँ लोगोंके हृदय पर दुष्ट इबलीसने अपना साम्राज्य जमाया है. आदम और हव्वाकी सन्तान होनेसे वह परमात्माकी ओर जाने वाले मार्गमें व्यवधान डाल रहा है.

मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान ।
तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, कायम अरस सुभान ॥ ७०

ब्रह्मात्माओंकी सुरताने भी मनुष्यों (आदमके वंशजों) का ही शरीर धारण किया है. जहाँ पर परब्रह्मके विषयमें कभी किसीने कानोंसे सुना ही नहीं है, ऐसे संसारमें ब्रह्मात्माएँ कैसे परब्रह्म परमात्माको प्राप्त कर सकतीं हैं ?

मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस ।
जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेस ॥ ७१

ब्रह्मात्माओंने भिन्न-भिन्न देशोंमें, विभिन्न जातियोंमें अवतरित होकर अनेक प्रकारकी वेश-भूषा एवं रीति-रिवाजोंको धारण किया. इस जगतमें प्रत्येक देशमें अलग-अलग धर्म व सम्प्रदाय हैं तथा भिन्न-भिन्न स्थानकी भाषाएँ एवं पृथक्-पृथक् वेशभूषा हैं.

चौदे तबक की दुनीको, काहूं खबर खुदा की नाहें ।
ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें ॥ ७२

इन चौदह लोकोंके जीवोंमें-से किसीको भी परमात्माकी सुधि नहीं है. परमात्माने उन्हें इस नश्वर खेलके खिलौने बनाया है किन्तु ब्रह्मात्माएँ भी उनमें ही आकर मिल गईं.

दुनियां चौदे तबक में, काहूं खोली नहीं किताब ।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब ॥ ७३

इन चौदह लोकोंके जीवोंमें-से किसीने भी कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं किए. (स्वयं रसूलने कहा था कि) अन्तिम (कयामतके) समयके स्वामी ही इन रहस्योंको स्पष्ट करेंगे, उनको ही यह पद दिया गया है.

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, दई हाथ इमाम ।
सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सेजदा तमाम ॥ ७४

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी उक्त रहस्योंको स्पष्ट करनेकी कुञ्जीस्वरूप तारतमज्ञान लेकर आए और उन्होंने उन रहस्योंको स्पष्ट करनेका दायित्व इमाम महदीको सौंपा. अब वे ही ब्रह्मात्माओंके समुदायको एकत्र कर जागृत करेंगे तब सृष्टिके सभी लोग उनको नमन करेंगे.

सो अग्यारैं सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत ।
हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत ॥ ७५

कुरानमें यह उल्लेख है कि ग्यारहवीं सदी (हिजरी सन्) में धर्मका यथार्थ ज्ञान प्रकट होगा. तब श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ परमात्माके लिए दिए गए सङ्केतोंका रहस्य समझेंगी.

अव्वल करी बातें अरस में, वास्ते मोमिनों न्यामत ।
कुंजी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इत ॥ ७६

रसूल मुहम्मदने साक्षात्कार (म्याराज) के समय परमधाममें ब्रह्मात्माओंके लिए परिचर्चा की और वे परमात्माका सन्देश (कुरान) ले आए. उस सन्देशको स्पष्ट करनेकी कुञ्जी तथा सद्गुरु (इमाम) का पद लेकर श्री देवचन्द्रजीका अवतरण हुआ.

सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल ।
सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे बचन माहें लैल ॥ ७७

जिन ब्रह्मात्माओंके लिए इस खेलकी रचना की गई है उनका ही समुदाय यहाँ पर एकत्रित हुआ है. परब्रह्म परमात्मा भी उनके बीच प्रकट हुए और वे ही (मेरे हृदयमें बैठकर) इस अज्ञानमयी रात्रिमें तारतम वाणीके रूपमें ज्ञानका प्रकाश फैला रहे हैं.

लैल गई पुकारते, आया बखत फजर ।
ए अग्यारैं सदी पूरन, तब खुली रूहों नजर ॥ ७८

ब्रह्मात्माओंको पुकार करते-करते अज्ञानकी रात्रि व्यतीत हो गई. अब तो

तारतम ज्ञानका प्रभात हो गया है. कुरानके अनुसार इस प्रकार ग्यारहवीं शताब्दीके पूर्ण होने पर ब्रह्मात्माओंकी आत्म-दृष्टि खुल गई.

ए बुजरकी इसक की, अबलों न जानी किन ।
और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन ॥ ७९

परब्रह्म परमात्माके प्रेमकी महिमाको अभी तक किसीने पहचाना नहीं था. संसारके जीव तो इन नश्वर खेलके खिलौने हैं इसलिए ब्रह्मात्माओंके बिना वह विशेषता कैसे जानी जा सकती ?

सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए ।
और हक जगावें ऊपर से, बिना इसक न उठ्यो जाए ॥ ८०

इन ब्रह्मात्माओंके हृदय पर परब्रह्मने ही मायाका आवरण डाल रखा है और ऊपरसे ज्ञान देकर उन्हें जागृत भी कर रहे हैं किन्तु प्रेमके बिना जागृत होकर उठा नहीं जाता.

आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस ।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस ॥ ८१

स्वयं परब्रह्मने ब्रह्मात्माओंके हृदयमें खेल देखनेकी इच्छा उत्पन्न कर यह मायाका खेल बनाया. इस खेलमें पड़ी हुई होनेसे परमात्माकी इतनी पुकार सुनकर भी ब्रह्मात्माओंको सुधि (होश) नहीं होती.

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक ।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इसक ॥ ८२

हे ब्रह्मात्माओ ! ये बातें अति सूक्ष्म तथा रहस्यपूर्ण हैं. जब तुम्हारे हृदयमें प्रेम जागृत होगा तभी तुम्हें इनकी सुधि होगी.

महामत रूहें हक सों हुआ, बहस इसक वास्ते ।
सो इसक बिना क्यों पैठिए, बीच हक अरस के ॥ ८३

महामति कहते हैं, इस प्रकार परमधाममें प्रेमके लिए ही धामधनीके साथ ब्रह्मात्माओंकी परिचर्चा हुई. इसलिए इस प्रेमके बिना परमधाममें कैसे प्रवेश किया जा सकता है ?

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अरस की, हक बका वतन ।
रूह अल्ला ने जाहेर किया, काहूं सुन्या न एते दिन ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! बड़े खेदकी बात है कि तुम अखण्ड परमधाम और श्रीराजजीकी रहस्यमयी बातोंको क्यों नहीं सुन रही हो ? श्यामा स्वरूप सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने सभी बातें उजागर कर दी हैं जिनको आज तक कोई भी अपने कानोंसे सुन नहीं पाया था.

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के ।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सबद ए ॥ २

हमारी हँसी करनेके लिए ही धामधनीने यह नींदका आवरण डाला है. तथापि खेद है कि इन वचनोंको सुनकर भी ब्रह्मात्माओंको आघात नहीं लगा.

ए साहेब हांसी करें, अरस की अरवाहों सों ।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदेंमों ॥ ३

परब्रह्म परमात्मा तो परमधामकी ब्रह्मात्माओंके साथ हँसी कर रहे हैं. हाय ! हाय ! ब्रह्मात्माओंके हृदय इतने कठोर हो गए हैं कि इन बातोंको सुनकर भी उन्हें कुछ विचार नहीं आते.

ए साहेब किने न देखिया, ना किन सुनिया कान ।
ढूंढ गए कै त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान ॥ ४

ऐसे परमात्माको आज तक न किसीने देखा है और न ही उनके बारेमें कानोंसे सुना है. त्रिगुण स्वरूप (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी ढूँढ़-ढूँढ़कर थक गए परन्तु कोई भी उनको पा न सके.

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के ।
सो नूर नूर जमाल के, मुजरे आवत इत ए ॥ ५

अक्षरब्रह्मके एक पलमें करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं. वे भी इन अक्षरातीत धनीके नित्य दर्शन करने परमधाम आते हैं.

जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार ।
साहेब अरस अजीम के, करने उत दीदार ॥ ६

जिन अक्षरब्रह्मको आज तक कोई भी जान नहीं सका वे स्वयं नित्यप्रति धामधनीके दर्शनके लिए परमधाममें रङ्गमहलके आगे तक चले जाते हैं.

सो साहेब हांसी करें, अपने मोमिन रूहों सों मिल ।
सो सुनके घाव न लागहीं, हाए हाए ऐसे बजर दिल ॥ ७

ऐसे प्रभुत्वशाली परब्रह्म अपनी ब्रह्मात्माओंसे हाँस विनोदका खेल कर रहे हैं. इतनी बातें सुननेके उपरान्त भी हमारे मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा. हाय ! हाय ! हमारे हृदय वज्रके समान कैसे कठोर हो गए हैं ?

हांसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन ।
पर हाए हाए दिल न बिचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन ॥ ८

धामधनीने हम पर कैसी हँसी की है तथा यह मोहका आवरण कैसा डाल दिया है ? खेद है कि इस पर हम हृदयपूर्वक विचार नहीं करते. हमारा हृदय ही ऐसा कठोर हो गया है.

हक का इसक हमपें, पूरा पाया मैं ।
ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के सें ॥ ९

हम ब्रह्मात्माओं पर धामधनीका अपार प्रेम है इसका अनुभव मुझे हुआ है. इसी अनुभवके लिए ही उन्होंने मोहका आवरण डालकर नींदका यह खेल दिखाया है.

इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक ।
सुख देखे बेसक अरस के, तो क्यों न आवे हक इसक ॥ १०

उन्होंने हमें ज्ञान भी पूर्ण दिया है. इसमें उनकी 'मैं' (प्रभुसत्ता) के विषयमें लेशमात्र भी शङ्का नहीं है. इस ज्ञानके द्वारा निःसन्देह होकर हमने परमधामके सुखोंका भी अनुभव किया. तथापि अभी तक हमारे हृदयमें क्यों प्रेम उत्पन्न नहीं होता ?

सुख में भी सक नहीं, नाहीं अरस में सक ।
ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक ॥ ११

अब हमें दिव्य परमधामके सुखों तथा प्रेमके विषयमें कोई सन्देह नहीं रहा. इसी प्रकार धामधनी प्रदत्त यह तारतम ज्ञान तथा स्वयं धामधनीके विषयमें भी कोई शङ्का नहीं रही.

सक ना रही कछू खेल में, सक न आए देखन ।
सक ना मैं हक की, और सक ना गिरो मोमिन ॥ १२

इस खेलके विषयमें, इसे देखनेके लिए हमारे आगमनके विषयमें, धामधनीकी 'मैं' (प्रभुसत्ता) के विषयमें तथा ब्रह्मात्माओंके समुदायके विषयमें अब कोई सन्देह नहीं रहा है.

सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर ।
सक नहीं कयामत में, सब अरवाहें उठे ज्यों कर ॥ १३

परब्रह्म परमात्माका सामर्थ्य तथा उनकी आज्ञासे उत्पन्न यह प्राकृतिक मायाके विषयमें भी अब कोई सन्देह नहीं रहा है. अब तो आत्म-जागृतिकी घड़ी तथा उस समय आत्माएँ कैसे जागृत होंगी इस पर भी कोई सन्देह नहीं रहा है.

सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम ।
बेसक तीनों उमत, बेसक घरों पोहोंचावें हम ॥ १४

इसमें भी लेशमात्र सन्देह नहीं है कि आत्म-जागृति (कयामत) के समय सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंका अखण्ड सुख प्राप्त होगा तथा हम तीनों सृष्टि (जीव, ईश्वरी एवं ब्रह्म) को अपने-अपने गन्तव्यस्थान (धाम) में पहुँचा देंगे.

बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ ।
बेसक ताला खोलिया, बेसक कुंजी हमारे हाथ ॥ १५

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम अज्ञानताकी निद्रामें पड़े थे और हमें जागृत करनेके लिए सद्गुरु धनी हमारे बीच पधारे. उन्होंने आकर धर्मग्रन्थोंके

रहस्य स्पष्ट करते हुए अखण्ड धामके द्वार खोल दिए. वही तारतम ज्ञानकी कुञ्जी आज हमारे हाथमें है.

बेसक खेल देखाइया, खोली बेसक कतेब वेद ।
बेसक हमोंने पाइया, बेसक हक दिल भेद ॥ १६

निःसन्देह ही धनीने हमें खेल दिखाया और वेद, कतेबके रहस्यको स्पष्ट कर दिया. उनका ही ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्राप्त कर हम सन्देह रहित हुए तथा उनके हृदयका मर्म समझने लगे.

बेसक दोऊ अरसों की, जरे जरे की बेसक ।
बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक ॥ १७

तारतमज्ञानके द्वारा हमें परमधाम तथा अक्षरधामकी कण-कणकी जानकारी प्राप्त हुई और ज्ञात हुआ कि धामधनीने निश्चय ही ब्रह्मात्माओं पर अपार कृपा कर यह सन्देह रहित ज्ञान दिया है.

जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक ।
अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक ॥ १८

इन चौदह लोकोंमें जितने भी महान् (ज्ञानी) लोग हुए हैं उनमें-से किसीने भी अपने मुखसे यह नहीं कहा कि हम सन्देह रहित हो गए हैं.

सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक बेसक ।
मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक ॥ १९

हे ब्रह्मात्माओ ! मैंने निश्चित रूपसे इन सभी बातोंको जान लिया है, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं. तुम भी इसे निश्चित समझना कि यह बोलनेवाली 'मैं' परब्रह्म परमात्माकी ही है.

केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो बिचार ।
तो बेसक सुख अरस का, इन तन बेसक ल्यो करार ॥ २०

कितनी ब्रह्मात्माएँ इस तारतम ज्ञानसे सन्देह रहित हुई हैं, वे निश्चित रूपसे विचार कर लें. इस नश्वर तनको धारण करते हुए भी तुम निश्चित रूपसे अखण्ड परमधामके सुखोंका अनुभव करो.

दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित ।
सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत ॥ २१

इन चौदह लोकोंकी सृष्टिमें आजतक कोई भी निःशङ्क नहीं हुआ है. अब (तारतम ज्ञानके अवतरणसे) ऐसी निःसन्देहता आ गई कि सभीकी शङ्काएँ मिट गईं.

किस वास्ते हांसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस ।
हाए हाए दिल ना बिचारहीं, हाए हाए आवत नहीं माहें होस ॥ २२

इतना होने पर भी ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें विचार नहीं करतीं कि धामधनीने हमपर क्यों हँसी की तथा हम क्यों मायामोहमें पड़कर बेसुध हो गईं हैं. खेद है कि अभी तक भी किसीने अपने हृदय पर विचार नहीं किया और किसीको सुधि भी नहीं हुई है.

ए कदम दिल कछू आवहीं, जब करे बिचार दिल ए ।
हाए हाए ए समया क्यों ना रह्या, इन हांसी फरामोसी के ॥ २३

श्रीराजजीके चरणकमलकी स्मृति तभी हृदयमें आएगी जब इन वचनों पर भलीभाँति विचार कर लिया जाए. खेद है कि इस मायामय जगतके हँसीके खेलमें उक्त बातों पर विचार करनेका समय क्यों नहीं आया ?

हाए हाए दिल में न आवहीं, किस वास्ते हांसी भई ।
ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही ॥ २४

यह भी खेदकी बात है कि हमारे मनमें इतना भी विचार नहीं आता कि हमारी हँसी क्यों हो रही है ? हमारे मन पर माया (नींद) का आवरण क्यों डाला गया ? किसीने यह बात स्पष्ट रूपसे दिल खोलकर नहीं कही है.

समया न रह्या किन वास्ते, हुई पेहेचान न वास्ते किन ।
इसक हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन ॥ २५

अब धामधनीकी पहचानका समय क्यों नहीं रहा ? तथा किसलिए उनकी पहचान नहीं हो रही है ? बड़े खेदकी बात है कि हम धामधनीके हृदयके प्रेमके लक्षण प्राप्त न कर सके.

आप फरामोसी देए के, ऊपर थें जगावत ।
तरंग हक इसक के, हाए हाए दिल में न आवत ॥ २६

धामधनीने ही स्वयं हमारे मन पर मोहका आवरण डाला. पुनः वे ही ऊपरसे जागृत भी कर रहे हैं. तथापि खेद है कि हमारे मनमें धामधनीके प्रेमकी तरङ्गें नहीं आ रही हैं.

खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख ।
मेहेर प्रीत हक के दिल की, हाए हाए देखे ना इसक के सुख ॥ २७

धनीने इस जगतकी रचना क्यों करवाई, किसलिए यह दुःखमय संसार दिखाया? उनके हृदयमें ब्रह्मात्माओंके लिए कितनी अनुकम्पा तथा प्रीति भरी हुई है इन बातों पर विचार कर हम उनके प्रेमका सुख नहीं ले रहे हैं. यह कितनी खेदकी बात है.

किस वास्ते हलके जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर ।
हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इसक का जोर ॥ २८

हमारे प्रियतम धनी हमें कैसे अन्दरसे प्रेमपूर्वक (धीरेसे) जागृत कर रहे हैं और बहारसे ज्ञानकी वर्षा कर रहे हैं. खेद है कि इतना होने पर भी धामधनीके प्रेमकी प्रबलताकी सुधि कोई ले नहीं सका.

किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फुरमान ।
ए बातें हक के इसक की, हाए हाए करी न काहूं पेहेचान ॥ २९

किसलिए रसूल मुहम्मदके हाथ सन्देश पत्र (कुरान) भेजा तथा उस समयके लोगोंको वह क्यों समझमें नहीं आई ? यह सभी धामधनीका ब्रह्मात्माओंके प्रति प्रेम है. किन्तु खेद है कि इन बातोंकी पहचान अभी तक किसीने नहीं की.

कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को ।
मेहेर अल्ला के कलाम, हाए हाए आए ना काहूं दिल मों ॥ ३०

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी तारतमज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर क्यों अवतरित हुए तथा सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेके दायित्वके साथ उन्होंने वह

कुञ्जी क्यों दूसरे स्वरूपको (मुझे) सौंपी ? कुरानमें धामधनीकी कृपाके विषयमें क्या उल्लेख है इत्यादि विषयमें किसीके भी हृदयमें विचार नहीं आया.

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम ।
हाए हाए ए सुध मोमिनों ना लई, मीठा हक इसक का आराम ॥ ३१

कुरानमें यह क्यों कहा गया कि कयामतके समय परमात्माका स्वरूप प्रकट होगा और वही कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेगा. हाय ! इतना होने पर भी ब्रह्मात्माओंको सुधि नहीं हुई कि परब्रह्मके मधुर प्रेममें ही सुख एवं शान्ति है.

ए द्वार किने ना खोलिया, ए जो कुरान किताब ।
पाई ना हकीकत किनहूं, हाए हाए एकै ठौर खिताब ॥ ३२

अभी तक कुरानके गूढ़ रहस्य किसीने स्पष्ट नहीं किए तथा उसकी यथार्थताका ज्ञान किसीको नहीं हुआ. हाय ! यह सम्पूर्ण दायित्त्व (अधिकार) तो एक (मुझ) को ही दिया गया है.

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान ।
सो साहेदी किन ना लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान ॥ ३३

कुरानमें यह भी कहा है, 'जो परमात्माकी साक्षी देगा वही परमात्मास्वरूप माना जाएगा.' अभी तक परमात्माकी साक्षी किसीने नहीं स्वीकारी. खेद है कि कोई भी कुरानका रहस्य समझ नहीं पाया.

लिखी इसारतें रमूजें, हकें किन ऊपर ।
ए बातें मोमिनों मिनें, हाए हाए छिपी रही क्यों कर ॥ ३४

परमात्माने कुरानमें सङ्केतोंके द्वारा किनके लिए गूढ़ रहस्य भेजे हैं, यह बात अभी तक ब्रह्मात्माओंमें क्यों छिपी रही ?

तरंग हक के इसक का, पाए ना गिरो में किन ।
अजूं माएने मगज, हाए हाए पाए नहीं मोमिन ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंमें अभी तक कोई भी परब्रह्मके प्रेमकी तरङ्ग प्राप्त न कर सका.

अभी भी ब्रह्मात्माएँ कुरानआदि धर्मग्रन्थोंका रहस्य समझ नहीं पाईं.

हक के दिल का इसक, निपट बडी है बात ।
अजूं जाहेर रूहों ना हुई, अरस सूरत हक जात ॥ ३६

परमात्माके हृदयमें निश्चय ही ब्रह्मात्माओंके लिए विशेष प्रेम है परन्तु अभी तक ब्रह्मात्माओंको यह स्पष्ट नहीं हुआ कि वे स्वयं परमधामकी हैं तथा परब्रह्म परमात्माकी अङ्गभूता हैं.

हांसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे ।
हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इसक की ए ॥ ३७

धामधनीने ब्रह्मात्माओंको बेसुधि देकर किसलिए उनकी इतनी बड़ी हँसी की ? खेद है कि ब्रह्मात्माएँ धनीके प्रेमकी उन बातोंको समझ न सकीं.

लिख्या ऐसा कुरान में, कुआरी रही फुरकान ।
ए दाग गिरो तब देखसी, हाए हाए होसी जब पेहेचान ॥ ३८

कुरानमें ऐसा लिखा है कि यह कुरान कुँवारी ही रह गई अर्थात् इसका गूढ़ रहस्य किसीने स्पष्ट नहीं किया. इस कलङ्कको ब्रह्मात्माएँ तभी देख सकेंगीं जब उन्हें पूर्ण पहचान हो जाएगीं.

ए भी वास्ते इसक के, फुरमाया यों कर ।
तो कही कुआरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर ॥ ३९

वस्तुतः अपने प्रेमकी साक्षी देनेके लिए ही तो धनीने यह कुरान भेजा है. इसलिए अभी तक यह कुँवारी (अछूती) ही रह गई. खेद है कि यह बात भी ब्रह्मात्माएँ हृदयमें नहीं लेती.

उतरे नूर बिलंद से, मोमिन बडा मरातब ।
हक के दिल का इसक, हाए हाए मोमिन लेसी कब ॥ ४०

ब्रह्मात्माएँ तेजोमय परमधामसे इस खेलमें अवतरित हुई हैं उनका महत्त्व अत्यधिक है. वे परब्रह्मके हृदयका प्रेम कब ग्रहण कर सकेंगी ?

ऐसा नूर जमाल जो, रूहें रहे इन दरगाह ।
ए किसा सुनते बिचारते, हाए हाए उडत नहीं अरवाह ॥ ४१

परब्रह्म परमात्माके इस चिन्मय धाममें ब्रह्मात्माएँ रहतीं हैं. यह प्रसङ्ग सुनकर तथा विचारकर यह आत्मा शरीरको क्यों त्याग नहीं देती ?

हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह ।
हेत प्रीत इसक की, हाए हाए आई नहीं काहूं एह ॥ ४२

वस्तुतः परमात्माके हृदयका प्रेम ब्रह्मात्माओंके लिए ही है. तथापि बड़ा खेद है कि धामधनीकी प्रीति तथा स्नेह अभी तक ब्रह्मात्माओंके हृदयमें क्यों नहीं आ रहा है ?

इसक खेल हांसी इसक, इसक फरामोस मोमिन ।
इसकें रसूल होए आइया, वास्ते इसक न पाया किन ॥ ४३

धनीने ब्रह्मात्माओंको अपने प्रेमकी पहचान करानेके लिए ही नश्वर जगतकी रचना की और मोहका आवरण डालकर उन्हें जगतमें भेजा. वे उनकी हँसी भी प्रेमके लिए ही कर रहे हैं. प्रेमकी पहचानके लिए ही रसूल मुहम्मद सन्देश वाहक बनकर आए हैं. इसीलिए अभी तक कुरानके गूढ़ रहस्योंको कोई समझ न सका.

इसकें फुरमान आइया, वास्ते इसक न खुल्या किन ।
वास्ते इसक के गैब हुआ, इसकें खुले ना खुदा बिन ॥ ४४

ब्रह्मात्माओंको अपने प्रेमकी पहचान करवानेके लिए ही धामधनी द्वारा भेजा हुआ सन्देश कुरानके रूपमें यहाँ आया तथा उसके गूढ़ रहस्य किसीसे स्पष्ट नहीं हुए. प्रेमके कारण ही ये गूढ़ रहस्य अभी तक छिपे रहे. वस्तुतः यह भी प्रेमकी पहचानके लिए ही था कि परब्रह्मके प्रकट हुए बिना किसीसे भी ये रहस्य स्पष्ट नहीं हुए.

इसकें कुंजी ल्याइया, इसकें ल्याया खिताब ।
इसकें आए मोमिन, इसकें खुले ना सिताब ॥ ४५

प्रेमकी पहचानके लिए ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी

तथा बुद्धजीका पद लेकर आए. प्रेमकी पहचान करनेके लिए ही ब्रह्मात्माएँ यहाँ अवतरित हुईं तथा उनके अवतरणसे पूर्व कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए.

कई बानी इसकें उपजी, कई इसकें पडी पुकार ।
ए रूहें भी वास्ते इसक के, हाए हाए हुइयां ना खबरदार ॥ ४६

प्रेमकी पहचान करवानेके लिए ही अनेक शास्त्रोंकी रचना हुई तथा सद्गुरुने वारंवार उनकी साक्षी दी. खेद है कि ब्रह्मात्माएँ भी इस प्रेमको पहचाननेके लिए अभी तक सचेत नहीं हुई हैं.

हाए हाए इसक हक का, समझे नहीं मोमिन ।
ना तो अरवाहें थीं अरस की, पर हुआ न दिल रोसन ॥ ४७

खेदकी बात है कि ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके प्रेमको नहीं समझ रहीं हैं. वैसे तो वे परमधामकी आत्माएँ हैं परन्तु अभी भी उनके हृदय प्रकाशित नहीं हुए हैं.

सो भी वास्ते इसक के, जो लागत नाहीं घाए ।
सो भी वास्ते इसक के, जो उडत नहीं अरवाए ॥ ४८

यह भी धामधनीके प्रेमकी पहचानके लिए ही है कि इन वचनोंको सुनकर भी ब्रह्मात्माओंका हृदय घायल नहीं होता तथा यह आत्मा भी शरीरको छोड़कर उड़ नहीं जाती.

इसकें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस ।
सो भी वास्ते इसक के, जो टलत नहीं फरामोस ॥ ४९

सद्गुरुने हमें जागृत करनेके लिए प्रेमपूर्वक पुकार की तथापि हमें सुधि नहीं हुई. वस्तुतः धनीके प्रेमकी पहचानके लिए ही हमारी अज्ञानकी नींद दूर नहीं हो रही है.

सो भी वास्ते इसक के, जो लगत न कलाम सुभान ।
सो भी वास्ते इसक के, जो होत नहीं पेहेचान ॥ ५०

सम्भवतः प्रेमके कारण ही सद्गुरुके शब्द हमारे हृदयको स्पर्श नहीं कर रहे हैं तथा हमें भी उनकी पहचान नहीं हो रही है.

सो भी वास्ते इसक के, जो पेहेचान आवत नाहें ।
सो भी वास्ते इसक के, जो पेहेचानत दिल माहें ॥ ५१

इसी प्रेमके कारण ही हमें अपने धनीकी प्रत्यक्ष पहचान नहीं हो रही है. यदि हृदयमें पहचानकी प्रतीति हो रही है तो भी इसका कारण प्रेम ही है.

ए करत है सब इसक, जो खेल में कोई जीतत ।
सो भी करत इसक, जो कोई काहूं भूलत ॥ ५२

परब्रह्म परमात्माका प्रबल प्रेम ही यह सब करवा रहा है. कोई इस नश्वर खेलमें सचेत होकर विजयी होता है अथवा भूलकर हार जाता है. यह सभी प्रेमके कारण ही हो रहा है.

ए बारीक बातें इसक की, ए कोई समझत नाहें ।
सो भी करत है इसक, जानत बल जुबांए ॥ ५३

इस प्रकार प्रेमका रहस्य अति सूक्ष्म होनेसे इसे कोई भी समझ नहीं पाता. वस्तुतः यह सब प्रेम ही करवा रहा है. मेरी जिह्वाकी शक्ति अर्थात् असमर्थताको भी वही जानता है.

सो भी करत है इसक, जुदी जुदी जिनस ।
काहूं सुध थोरी काहूं घनी, काहूं इसक न देत हरगिस ॥ ५४

संसारकी सम्पूर्ण विविधता प्रेमके द्वारा ही सम्पन्न हो रही है. इसलिए यह प्रेम यहाँके लोगोंमें-से किसीको थोड़ी, किसीको ज्यादा तथा किसीको नितान्त पहचान होने नहीं देता.

इसक सेती हारिए, जितावे इसक ।
इसकें इसक न आवहीं, इसक करे बेसक ॥ ५५

परमात्माके प्रेमके कारण ही संसार सागरमें किसीको हार या किसीको जीत प्राप्त होती है. इसी प्रेमके कारण ही किसीके हृदयमें प्रेम ही अङ्कुरित नहीं होता तो कोई प्रेम प्राप्तकर सन्देह रहित भी हो जाता है.

ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए ।
इसक हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए ॥ ५६

परब्रह्मके प्रेमका यह रहस्य अति सूक्ष्म है इसे कैसे पहचाना जाए ? वस्तुत:उनके हृदयका प्रेम उनके आदेशके बिना कैसे समझा जा सकता.

ए हक देखावें इसक, तो बेर न पल एक होए ।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए ॥ ५७

यदि स्वयं परब्रह्म परमात्मा अपना प्रेम दिखाना चाहें तो उनके लिए पलमात्रका भी समय नहीं लगता. अन्यथा उनके आदेशके बिना सौ वर्ष पर्यन्त सङ्गत करनेसे भी उसे समझा नहीं जा सकता.

ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए ।
बिना इसक दिए हक के, क्यों कर समझे कोए ॥ ५८

निश्चय ही परब्रह्म परमात्माके हृदयकी बातें बड़ी सूक्ष्म हैं.उनके द्वारा प्रेम दिए बिना इन रहस्योंको कोई कैसे समझ सकता है.

इसक हक के दिल का, क्यों आवे माहें बुझ ।
हक देवें तो इसक आवहीं, ए हक के इसक का गुझ ॥ ५९

परब्रह्म परमात्माके हृदयका प्रेम कैसे हमारी समझमें आ सकता है ? यदि स्वयं वे अपना प्रेम प्रदान करेंगे तभी उनके प्रेमका रहस्य स्पष्ट होगा.

ए हक का बातून इसक, तिन इसक का बारीक बातन ।
बिना पाए इसक हक के, इसक न आवे किन ॥ ६०

वस्तुत: यह प्रेम ही परब्रह्मका गूढ़ रहस्य है तथा इसमें भी और गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है. अत: धनीके प्रेमको प्राप्त किए बिना किसीके भी हृदयमें प्रेम अङ्कुरित नहीं हो सकता.

ए खेल फरामोसी का, इसकें किया जो अब ।
तुम कायम दायम इसक में, पर ऐसा इसक न कब ॥ ६१

वस्तुत: यह नींदका खेल भी धामधनीके प्रेमसे ही उत्पन्न हुआ है. हे

ब्रह्मात्माओ ! तुम तो सदैव अखण्ड प्रेममें रहती हो, किन्तु इस प्रकार प्रेमका आनन्द तुम्हें कभी प्राप्त नहीं हुआ था.

ए हमेसा रूहन में, रहे भीगे बीच इसक ।
पर इसक ए फरामोसीय का, जो हक के दिल माफक ॥ ६२

ब्रह्मात्माएँ परमधाममें सदैव प्रेममें ही रङ्गी रहतीं हैं परन्तु यह नश्वर जगतका प्रेम तो धामधनीकी इच्छाके अनुकूल ही है.

बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जुदी होवे गिरो दम ।
खेल इसक जुदागीय का, क्यों देखें अरस में हम ॥ ६३

अखण्ड परमधाममें वियोग न होनेसे वहाँपर ब्रह्मात्माएँ क्षण भरके लिए भी अपने धनीसे अलग नहीं होती. इसलिए परमधाममें बैठी हुई हम ऐसा वियोगका खेल कैसे देख सकतीं ?

लेने लज्जत इसक वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम ।
जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इसक खसम ॥ ६४

धामधनीने अपने प्रेमकी अनुभूति करवानेके लिए ब्रह्मात्माओं पर नींदका आवरण डाला और उन्हें खेल देखनेका आदेश दिया. यदि आत्माएँ इस रहस्यको अपने हृदयमें धारण करेंगी तो वे धामधनीके प्रेमका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगी.

आप आगूं रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक ।
सुख देने देखाइया, अपने दिल का इसक ॥ ६५

स्वयं धामधनीने अपनी आत्माओंको अपने सम्मुख बैठाकर उनके मनमें खेल देखनेकी इच्छा उत्पन्न करवाई. वस्तुतः अपने हृदयके प्रेमका सुख प्रदान करनेके लिए ही उन्होंने यह खेल दिखाया है.

आप दे फरामोसी, और जगावें भी आप ।
देखाई जुदाई फरामोस में, देने इसक मिलाप ॥ ६६

आत्माओं पर नींदका आवरण भी स्वयं धामधनीने डाला है और वे स्वयं उन्हें जागृत भी कर रहे हैं. अपने प्रेम मिलनकी सुखानुभूति करवानेके लिए भी उन्होंने स्वप्नमें वियोगका खेल दिखाया.

ना मांग्या ना दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह ।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इसक सनेह ॥ ६७

आत्माओंने न यह खेल देखनेकी माँग की है तथा न ही इसे देखनेकी इच्छा उनके हृदयमें उत्पन्न हुई है. वस्तुतः धामधनीने ही उनके हृदयमें ऐसी इच्छा उत्पन्न करवाई है. अपने प्रेम और स्नेहकी पहचान करवानेके लिए ही उन्होंने आत्माओंसे वियोगका यह खेल देखनेकी माँग करवाई.

इसक तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए ।
वास्ते इसक हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए ॥ ६८

अपने प्रियतमसे बिछुड़कर पुनः मिलने पर ही हृदयमें प्रेमकी तरङ्गें उठती हैं. इसलिए धनीने अपने हृदयके प्रेमको दिखानेके लिए हमें ऐसे बेसुधिका खेल दिखाया है.

इसक विछुरे से जानिए, आए दूर थें मिलिए जब ।
ए दोऊ बातें अरस में न थीं, इसक चिन्हार देखाई अब ॥ ६९

वियोग होने पर अथवा दूर होकर पुनः व्याकुलताके साथ मिलने पर ही प्रेमका महत्त्व समझमें आता है. ये दोनों बातें परमधाममें सम्भव नहीं थीं. इसीलिए यह नश्वर खेल दिखाकर उन्होंने अपने प्रेमकी पहचान करवाई है.

जो हक का इसक विचारिए, तो बडा दिल देत लज्जत ।
ए बुजरक मेहेरबानगी, हकें ऐसी दई न्यामत ॥ ७०

परब्रह्म परमात्माके प्रेमका विचार करने पर हृदयमें विशेष आनन्दकी अनुभूति होती है. धामधनीकी यह महती कृपा है कि उन्होंने इस नश्वर जगतमें भी दिव्य प्रेमरूपी सम्पत्ति प्रदान की है.

जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इसक ।
जो दिल देए के देखिए, तो सुख आवे हक माफक ॥ ७१

जैसे परब्रह्म परमात्मा महान् हैं वैसे ही उनका प्रेम भी सर्वोच्च है. इस तथ्य पर हृदय पूर्वक विचार कर लिया जाए तो परब्रह्मके अनुरूप ही उनका महान् सुख प्राप्त होता है.

जैसा मेहेबूब बुजरक, ऐसा हादी हक का तन ।
रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन ॥ ७२

प्रियतम धनीकी जैसी प्रतिष्ठा है उसीके अनुरूप ही उनकी अङ्गना श्यामा स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी है. ब्रह्मात्माओंकी भी प्रतिष्ठा श्यामाजी स्वरूप सद्गुरुके अनुरूप है. अखण्ड परमधाम भी इन सभीकी प्रतिष्ठाके अनुरूप ही है.

ऐसा साहेब इसक, करत निसबत जान ।
हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान ॥ ७३

परब्रह्म परमात्मा अपनी अङ्गना समझ कर ही हमसे ऐसी प्रेमभरी लीलाएँ करते हैं. खेद है कि ब्रह्मात्माएँ संसारमें आकर सब कुछ भूल गईं हैं, इनको किसी प्रकारकी पहचान नहीं हो रही है.

भूले हक और आपको, और भूले बका घर ।
हक हंससी इसी बात को, रूहें भूलीं क्यों कर ॥ ७४

ब्रह्मात्माएँ संसारमें आकर अपने धामधनीको, स्वयंको तथा अखण्ड परमधामको भी भूल गई हैं. धामधनी इन्हीं बातोंको लेकर ब्रह्मात्माओंकी हँसी करेंगे कि वे यह सब कुछ कैसे भूल गईं हैं ?

औलिया लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसबत ।
फरामोसी दई हांसीय को, कछू चल्या न हकसों इत ॥ ७५

कुरानमें भी ब्रह्मात्माओंको परब्रह्मके मित्र कहकर यह कहा है कि वे परमात्माके साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखती हैं. ऐसी आत्माओंको धामधनीने नींदके खेलमें भेजकर उनकी हँसी की है. वस्तुतः धामधनीके समक्ष आत्माओंका जोर नहीं चलता.

कैसे थे इन खेल में, किन माफक थे तुम ।
किन से ए निसबत भई, कैसा बका पाया खसम ॥ ७६

हे ब्रह्मात्माओ ! इन नश्वर खेलमें तुम कैसे पात्र बनीं थीं, तुम्हारा आचरण कैसा था ? अब विचार कर देखो कि तुम्हारा सम्बन्ध किससे है और कैसे अखण्ड घरके स्वामीको तुमने प्राप्त किया है ?

कहां थे फना के खेल में, कैसा था अरस घर दूर ।
किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर ॥ ७७

इस नश्वर खेलमें तुम कहाँ थीं और तुम्हारा घर परमधाम कितना दूर लग रहा था ? कोई भी महानुभाव जिनको प्राप्त नहीं कर सके ऐसे परब्रह्मने तुम्हें कैसे अपने चरणोंमें ले लिया ?

कैसा अरस देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें ।
ए जो अरवाहें अरस की, क्यों अजूं विचारत नाहें ॥ ७८

धामधनीने तुम्हें कैसे परमधामके दर्शन करवाए तथा कैसे तुम्हें मूलमिलावामें बैठे हुए अनुभव करवाया. ये परमधामकी आत्माएँ अभी भी इन बातों पर क्यों विचार नहीं कर रही हैं ?

किन सूरत न पाई हक की, न पाया अरस बका ठौर ।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर ॥ ७९

आज तक किसीने भी परब्रह्मके स्वरूपको नहीं जाना और न ही कोई परमधामको पा सका. सभीने यही पुकार कर कहा कि हम अनेक प्रयत्न करते हुए थक गए किन्तु परब्रह्म परमात्माको प्राप्त न कर सके.

धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर मकान ।
खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान ॥ ८०

वैकुण्ठ (सत्यलोक) के अधिपतियोंने भी अनेक प्रयत्न किए किन्तु वे अक्षरधामको भी प्राप्त न कर सके. इस प्रकार अनेक लोग प्रयत्न करते हुए थक गए किन्तु उनमें-से किसीने भी उसे देखा तक नहीं.

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम ।
सो तलें झांकत नूर जमाल के, आवें दीदारें दायम ॥ ८१

ऐसे अखण्ड अविनाशी धामके स्वामी अक्षरब्रह्म भी रङ्गमहलके आगे चाँदनी चौकमें जाकर नित्यप्रति अक्षरातीतके दर्शन करते हैं.

कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम ।
कौन बडाई तुमारी, हाए हाए आवे न याद खसम ॥ ८२

हे ब्रह्मात्माओ ! इस खेलमें आकर तुम्हारी कैसी स्थिति बनी हुई है, वास्तवमें तुम परमधाममें किस रूपमें हो, तुम्हारी कितनी बड़ी महिमा है, बड़े खेदकी बात है कि अभी भी तुम्हें अपने धनीका स्मरण नहीं होता.

कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी ।
किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी ॥ ८३

कैसा श्रेष्ठ परमधाम तुम्हारा घर है तथा वहाँ पर धामधनीका कैसा प्रभुत्व है, किसने तुम्हारे दर्शनकी इच्छा रखी है, तथा उनकी क्या विशेषता है, इस पर क्यों विचार नहीं करतीं ?

कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल ।
किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल ॥ ८४

यह नश्वर जगत किस प्रकारका था और वहाँ पर तुम्हारी बुद्धि किस प्रकार काम कर रही थी ? तुम स्वयंको कैसे झूठे परिवारोंमें-से मान रहीं थीं और तुम्हारा आचरण किस प्रकारका रहा था ? इस पर विचार तो करो.

अब कैसा सहूर है तुमको, पाई कौन सोहोबत ।
किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत ॥ ८५

अब तुम्हें कैसा विवेक प्राप्त हुआ है, तथा तुम किसकी सङ्गतिमें आ गईं हो, पहले तुम कैसे झूठे परिवारमें फँसी हुईं थीं, और अब अपनी आत्माओंके साथ कैसा सम्बन्ध रख रहीं हो ?

कैसी पाई सराफी, कैसी आई तुमें पेहेचान ।
हक बका चीन्हया कौन जिमिएं, पाया कैसा इसक ईमान ॥ ८६

अब तुममें कैसी विवेक-बुद्धि आई है तथा तुम्हें कैसी पहचान प्राप्त हुई है ? कैसे नश्वर भूमिमें भी तुम्हें अखण्ड परमात्माकी पहचान हुई है, तथा कैसे तुमने उनके प्रेम और ज्ञानको प्राप्त किया है ?

जागत हो के नींद में, बिचारत हो के फरामोस ।
सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस ॥ ८७

जरा विचार तो करो कि तुम जागृत हो या नींदमें हो, तुममें विवेक है या बैसुधि है, क्या तुम जागृत होकर सीधी बात कर रही हो, तुम होशमें हो या बेहोशमें हो ?

विचार नींद में तो ना होए, जागे नींद रहे क्यों कर ।
विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हांसी दिल धर ॥ ८८

नींदमें होते हुए तो विचार ही नहीं किया जा सकता और जागृत होने पर फिर यह नींद कैसे रह सकेगी ? इस पर विचार करोगी तो यह आश्चर्यजनक लगेगा. वस्तुतः विचार करके तो देखो, यह नींदका खेल हँसीके लिए है.

आडा ब्रह्मांड देए के, ऐसी जुदागी कर ।
करत गुफ्तगोए हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर ॥ ८९

धामधनीने नश्वर ब्रह्माण्डको बनाकर ब्रह्मात्माओंसे पर्दा डाला और उनको वियोग देकर भी उनसे बातें की. इस प्रकार उन्होंने यह प्रभावशाली खेल बनाया है.

ना तो बैठे हो कदम तलें, पर लागत ऐसे दूर ।
हक आप इसक देखावने, करत आपन सों मजकूर ॥ ९०

अन्यथा तुम तो धामधनीके चरणोंमें ही बैठीं हो. परन्तु तुम्हें इतनी अधिक दूरीका अनुभव हो रहा है. अपने प्रेमका महत्त्व समझानेके लिए ही धामधनीने अपनी अङ्गनाओंसे परिचर्चा की.

हक का इसक बढ्या, इसक अपना जरा नाहें ।
जब दई इत बेसकी, तो इसक क्यों न आवे दिल माहें ॥ ९१

धामधनीने अपने तारतम ज्ञानसे यह अनुभव करा दिया कि उनका प्रेम ही महान् है. उनके समक्ष अपना प्रेम तो तनिक भी नहीं है. जब उन्होंने इस नश्वर जगतमें भी ब्रह्मज्ञान दे दिया तो फिर हमारे हृदयमें प्रेम क्यों अङ्कुरित नहीं होता ?

तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर ।
ना कछू रही सो अकल, तो इसक आवे क्यों कर ॥ ९२

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम यह कहोगी कि हम मायामें बेसुध पड़ीं थीं. हमारे हृदयमें कोई भी सुधि नहीं थी. हममें अपनी मूलबुद्धि भी नहीं थी तो फिर हमारे हृदयमें प्रेम कैसे उत्पन्न हो सकता ?

ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुफ्तगोए ।
ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए ॥ ९३

उस समय हममें न अपनी सुधि रही और न ही अपने धनीकी. साथ ही न अपने घरकी सुधि रही और न ही धामधनीसे हुई परिचर्चाकी सुधि रही. हम तो जीवित होते हुए भी मृतक समान थीं. इसलिए हमारी आत्मामें कैसे शक्ति आ सकती थी ?

आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम ।
बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम ॥ ९४

हे ब्रह्मात्माओ ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम खेलमें आकर स्वयंको, धामधनीको तथा अपने परमधामको ही भूल गईं हो. परन्तु यह भी तो निश्चित है कि धामधनीने तुम्हें दिव्य तारतमज्ञान भी दिया है.

मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक ।
सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक ॥ ९५

तुम यहाँ पर (अज्ञानताके कारण) मृतककी भाँति (मूर्च्छित) भी रही और (ज्ञान प्राप्तकर) जागृत (जीवित) भी हुईं. तुम्हें सद्गुरुने विवेक भी दिया है और ब्रह्मज्ञान भी दिया है.

तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार ।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार ॥ ९६

जबसे तुम्हें तारतम ज्ञानकी सुधि प्राप्त हुई तभीसे तुम निश्चय ही सचेत भी हो गईं थीं. धामधनीने तुम्हें ऐसे निःसन्देह बना दिया कि तुम्हारी सभी शङ्काएँ दूर हो गईं.

इनहीं बात की हांसी है, उडत ना फरामोस ।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस ॥ ९७

अब तो हँसीका यही कारण है कि तुम्हारी नींद दूर नहीं हो रही है. अन्यथा इस प्रकार निःसन्देह होने पर सुधि क्यों नहीं आती ?

एही हांसी इसही बात की, फरामोसी में जागृत ।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इसकें करी जो इत ॥ ९८

इतना समझ लो बस इसी बातकी हँसी है कि हम नींदमें जागृत नहीं हुई हैं. वैसे तो हमारे जागृत होनेमें कोई सन्देह नहीं है. किन्तु धामधनीके प्रबल प्रेमके कारण ही हमारी यह स्थिति बनी हुई है.

बैठाए बेसक अरस में, और जगाए बेसक ।
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इसक ॥ ९९

निश्चय ही धामधनीने जागृत कर हमें परमधाममें बैठी हुई अनुभव करवाया. इधर मायामें रहते हुए हृदयमें प्रेम जागृत न होनेसे हँसी भी निश्चय ही हो रही है.

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो वरतत ।
सो सब इसक हक का, पल पल मेहेर करत ॥ १००

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! प्रतिक्षण तुम्हारे साथ जो व्यवहार हो रहा है वह सब धनीके प्रेमका ही प्रतिफल है. वे तुम पर प्रतिपल कृपाकी वर्षा कर रहे हैं.

प्रकरण १२ चौपाई ७०५

बुलाए ल्याओ तुम रूह अल्ला (हे श्यामा ! तुम आत्माओंको बुला लाओ)

ल्याओ बुलाए तुम रूह अल्ला, जो रूहें मेरी आसिक ।
रबद किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक ॥ १

परमधाममें पूर्णब्रह्म परमात्माने अपनी आनन्द अङ्ग श्यामाजीसे कहा, तुम संसारमें जाकर मेरी प्रिय आत्माओंको जागृतकर ले आओ. प्रेमके लिए ही उनसे परिचर्चा हुई थी. अब उनको कहना कि धामधनीने ही यह निमन्त्रण भेजा है.

रूह अल्लासों बका मिने, हकें करी मजकूर ।
उतरीं अरवाहें अरस से, बुलाए ल्याओ हजूर ॥ २

अखण्ड परमधाममें परब्रह्म परमात्माने श्यामाजीसे चर्चा की कि परमधामसे ब्रह्मात्माएँ नश्वर जगतमें अवतरित हुई हैं उन्हें बुलाकर मेरे पास ले आओ.

हक बका का बातून, जो किया रूहोंसों गुझ ।
केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ ॥ ३

सद्‌गुरुके रूपमें आकर श्यामाजीने इस प्रकार कहा, परमधाममें धामधनीने अपनी आत्माओंके साथ अपने हृदयकी जो रहस्यमयी बातें कीं थी वे ही गुप्त बातें उन्होंने मुझे एकान्तमें मिलकर तुम्हारे लिए कह भेजी है.

मैं वास्ता कहूं तुमको, उतरियां कारन इन ।
इनों रबद किया इसक का, आगूं मेरे बीच वतन ॥ ४

उन्होंने और कहा, ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें क्यों उतरी हैं ? उसका कारण मैं तुम्हें कह रही हूँ. इन्होंने परमधाममें मेरे सामने ही धामधनीसे प्रेमकी परिचर्चा की थी.

करी रूहों मसलहत मिलके, कहे हमको प्यारे हक ।
और बडी रूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक ॥ ५

सभी ब्रह्मात्माओंने मिलकर परस्पर परामर्श किया और कहा, हमें धामधनी अत्यन्त प्रिय हैं तथा श्यामाजी भी हमें अति प्रिय हैं, यह निश्चित समझना.

बडी रूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक ।
और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक ॥ ६

तब श्यामाजीने कहा, मेरे स्वामी महान् हैं. वे मुझे अति प्रिय हैं. तुम यह निश्चित जान लो कि मेरी अङ्गरूपा आत्माएँ भी मुझे प्रिय हैं.

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवें हक ।
बोहोत प्यारी बडी रूह मुझे, मैं तुमारा आसिक ॥ ७

तब धामधनीने इस प्रकार कहा, तुम (आत्माएँ) मेरे अङ्गके ही प्रकाश

स्वरूपा हो. तुम सबमें शिरोमणि श्यामा भी मुझे अति प्रिय है. मैं तुम सबका प्रेमी (चाहक) हूँ.

प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक ।
इसक हमारा हसकों, क्या नहीं हक माफक ॥ ८

यह सुनकर ब्रह्मात्माओंके मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ कि क्या सचमुच धामधनीका प्रेम हम सबसे अधिक है, क्या धामधनीके प्रति हमारा प्रेम उनके समान नहीं है ?

और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको ।
और प्यारी बडी रूह, जरा सक नहीं इनमों ॥ ९

ब्रह्मात्माओंने पुनः कहा, धामधनी हमें अत्यन्त प्रिय हैं तथा श्रीश्यामाजी भी हमें प्रिय हैं. इस बातमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है.

तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमकों ।
पर मैं आसिक अरवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों ॥ १०

यह बात सुनकर धामधनीने कहा, 'ठीक है कि मैं तुम्हें अति प्रिय हूँ किन्तु मैं अपनी आत्माओंका चाहक (आशिक) हूँ, तुममें-से कोई भी यह बात नहीं जानती.'

तुम ज्यादा प्यार कह्या अपना, हादी कहे मेरा अधिक ।
मैं कह्या प्यार मेरा ज्यादा, तब तुमें उपजी सक ॥ ११

हे ब्रह्मात्माओ ! तुमने अपना प्रेम सर्वाधिक कहा. श्यामाने भी अपना प्रेम सर्वाधिक बताया. फिर मैंने कहा कि मेरा प्रेम सबसे अधिक है. तब तुम्हारे मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ.

तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत के बीच एक ।
इसक बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक ॥ १२

तुम सभी ब्रह्मात्माएँ मेरे अङ्गके प्रकाश स्वरूप हो तथा मेरे अद्वैत स्वरूपमें एक ही हो. इसलिए अखण्ड परमधाममें प्रेमके न्यूनाधिक्य (कम-ज्यादा) का निरूपण कैसे हो सकता है ?

तुम बडा इसका कह्या अपना, मेरा न आया नजर ।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर ॥ १३

तुम सभी आत्माओंने अपना प्रेम अधिक कहा. मेरा प्रेम तुम्हारी दृष्टिमें आया ही नहीं. इसीलिए तुम्हें यह नश्वर खेल दिखाया कि अब तुम विवेक पूर्वक इसे परख सको.

ए बेवरा बीच बका मिने, इसक का न होए ।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बकामें सोए ॥ १४

वस्तुतः अखण्ड परमधाममें प्रेमका निरूपण नहीं हो सकता. इसलिए ब्रह्मात्माओंको यह वियोग दिया गया क्योंकि वहाँ पर इसी प्रकारकी परिचर्चा हुई थी.

छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम ।
देखो कौन आवे दौड अरस में, लेएके इसक खसम ॥ १५

धामधनीने ब्रह्मात्माओंको अपनी कृपाकी छत्रछायामें छिपाया और नश्वर जगतका यह खेल भी दिखाया.उन्होंने सचेत करते हुए यह भी कहा कि अपने धनीका प्रेम लेकर सर्वप्रथम दौड़ती हुई कौन आत्मा परमधाममें आ पहुँचेगी ?

रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत ।
ढूंढे अव्वल आखर लग, तो हक काहूं न पाइयत ॥ १६

उस समय धामधनीने यह कहा, हे ब्रह्मात्माओ ! मैं तुम्हें ऐसा खेल दिखाने जा रहा हूँ. जहाँ पर स्वप्नके जीव स्वप्नके ही देवोंकी पूजा करते हैं. उन्होंने सृष्टिके आरम्भसे लेकर अन्त तक खोज की परन्तु कहीं भी सत्य परमात्माको नहीं पाया.

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पूजात ।
अरस साहेब कायम की, काहूं सुपने न पाइए बात ॥ १७

ब्रह्मात्माएँ भी ऐसी मिथ्या भूमिमें आकर उलझ गईं और यहाँके जीवोंकी भाँति पानी, पत्थर तथा आगकी पूजा करने लगीं. यहाँ पर परब्रह्म तथा अखण्ड धामकी चर्चा स्वप्नमें भी नहीं होती.

आइयां तिन आलममें, जित हक को न जानत कोए ।
पूजे खाहिस हवाए को, जो कोई इनमें बुजरक होए ॥ १८

ब्रह्मात्माएँ ऐसे जगतमें अवतरित हुई हैं जहाँ पर परब्रह्म परमात्माको कोई जानता ही नहीं. इनमें जो कोई समझदार कहलाते हैं वे भी अपनी इच्छानुसार शून्यकी उपासना करते हैं.

झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन ।
कबीला कर बैठियां, कहे एह हमारा वतन ॥ १९

ब्रह्मात्माएँ भी नश्वर खेलके खिलौने समान इन जीवोंमें मिल गईं. वे इस नश्वर जगतमें अपना परिवार बनाकर बैठ गईं और कहने लगीं कि यह जगत ही हमारा घर है.

समझाइयां समझे नहीं, माने नहीं फुरमान ।
कहे कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान ॥ २०

विभिन्न प्रकारसे समझाने पर भी वे समझतीं नहीं हैं. परमात्माके सन्देशको भी नहीं मानती. वे कहतीं हैं कि तुम कौन हो ? हम कौन हैं ? आपकी और हमारी पहचान ही कैसी है ?

ए सोई हमारा साहेब, जो बडकों दिया बताए ।
ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड्या न जाए ॥ २१

हमारे पूर्वजोंने जो बताया है वे ही हमारे इष्टदेव हैं. भले ये पत्थर, पानी, अग्नि क्यों न हों ? किन्तु हमसे इनकी पूजा नहीं छूट सकती.

बडके हमारे कदीम के, पूजत आए ए ।
सो क्यों छूटे हमसे, रब बाप दादों का जे ॥ २२

हमारे पूर्वज चिरकालसे इनकी पूजा करते आए हैं. हमारे पिता तथा पितामहने जिनको परमात्मा माना है वे हमसे कैसे छूट सकते हैं ?

रब रसूल बतावें गैबका, हम पूजें जाहेर ।
हम बातून को पोहोंचे नहीं, देखें नजर बाहेर ॥ २३

रसूल मुहम्मदने परोक्ष परमात्माकी गूढ़ बातें की है किन्तु हम तो प्रत्यक्षकी

पूजा करते हैं. गूढ़ रहस्य पर्यन्त हम नहीं पहुँचते, हम तो बाह्यदृष्टिसे ही देखते हैं.

केतीक करें लडाइयां, सामी देवें फरेब ।
कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब ॥ २४

इस प्रकार नश्वर जगतके मानवोंमें-से कितने परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं, कितने देखते-देखते दूसरोंको धोखा देते हैं. वे कहते हैं कि रसूल कौन हैं, रूहअल्लाह कौन हैं एवं वेद तथा कतेब क्या हैं ?

इन हाल जो दुनियां, ए गइयां तिनमें मिल ।
मोहे इसक बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुसकिल ॥ २५

धामधनी कहते हैं, नश्वर जगतके मानवोंकी यह स्थिति है. उनमें परमधामकी आत्माएँ भी आकर मिल गईं. उनके लिए यही कठिनाई है कि वे मुझे प्रेमके बिना प्राप्त कर नहीं सकतीं.

कठिन हाल है रूहोंका, पर तुम विरचो जिन ।
भूल गइयां उनें सुध नहीं, हांसी एही मोमिन ॥ २६

ब्रह्मात्माएँ तो कठिन परिस्थितिमें हैं किन्तु हे श्यामा ! तुम उदासिन मत होना. वे तो सब कुछ भूल गईं हैं. उनको किसी भी प्रकारकी सुधि नहीं है. ब्रह्मात्माओं पर इन्हीं बातोंकी हँसी होगी.

बडी हांसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन ।
खेल खुसाली इत होएसी, इसक बेवरे इन ॥ २७

जागृत होने पर जब सब कुछ प्रकट होगा तब उनकी बड़ी हँसी होगी. अपने प्रेमकी पहचान प्राप्त होने पर खेलकी घटनाओंको याद करते हुए उनमें परस्पर उपहासकी प्रसन्नता छा जाएगी.

एक रोसी एक हंससी, होसी खूबी बडी खुसाल ।
बिना इसक बीच अरस के, कोई देखे न नूरजमाल ॥ २८

उस समय कोई अपने भूलोंका स्मरण करती हुई पश्चात्तापकी आँसू बहाएगी. तो कोई दूसरोंकी भूल पर हँसने लगेगी. इस प्रकार बड़ा आनन्द विनोद

छा जाएगा. यह निश्चित है कि प्रेमके बिना कोई भी ब्रह्मात्मा अक्षरातीत धनीके दर्शन कर नहीं पाएगी.

रोसी इनहीं हालमें, वास्ते हांसी के ।
मुदा सब हांसीय का, फरामोसी का जे ॥ २९

ऐसी स्थितिमें ब्रह्मात्माएँ इसीलिए रोएँगी कि वे हँसीके पात्र बनी हुई हैं. वस्तुतः यह नींदका खेल हँसीके ध्येयको लेकर ही तो रचाया है.

रूहअल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस ।
जब इसक ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस ॥ ३०

हे श्यामा ! तुम ब्रह्मात्माको इतना तो अवश्य कहना कि तुमने यह नींदका खेल माँगा था. जैसे ही धनीका प्रेम तुम्हारे हृदयमें अधिक बढ़ने लगेगा तब तुम होशमें आओगी.

मैं छिपा हों इनसे, रूहें नजर में ले ।
वह देखत झूठा आलम, मोकों देखत नाहीं ए ॥ ३१

इन ब्रह्मात्माओंको अपनी दृष्टि समक्ष रखकर मैं स्वयं इनसे छिपा हुआ हूँ. इसलिए ये नश्वर जगतको देख रहीं हैं और मुझे देख नहीं पा रहीं हैं.

जब इसक इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको ।
इसक बिना इन खेल में, मैं मिलों नहीं इनसों ॥ ३२

जब इनके हृदयमें मेरे प्रति प्रेम उभर आएगा तब ये मुझे देख पाएँगी. प्रेमके बिना मैं इस जगतमें इनको प्राप्त नहीं हो सकता.

रबद रूहों ने हकसों, किया इसक का जोए ।
तो अरस में इसक बिना, पैठ न सके कोए ॥ ३३

ब्रह्मात्माओंने अपने धनीसे प्रेमके विषयमें ही तो परिचर्चा की थी. इसलिए हृदयमें प्रेम उभरे बिना कोई भी परमधाममें प्रवेश नहीं कर सकती.

इनों रबद किया इसक का, हम जैसा हक का नाहें ।
दई फरामोसी इन वास्ते, देखो कैसा इसक इनों माहें ॥ ३४

इन ब्रह्मात्माओंने प्रेमके विषयमें परिचर्चा करते हुए कहा था कि हमारा जैसा

प्रेम धामधनीका नहीं है. इसलिए इनके मन पर नींदका आवरण डाल दिया. अब देखें इनमें अपने धनीके प्रति कैसा प्रेम है ?

ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें ।
काहूं तरफ न पाइए अरस की, बैठे बका बैत के माहें ॥ ३५

इन्हें ऐसा जगत दिखाया कि जहाँ पर परमात्माको कोई जानता ही नहीं है. इसलिए परमधाममें बैठी हुई होने पर भी इनको परमधामकी कोई दिशा नहीं मिल रही है.

पार ना अरस जिमीय का, बैठियां कदम तले इत ।
ऐसा पट आडा किया, जानूं कहूं गइयां हैं कित ॥ ३६

परमधामकी भूमिका कोई पारावार नहीं है. इसी दिव्य धाममें ब्रह्मात्माएँ मेरे चरणोंमें बैठीं हैं. किन्तु उनके मन पर ऐसा आवरण डाला गया है कि ये स्वयंको कहीं अन्यस्थान (मायानगरी) में गई हुई समझने लगीं.

जब याद तुमें मैं आऊंगा, तबहीं बैठोगे जाग ।
गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग ॥ ३७

हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने यह भी कहा, जब 'तुम्हें मेरी याद आएगी तभी तुम जागृत होकर स्वयंको परमधाममें ही बैठी हुई पाओगी.' वस्तुतः किसीका भी आना या जाना नहीं हुआ है. सभी आत्माएँ परस्पर मिल (सट) कर बैठी हुईं हैं.

मैं लाड किया रूहन सों, वास्ते इसक इन ।
क्यों ना लें मेरा इसक, अंग असलू मेरे तन ॥ ३८

प्रेमकी परीक्षाके लिए ही मैंने अपनी आत्माओंसे यह लाड़ (प्यार) किया है. इसीलिए ये मेरे प्रेमको कैसे ग्रहण नहीं करेंगी. इनका मूलस्वरूप (परआत्मा) मेरा ही तो अङ्ग है.

बोहोत लाड किए मुझसों, इनों अरस में मिल ।
एक लाड किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल ॥ ३९

इन सभीने मिलकर परमधाममें मुझसे अनेक बार हाँस-विनोद (लाड़) किया

है. मैंने तो इनसे मात्र एक ही बार हाँस-विनोद (लाड़) किया है. वह भी इन सभीके हृदयके प्रेमको जाननेके लिए.

मैं फुरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन रसूल ।
इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल ॥ ४०

मैंने इनके लिए पहलेसे ही रसूल मुहम्मदके हाथ अपना सन्देश भेजा है. (हे श्यामा !) पुनः इनके लिए मैंने सद्गुरु (इमाम) बनाकर तुम्हें भेजा है. ताकि ये आत्माएँ मायामें भूल न जाएँ.

याद दीजो अरवाहों को, जो मैं करी खिलवत ।
सोए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत ॥ ४१

हे श्यामा ! ब्रह्मात्माओंको यह स्मरण कराना कि मैंने एकान्तमें उनके साथ जो बातें की थी उन्हींका रहस्य सङ्केतरूपमें लिखकर कुरानके द्वारा भेजा गया है.

अव्वल बातें जो अरस की, जाए कहियो तुम ।
फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम ॥ ४२

तुम ब्रह्मात्माओंको यह कहना कि परमधाममें पहले जो चर्चा हुई है उसीकी यथार्थता (वास्तविकता) लिखकर मैंने सन्देशके रूपमें पहलेसे ही भेजा है.

बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन ।
तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन ॥ ४३

परमधाममें हुई वह चर्चा जब (तारतमज्ञानके द्वारा) प्रकाशित हो जाएगी तब मेरी ब्रह्मात्माएँ तत्काल उस पर विश्वास कर लेंगी.

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर ।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर ॥ ४४

तुम उनके बीच जाकर मेरा यह ज्ञान प्रकाशित कर दो. मैं तुम्हारे प्राणनलीसे भी अति निकट हूँ और तुम भी परमधामसे बाहर नहीं हो.

तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गइयां नाहीं दूर ।
ए याद करो इन इसक को, जो अपन करी मजकूर ॥ ४५

तुम वस्तुतः मेरे चरणकमलोंके निकट बैठीं हो, कहीं अन्यत्र दूर गईं नहीं हो. तुम उस प्रेमका स्मरण कर लो, जिसके विषयमें हमने चर्चा की थी.

इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साइत ।
चार घडी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुदत ॥ ४६

परमधाममें जो भी प्रेम परिचर्चा हुई है अब भी वही घड़ी है. अपराह्नमें चार घड़ी दिनके शेष रहते हुए यह चर्चा हुई है. किन्तु तुम्हें दीर्घ कालके व्यतीत होनेकी प्रतीति हो रही है.

जो रबद किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन ।
रात दिन ना पल घडी, सोई बात सोई छिन ॥ ४७

यहाँ (परमधाममें) जिस स्थान पर बैठकर प्रेमकी परिचर्चा हुई है. अभी भी तुम इसी स्थानमें बैठी हुईं हो. रात-दिन, पल या घड़ी कुछ भी व्यतीत नहीं हुआ है. अभी भी वही क्षण है तथा वही चर्चा हो रही है.

याही अजमाइस वास्ते, खेल देखाया ए ।
जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौडसी इसक ले ॥ ४८

मात्र इसी प्रेमकी परीक्षाके लिए यह खेल दिखाया है जब मेरे ज्ञान (तारतमज्ञान) से ब्रह्मात्माएँ निःशङ्क हो जाएँगी तब हृदयमें प्रेम धारण कर उसी समय दौड़तीं हुईं आएँगी.

नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन ।
सुनते मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन ॥ ४९

इन ब्रह्मात्माओंको मेरा नाम अथवा अपना घर परमधाम तथा वहाँ पर आत्माओंके मिलनकी बात सुनते ही अपने मूल स्वरूप (पर आत्मा) का स्मरण हो आएगा.

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक ।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इसक ॥ ५०

वस्तुतः परमात्मा तथा सद्गुरुके प्रति जिन ब्रह्मात्माओंका सन्देह मिट जाएगा अथवा जो अपने धामके प्रति भी सन्देह रहित हो जाएँगी उनको भला मेरा प्रेम क्यों स्मरण नहीं आएगा ?

सांच झूठ में मिल गइयां, तुरत होसी तफावत ।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत ॥ ५१

सत्य आत्माएँ स्वप्नवत् मायाके जीवोंके साथ मिलकर उनके समान बन गईं हैं. अब उन दोनोंका अन्तर तत्काल स्पष्ट हो जाएगा. तारतम ज्ञान मेरी ऐसी निधि है कि वह पलमात्रमें सबको सन्देह रहित बना देगी.

अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन ।
अव्वल फरामोसी देए के, इलमें खोले दीदे बातन ॥ ५२

ब्रह्मात्माओंकी परीक्षाके लिए ही परब्रह्मने नश्वर जगतका खेल दिखाया. पहले नींदका आवरण देकर इस खेलमें भेजा, फिर तारतम ज्ञानके द्वारा उनकी अन्तर्दृष्टि खोल दी.

बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक ।
तुम बैठे बीच अरस के, कदम तले बेसक ॥ ५३

अन्तर्दृष्टि खुल जाने पर यह ज्ञात हुआ कि परमात्मा तो प्राणनलीसे भी अति निकट हैं तथा तुम स्वयं परमधाममें उनके चरणोंके निकट ही बैठी हुई हो.

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ ॥ ५४

चौदह लोकोंमें किसीको भी अखण्ड धामकी दिशा तक नहीं मिली है. ऐसे परमधाममें हम धामधनीके चरणोंमें ही बैठी हुईं हैं. यह अनुभव करवानेकी क्षमता वस्तुतः तारतम ज्ञानमें ही है.

इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर ।
बेसक पेहेचान हक की, वरस्या बेसक बका नूर ॥ ५५

निश्चिय ही परब्रह्म परमात्माका यह ज्ञान संशयोंको दूर कर विवेक जागृत करने वाला है. इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इसीसे परमात्माकी पहचान होती है. इस प्रकार तारतमज्ञानके रूपमें सचमुच परमात्माके ही तेज (प्रकाश) की वर्षा हो रही है.

बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम ।
जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम ॥ ५६

ब्रह्मात्माओंको तारतमज्ञानके प्राप्त होने पर परमधामके अखण्ड सुखोंके प्रति नि:सन्देहता प्राप्त हुई है. इतना ही नहीं परब्रह्म परमात्माकी दृष्टिमें जो कुछ भी है उनके कण-कणके प्रति भी वे नि:सन्देह हो गईं हैं.

बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन ।
बेसक फुरमान रमूजें, पाई बेसक बका वतन ॥ ५७

इसी तारतम ज्ञानके प्रतापसे यह ज्ञात हुआ कि निश्चय ही ब्रह्मात्माओंने नींदका यह खेल देखा है. इसीके अन्तर्गत उन्हें कुरानके माध्यमसे परमधामके गूढ़ रहस्य सङ्केतके रूपमें प्राप्त हुए हैं.

बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत ।
बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उमत ॥ ५८

इसी ज्ञानके द्वारा उन्हें समर्थ परमात्माका धाम तथा उनकी प्रकृतिका ज्ञान प्राप्त हुआ. तब यह भी ज्ञात हुआ कि धामधनीके साथ प्रेम सम्वाद हुआ और उन्होंने धनीसे मायाका खेल देखनेकी माँग की.

बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर ।
बेसक रदबदल करी, हुआ बेसक इलम जहूर ॥ ५९

अब इसमें कोई सन्देह नहीं है कि धामधनीने यह खेल दिखाया है, जिसकी उन्होंने चर्चा की थी. हमने भी इसीके लिए वारंवार सम्वाद किया था. तारतमज्ञानने अब इन सभी बातोंको प्रकाशति कर दिया है.

बेसक जगाई फरामोस में, बेसक दे इलम ।
होसी रूहें बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम ॥ ६०

निश्चय ही धामधनीने तारतम ज्ञान प्रदान कर ब्रह्मात्माओंको अज्ञानकी नींदसे जागृत किया. अब अखण्ड धामकी ब्रह्मात्माएँ इस सन्देह रहित ब्रह्मज्ञानको प्राप्त कर निश्शङ्क हो जाएँगी.

भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए ।
क्यों ना लें इसक बेसक, कहाए बेसक संदेसे ॥ ६१

धामधनीने निश्चय ही आत्माओंको मायाके खेलमें भुलाया जिससे उनके प्रेमका निरूपण हो गया. अब उनका सन्देश प्राप्त करने पर भी ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें क्यों प्रेम धारण नहीं करेंगी ?

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक ।
इसक बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक ॥ ६२

यह निश्चित है कि धामधनीने अपनी आत्माओंको अपना सन्देश भेजा है. उन्होंने ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि श्यामाजीको भेजकर कहलाया कि तुम मेरा प्रेम हृदयमें धारण कर परमधाममें आ (जागृत हो) जाओ.

इसक रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इसक बेसक ।
सब थें इसक बढ्या, बेसक इसक जो हक ॥ ६३

अब यह निश्चित हो गया है कि ब्रह्मात्माओंका प्रेम कम है, उनसे अधिक प्रेम श्यामाजीका है और सबसे अधिक प्रेम श्रीराजजी (परब्रह्म) का है.

महामत कहे बेसक मोमिनो, बेसक बेवरा कमाल ।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इसक हाल ॥ ६४

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! प्रेमका यह निरूपण निश्चय ही अति महत्त्वपूर्ण है. क्योंकि इस अज्ञानकी नींदमें ही धामधनीके प्रेमकी स्थितिका अनुभव हो सकता है.

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अरस अपनी जान ।
पीउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! अपनी अङ्गना समझकर परब्रह्म परमात्माने तुम्हें जागृत करनेके लिए अपनी प्रिय अङ्गना श्यामाजीको (सद्गुरु बनाकर) भेजा. तुम अभी तक क्यों पहचान नहीं कर रही हो ?

अरवाहें जो अरस की, जो उरझियां माहें फरेब ।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब ॥ २

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ इस माया नगरीमें आकर उलझ गईं हैं. श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें आकर तारतमज्ञानके द्वारा वेद एवं कतेबकी यथार्थता स्पष्ट करते हुए अज्ञानके आवरणको दूर कर उनकी उलझनोंको दूर कर दिया.

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन ।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अरस मोमिन ॥ ३

परमधाममें श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें प्रेमकी परिचर्चा हुई. अपने प्रेमकी पहचान करवानेके लिए परमधाममें ही श्रीराजजीने ब्रह्मात्माओं पर नींदका आवरण डाला.

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए ।
ओ तुमें ना चीन्हहीं, ना तुमें ओ चिन्हाए ॥ ४

उस समय श्रीराजजीने कहा, हे ब्रह्मात्माओ ! मैं तुम्हें अपने संरक्षणमें ही छिपाकर रखते हुए ऐसा खेल दिखाऊँगा, जहाँ पर न वहाँके लोग तुम्हें पहचानेंगे और न ही तुम उनको पहचान सकोगी.

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले ।
पाओ ना अरस या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए ॥ ५

मैं तुम्हें अपनी दृष्टिमें समाकर तुमसे छिप जाऊँगा. जिससे तुम मुझे या परमधामको किसी भी दिशामें नहीं पा सकोगी.

ढूंढोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर ।
मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए ना खुले नजर ॥ ६

उस समय तुम बड़े विवेकके साथ मुझे ढूँढ़ने लगोगी किन्तु मुझे या मेरे धाम (परमधाम) को तुम प्राप्त नहीं कर पाओगी. किसी भी प्रकार तुम्हारी आत्म-दृष्टि नहीं खुलेगी.

आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करोगे माहों मांहें ।
ढूंढोगे माहें बाहेर, पर पावे ना कोई क्यांहें ॥ ७

उस समय तुम्हारी बाह्यदृष्टि खुली होगी और तुम परस्पर मेरी बातें भी करोगी. मुझे भीतर बाहर (पिण्ड-ब्रह्माण्डमें) सर्वत्र ढूँढ़ने लगोगी परन्तु तुममें-से कोई भी मुझे प्राप्त न कर सकोगी.

क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर ।
के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर ॥ ८

यह सुनकर ब्रह्मात्माओंने पूछा, हे धनी ! क्या आप हमें कहीं अन्यत्र भेजेंगे, यहाँसे दूर करेंगे, या अपने चरणोंके निकट बैठाकर यह खेल दिखाएँगे ?

इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस ।
सहूर करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस ॥ ९

तब धामधनीने कहा, तुम मेरे चरणोंके निकट ही बैठकर यह विनोदपूर्ण नींदका खेल देखोगी. तुम इसके अन्दर परस्पर विचार भी बहुत करोगी परन्तु होशमें नहीं आ पाओगी.

ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल चढ्या जोर ।
सो तुम क्योंए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर ॥ १०

तुम ऐसी बेसुध हो जाओगी कि मानों मायाका मद (नशा) पूर्णतः चढ़ गया हो. इसलिए तुम कुछ भी नहीं सुन पाओगी. तुम्हें जागृत करनेके लिए सद्गुरु वार-वार पुकार करेंगे.

ना तुमें अमल ना नींद कछू, पर ऐसा खेल हांसी का ए ।
खेलें हंसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे ॥ ११

वास्तवमें तुम्हें न कोई मद ही चढ़ा होगा और न ही नींद होगी. परन्तु हँसीके लिए रचाया गया यह खेल ही ऐसा होगा. तुम इसमें खेलोगी, हँसोगी, बातें भी करोगी परन्तु अपने धनी या धामकी याद नहीं आएगी.

ऐसा इलम हादी पे, देखावे हक वतन ।
आप पाओ पलमें जगावहीं, इन इलम आधे सुकन ॥ १२

सद्गुरुके पास ऐसा ज्ञान होगा जिससे परमधामके दर्शन हो सकेंगे. इतना ही नहीं इस ज्ञानका आधा शब्द भी इतना समर्थ होगा कि यह पलके चतुर्थांश मात्रमें आत्माको जागृत कर देगा.

जो हुए होवें मुरदें, तिनको देत उठाए ।
इन विध इलम लुदंनी, पर तुमें न सके जगाए ॥ १३

मृतक समान बने हुए संसारके जीवोंको भी यह ज्ञान जागृत कर सकेगा परन्तु आश्चर्यकी बात है कि इतना समर्थ तारतमज्ञान भी तुम्हें जागृत नहीं कर पाएगा.

ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर ।
ना सुध अरस न आपकी, कई ढूँढत सहूर कर ॥ १४

तुम ऐसा खेल देखोगी जहाँ पर किसीको भी परमात्माकी सुधि नहीं होगी. न उन्हें परमधामकी सुधि होगी और न स्वयंकी. ऐसे अनेक लोग परस्पर विचार-विमर्श करते हुए ढूँढ़ते रह जाएँगे.

ना सुध मेरी ना वतन की, आपुस में जाओगे भूल ।
ना सुध मेरे कागद की, ना सुध मेरे रसूल ॥ १५

तुम्हें न मेरी सुधि होगी और न ही परमधामकी, तुम तो एक दूसरेको ही भूल जाओगी. तुम्हें मेरे सन्देश तथा सन्देशवाहककी भी कोई सुधि नहीं होगी.

लिखी इसारतें रमूजें, निसान हकीकत ।
सुध कछू तुमें न परे, भूलोगे मेरी न्यामत ॥ १६

मैं तुम्हारी जानकारीके लिए परमधामके रहस्य तथा यथार्थता सङ्केतके रूपमें लिखकर भेजूँगा. तथापि तुम्हें इसकी कोई सुधि नहीं होगी. तुम तो मेरी अखण्ड सम्पदाको ही भूल जाओगी.

ऐसा फुरमान भेजसी, और याद देसी रसूल ।
जिन अंग इसक तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल ॥ १७

यह सुनकर ब्रह्मात्माओंने पूछा, हे धनी ! जब आप ऐसा सन्देश भेजेंगे और रसूल भी आपका स्मरण करवाएँगे तथापि जिनके हृदयमें आपका प्रेम भरा हुआ है उन आत्माओंकी यह दशा कैसे होगी ?

भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर ।
ए खेल देखे ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर ॥ १८

तब धामधनीने कहा, तुम निश्चय ही भूल जाओगी, मेरी पहचान तुम्हें नहीं होगी. वस्तुतः यह नश्वर खेल देखने पर ही ऐसा होगा कि तुम्हें न स्वयंकी सुधि होगी और न ही अपने घरकी.

एक दूजी आपुसमें, रहे ना रूह चिन्हार ।
ना चीन्हो बडी रूह को, ना कछू परवरदिगार ॥ १९

तुम्हें परस्पर एक दूसरेकी पहचान भी नहीं होगी. तुम न अपने शिरोमणि श्यामाजीको पहचान पाओगी और न ही अपने परमात्माको पहचानोगी.

रूहें कहें हांसी होसी अति बडी, तुम हूजो सब हुसियार ।
क्योंए न भूलें आपन, जो खेल जोर करे अपार ॥ २०

अपन सामी हांसी करें हकसों, चले ना खेल को बल ।
अपन आगूं चेतन हुइयां, रहिए एक दूजी हिलमिल ॥ २१

यह सुनकर ब्रह्मात्माएँ परस्पर कहने लगीं, हे आत्माओ ! अब अपनी बड़ी हँसी होगी, तुम सब सचेत हो जाओ. यह खेल कितना ही अपना प्रभाव दिखाए किन्तु हम किसी भी प्रकार नहीं भूलेंगी. हम तो उलटा धामधनीकी

ही हँसी करेंगी. इस खेलका प्रभाव हम पर नहीं पड़ेगा. हम तो पहलेसे ही सचेत हो गई हैं अब परस्पर मिलजुलकर रहेंगी.

जब आगूं से खबर करी, क्या करे फरेब असत ।
इसक हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत ॥ २२

जब धनीने हमें पहलेसे ही सचेत कर दिया है तो यह मिथ्या जगत हमारा क्या बिगाड़ सकेगा, उस समय हमारा प्रेम कहाँ चला जाएगा, क्या वह भी हमारी सहायता नहीं करेगा ?

इसक का बल भांन के, क्या फरेब होसी जोर ।
निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर ॥ २३

हमारे प्रेमकी शक्तिको प्रभावहीन बनाकर क्या यह मिथ्या जगत हम पर प्रभावी हो जाएगा, अपने धामधनीके साथके सम्बन्धको क्या यह मोड-तोड दे देगा ?

दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठें पकड हक चरन ।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन ॥ २४

हम कहीं दूर तो नहीं जा रहीं हैं, अपने धनीके चरण पकड़कर ही बैठीं हुई हैं. जब हम पहलेसे ही सचेत हो गईं हैं तो फिर यह विस्मृति हम पर क्या प्रभाव डाल सकेगी ?

कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए ।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए ॥ २५

फिर ब्रह्मात्माओंने एक दूसरीको कहा, तुम निकट आकर बैठ जाओ. परस्पर कोई भी अलग न होना, एक दूसरीसे सटकर बैठ जाओ.

हाथों हाथ न छोडिए, लग रहिए अंगों अंग ।
इन विध एक दिल राखिए, कोई छोडे ना काहूं को संग ॥ २६

एक दूसरीका हाथ नहीं छोडना, परस्पर सटकर बैठी रहो. इस प्रकार हृदयको भी एक बनाकर रखना, कोई किसीका साथ न छोड़े.

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होंवें क्यों कर ।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर ॥ २७

सदैव हमारा मन एक रहता है फिर हम कैसे अलग हो जाएँगी ? धामधनी तो पूर्वसे ही सचेत कर हमें खेल दिखा रहे हैं.

अंग जुदे ना होए सके, तो क्यों होए जुदे दिल ।
एक जरा जुदे ना होए सके, अंग यों रहें हिलमिल ॥ २८

जब हमारे शरीर ही एकदूसरेसे अलग नहीं होंगे तो हमारा मन कैसे अलग हो जाएगा ? हमारे तन, मन ऐसे एकाकार हो गए कि अब हमारा कुछ भी अलग नहीं हो सकेगा.

रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए ।
इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए ॥ २९

इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ पुनः एक दूसरीको कहने लगीं कि कोई भी अपने अङ्गोंको एक दूसरीसे अलग न करे. सभी इस प्रकार लिपटकर रहो मानों सब एक ही तन हों.

रूहें रबद कर बैठियां, जाने सामी हांसी करें हकसों ।
पर हकें हांसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों ॥ ३०

इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ परस्पर सम्वादकर बैठ गईं और समझने लगीं कि हम उलटा धनीकी ही हँसी करेंगी. परन्तु धामधनीने ऐसी हँसी की कि उनमें परस्पर किसीको भी सुधि नहीं रही.

एक वजूद होए बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए ।
कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए ॥ ३१

ब्रह्मात्माएँ एक तन होकर बैठीं थीं परन्तु इस मिथ्या खेलमें आते ही वे भूल गईं. इस खेलने उनका हृदय ऐसा उलटा दिया कि उनके मन, वचन एवं कर्म सब अलग ही हो गए.

जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए ।
सब बैठियां अंग लगाए के, खेले कहूं दइयां उलटाए ॥ ३२

इस जगतमें आते ही वे अलग-अलग जातियोंमें बँटकर अलग-अलग रीति-रिवाजोंको अपनाने लगीं. उनका अवतरण भी भिन्न-भिन्न स्थानोंमें हुआ है. भले ही परमधाममें वे सटकर बैठीं है किन्तु इस खेलने उन्हें पूर्णरूपेण उलटा दिया है.

जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर ।
जानें इत हम कदीम के, जुदे होवें क्यों कर ॥ ३३

वे भिन्न-भिन्न परिवारोंमें (बँटकर) अपना घर बनाकर बैठी है. उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि हम चिरकाल से ही इसी संसारमें हैं, इसलिए इससे अलग कैसे हो सकतीं हैं ?

सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना ।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना ॥ ३४

इस नश्वर संसारके परिवार भी इतने स्वार्थी हैं कि यहाँ पर सङ्कटके समय कोई भी अपना नहीं रहता. स्वयंकी संतानें भी समय आने पर अपना रंग बदल देती हैं. स्वप्नकी भाँति यहाँ पर सभी परिवर्तनशील (नश्वर) हैं.

रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिनें पेहेचान ।
याद बिना जात मुदत, काहूं सुपने न आवें सुभान ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंको भी एक दूसरेकी सुधि नहीं है और न ही परस्पर कोई पहचान है. धामधनीके स्मरण बिना ही उनका समय व्यतीत हो रहा है. स्वप्नमें भी किसीको धामधनी याद नहीं आते.

खेल तो है एक छिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत ।
कई कुरसी हुई कई होएसी, गइयां भूल मूल सोहोबत ॥ ३६

यह स्वप्नका खेल वास्तवमें क्षणमात्रका है, इसमें भूली हुई आत्माएँ यह समझतीं हैं कि दीर्घकाल व्यतीत हो गया है. ऐसी अनेक पीढ़ी (कुरसी) चली गईं और अनेक चली जाएँगी. वे सभी अपने मूल सम्बन्धको ही भूल गईं हैं.

आइयां झूठे कबीले में, भूल गइयां बका वतन ।
सुख अरस अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन ॥ ३७

ब्रह्मात्माएँ भी इन मिथ्या परिवारिक बन्धनोंमें उलझकर अखण्ड धामको भूल गईं. हाय, यह संसार कैसा छलपूर्ण है जिसने ब्रह्मात्माओंको भी धोखा दे दिया.

तिन कबीलेमें रेहेना, पूजें पानी आग पत्थर ।
बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर ॥ ३८

यहाँ पर ब्रह्मात्माओंको ऐसे परिवारमें रहना पड़ा जो आग, पानी तथा पत्थरकी पूजा करते हैं. ये अविश्वासी लोग ऐसे अविवेकी हैं कि जान बूझ कर नरकाग्निमें जलते हैं.

बडके फना हो गए, और हाल होत फना ।
आखर फना सब पीछले, जाए गिनते रात दिना ॥ ३९

इनके पूर्वज भी इसी प्रकार मिट गए और ये लोग भी चले जा रहे हैं. भविष्यकी इनकी पींढ़ी भी रात दिन गिनतीकी आयु व्यतीतकर अन्तमें चली जाएगी.

कहें हमको इन वतनमें, मौत आवेगी अब ।
नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब ॥ ४०

इस जगतके ये लोग यह भी कहते हैं कि हमारी मृत्यु निश्चित आने वाली है. हमारे लाभ तथा हानिका निर्णय भी हो गया है. न जाने अब इस प्रकार पुनः कब जन्म लेंगे.

ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान ।
जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान ॥ ४१

अपनी मृत्यु निश्चित है यह जानकर भी वे जीवनको व्यर्थ (हानि) गँवा रहे हैं. परमात्माके सन्देशरूप ज्ञानोपदेश सुनने पर भी जागृत होकर जीवनका लाभ उठा नहीं पाते.

उमर खोवें नुकसानमें, पर करें नाहीं सहूर ।
याद न करें तिनको, जिनका एता बडा जहूर ॥ ४२

अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत कर रहे हैं, लाभ हानि पर विचार भी नहीं करते. वे उन परमात्माको याद भी नहीं करते जिनकी लीलाका इतना बड़ा प्रकाश फैला हुआ है.

कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर ।
जो हम अब भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर ॥ ४३

यहाँ पर हिन्दू यह कहते हैं कि हम मृत्युके उपरान्त पुनः जन्म धारण करेंगे. यदि इस जन्ममें परमात्माको भूल गए तो अन्य जन्मोंमें उनको याद कर जीवन सफल बनाएँगे.

खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत ।
सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित ॥ ४४

वस्तुतः मायाका यह खेल ही ऐसा है कि यहाँ पर सभी लोग शून्य-निराकारकी पूजा करते हैं. हिन्दू या मुसलमान दोनोंको ही यह सुधि नहीं हुई है कि अखण्ड परमधामका आनन्द कहाँसे प्राप्त होता है ?

ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक ।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक ॥ ४५

यहाँ पर अनेक महानुभाव हो गए हैं, उनमें-से किसीने भी यह निश्चय नहीं किया कि आनन्दका श्रोत कौन-सा है. उन्होंने ज्ञानकी जितनी भी बातें कीं उनमें सन्देह बना रहा.

ए दुनियां इन विध की, ताए एती सुध सबन ।
हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन ॥ ४६

संसारके ये जीव इसी प्रकारके हैं, इन सभीको इतना ही ज्ञान है कि हम सभी नश्वर जगतमें हैं और अखण्ड परमधामको किसीने भी प्राप्त नहीं किया.

एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम ।
आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम ॥ ४७

संसारके इन लोगोंको यह भी ज्ञान नहीं है कि हम कौन हैं और कहाँसे आए हैं ? हम कैसे छलपूर्ण संसारमें आए हैं और यह जगत किसके आदेशसे उत्पन्न हुआ है ?

सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित ।
सो किनहूं न पाइया, ताए खलक गई खोजत ॥ ४८

प्राय: सभी यही कहते हैं कि यह संसार परमात्माके आदेशसे बना है. किन्तु जिसने आदेश दिया है वह परमात्मा कहाँ है ? उसको किसीने भी प्राप्त नहीं किया. सृष्टिके सभी लोग उनको खोजते ही रह गए.

अवतार तीथंकर बडे हुए, बडे कहावें पैगंमर ।
पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कह्या खुले आखर ॥ ४९

इस जगतमें अनेक अवतार, तीर्थङ्कर तथा पैगम्बर हो गए हैं परन्तु उनमें-से किसीने भी अखण्डका द्वार नहीं खोला. उन सभीने यही कहा अन्तिम (आत्म-जागृतिके) समयमें ये द्वार खुलेंगे.

सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त ।
मिटी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत ॥ ५०

यहाँके सभी मानव अपनी इच्छाओंकी पूर्तिके लिए इन नश्वर वस्तुओंकी ही पूजा करते हैं एवं मिट्टी, आग, पानी तथा पत्थरकी ही महिमा गाते हैं.

झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत ।
ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेलें दिलमें न आवत ॥ ५१

मिथ्या जगतके जीव नश्वर वस्तुओंमें ही मग्न रहते हैं. इनका हृदय सत्यको प्राप्त नहीं कर सकता. ये लोग सत्यको ग्रहण ही कैसे कर सकते जब उनके मनमें सत्यकी कोई इच्छा ही नहीं होती.

नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर ।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर ॥ ५२

मृत्युलोकसे लेकर वैकुण्ठ पर्यन्त ही इनकी दृष्टि पहुँच सकती है. धर्मग्रन्थोंको पढ़ने पर भी ये कहते हैं कि हमें इससे आगेकी सुधि नहीं है.

इन विध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें ।
कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें ॥ ५३

सभी धर्मग्रन्थ तो यह कहते हैं कि अन्तर्दृष्टिको खोलकर अखण्ड वस्तुको देखनेका प्रयत्न करो. जो कुछ कानोंसे सुन रहे हो अथवा आँखोंसे देख रहे हो वह सब अनित्य है.

जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए ।
हम छोडें ना कदीम का, जो बडकों पूज्या इमदाय ॥ ५४

यह सब जानते हुए भी यहाँके मानव नश्वर वस्तुकी ही पूजा करते हैं और कहते हैं कि यही हमारा ब्रह्म है. हमारे पूर्वजोंने जिसकी आदिकालसे पूजा की है उस पुरातन देवको हम छोड़ नहीं सकते.

इसक लगावें तिनसों, जो दुख रूपी दिन रात ।
कायम सुख अरस का, कहूं सुपने न पाइए बात ॥ ५५

ऐसे लोग उन वस्तुओंसे प्रेम करते हैं जो दिन-रात दुःखरूप हैं. अखण्ड परमधामके शाश्वत् सुखोंकी बात (कल्पना) उन्हें स्वप्नमें भी नहीं आती.

ऐसी देखाई दुनियां, जाने सांच है हमेसगी ।
सांचो बिचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी ॥ ५६

हमारे प्रियतम परमात्माने ऐसा स्वप्नवत् संसार दिखाया जिसे ये लोग सत्य मान रहे थे. जब उनको भी तारतम ज्ञानके द्वारा सत्यका परिचय दिया तब इस नश्वर जगतके जीवोंको जगतकी नश्वरताका ज्ञान होने लगा.

हुई रात अंधेरी फरेब की, फिरत चिरागें दोए ।
आप अरस हक की, इन से खबर न होए ॥ ५७

इस नश्वर जगतमें अज्ञानकी रात्रि छायी हुई है. उसको प्रकाशित करनेके लिए

सूर्य और चन्द्र दो ग्रह परिभ्रमण कर रहे हैं. किन्तु इन दोनोंके प्रकाशसे आत्माकी, परमधामकी तथा परब्रह्म परमात्माकी सुधि नहीं होती.

दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत ।
आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत ॥ ५८

संसारके लोगोंने इन्हीं ग्रहोंको प्रकाशपुञ्ज समझ रखा है. परन्तु इनके प्रकाशसे आत्मा, परमात्मा तथा परमधामकी सुधि नितान्त (बिलकुल) नहीं हो सकती.

ढूंढ थके सब अरस को, चौदे तबकों न पाया किन ।
रात फना को छोड के, किन देख्या न सूर रोसन ॥ ५९

नश्वर जगतके जीव अखण्ड परमधामकी खोज करते हुए थक गए परन्तु चौदह लोकोंमें कहीं भी उन्हें अखण्ड धामके दर्शन नहीं हुए. इनमें किसीको भी अज्ञानकी रात्रिके समान इस नश्वर जगतसे परे अखण्ड धामका प्रकाश (ब्रह्म ज्ञान) प्राप्त नहीं हुआ.

चौदे तबक जुलमत से, पेहेलें कही जो रात ।
दिन कायम सूर अरस की, इत काहूं न पाइए बात ॥ ६०

जिसको रात्रिकी उपमा दी है ऐसे शून्यमें चौदह लोक युक्त ब्रह्माण्ड टिका हुआ है. इसलिए अखण्ड परमधामके ज्ञानरूपी सूर्यके प्रकाश (दिन) की चर्चा संसारमें कहीं भी नहीं होती.

सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अरस हक ।
दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक ॥ ६१

तभी सूर्योदय हुआ समझना चाहिए जब परमधाम तथा परब्रह्मका प्रकाश (ज्ञान) प्राप्त हो जाए एवं सभीके हृदयमें लेशमात्र भी सन्देह न रह जाए.

अरस बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर ।
अरस देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर ॥ ६२

जब अखण्ड परमधामकी पहचान हो गई तभीसे ज्ञानका प्रभात हो गया. तारतम ज्ञानने जब परमधामका अनुभव करवाया तभी सबकी अन्तर्दृष्टि खुल गई.

हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर ।
सबको करसी कायम, जाहेर हुई कायम खबर ॥ ६३

कुरानमें यह तथ्य स्पष्टरूपसे लिखा गया है कि ज्ञानरूपी सूर्य उदय होकर सभी जीवोंको अखण्ड करेगा.

जो होसी रूहें अरस की, तिन आवे ईमान अव्वल ।
आखर तो सब ल्यावसी, दोजक की आग जल ॥ ६४

जो परमधामकी आत्मा होगी उसे सर्वप्रथम विश्वास होगा. अन्तिम (कयामतके) समयमें तो सभी जीव पश्चातापरूपी (नरककी) अग्निमें जलकर परमात्मा पर विश्वास लाएँगे.

सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले इमाम बिन ।
खोलें ताला फरेब क्यों रहे, जब ऊग्या बका अरस दिन ॥ ६५

कुरानके ये रहस्य बुद्धनिष्कलङ्क (इमाम महदी) के बिना कौन स्पष्ट कर सकता है ? जब अखण्ड परमधामके ज्ञानरूपी सूर्यका उदय हो गया तब धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट हो जानेसे भ्रान्तियाँ कैसे शेष रह जाएँगी ?

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरबन कतेब ।
पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब ॥ ६६

जब तक अथर्ववेदवत् कतेब ग्रन्थोंमें-से कुरानके रहस्य स्पष्ट नहीं हुए तब तक उसके अनुयायियोंमें किसीको भी अविनाशी परमात्माकी दिशा प्राप्त नहीं हुई और नश्वर जगतके सत्यताकी भ्रान्तियाँ भी नहीं टूटी.

ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए ।
सो खोलें हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए ॥ ६७

जिन ब्रह्मात्माओंके लिए ये रहस्य भेजे हैं वे ही अपनी बातोंको स्पष्ट कर सकेंगी. अब तारतम ज्ञानके द्वारा इन रहस्योंके स्पष्ट होते ही परमात्माका सत्यमार्ग प्रशस्त हुआ. तब द्वैतभाव कैसे रह पाएगा ?

फरेब कछुए ना रह्या, रोसन उमत करी जब ।
हक अरस जाहेर हुआ, तब कायम दुनी हुई सब ॥ ६८

तारतम ज्ञानके द्वारा जब ब्रह्मात्माओंकी महिमा प्रकट हो गई (सत्यका प्रकाश हुआ) तब मिथ्या अज्ञानका अन्धकार कुछ भी शेष नहीं रहा. परब्रह्म तथा परमधामका ज्ञान प्रकट होते ही संसारके सभी जीव अमरत्वको प्राप्त हुए.

लिख्या दिन बका मुसाफमें,खोले बातून होसी फजर ।
लिए हकीकत हैयाती, बका सुख पावें आखर ॥ ६९

कुरानमें अखण्ड दिनके विषयमें स्पष्ट वर्णन है कि जब इसके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो जाएँगे तब ज्ञानका प्रभात होगा. उस समय जो लोग जागृत होकर अखण्ड धामकी यथार्थता ग्रहण करेंगे वे ही अन्तमें अखण्ड सुख प्राप्त करेंगे.

कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए ।
फुरमान खुले आखर, हाथ सूरत हकी जे ॥ ७०

परमात्माने श्यामा स्वरूप सद्गुरु (रूहअल्लाह) के हाथ तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी भेजी परन्तु अभी तक कुरानके ये रहस्य स्पष्ट नहीं हुए. अन्तिम (आत्म-जागृतिके) समयमें हकी सूरत (मुझ) से ही कुरानके ये गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे ऐसा आदेश था.

सहूर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल ।
पावे न हकीकत मुसाफ की, ए खोलिए किन सूल ॥ ७१

स्वयं परमात्माने तारतमज्ञानके द्वारा विवेक दिया (तब ज्ञात हुआ) कि उन्होंने रसूलके हाथ सन्देश भेजा था. किन्तु आज तक कुरानकी यथार्थता स्पष्ट नहीं हुई थी इसलिए ये गूढ़ रहस्य भी कैसे स्पष्ट होते ?

रसूल कहे फुरमानमें, मेरी तीनों एक सूरत ।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित ॥ ७२

रसूलने कुरानमें कहा है कि मेरी तीनों सूरत (बशरी, मलकी एवं हकी) एक ही हैं. वे ही परमात्माके निकट पहुँची हैं, अन्य कोई भी वहाँ तक नहीं पहुँच पाया.

बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के ।
सो खोले फुरमान को, आखर सूरत हकी जे ॥ ७३

कुरानमें बशरी, मलकी एवं हकी इन तीनोंके अलग-अलग कार्य बताए हैं. उनमें-से अन्तिम (हकी) सूरत ही कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

और चाहे कोई खोलने, क्योंकर खोले सोए ।
सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनोंके होए ॥ ७४

उन रहस्योंको अन्य कोई स्पष्ट करना चाहे तो भी कैसे कर सकता. परमात्माका आदेश प्राप्त कर उन्होंने ही ये वचन स्पष्ट किए जिनके आचरण भी परमात्माके अनुरूप रहे हैं.

हुआ दीदार सब म्याराजमें, जो हरफ कहे हकें मुझ ।
जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ ॥ ७५

रसूल मुहम्मदने कुरानमें कहा है, जब मुझे परमात्माके दर्शन हुए तब उन्होंने मुझे कुछ शब्द कहे. उनको मैंने उनके ही आदेशसे स्पष्ट नहीं किया क्योंकि उन्होंने कहा कि मेरे गूढ़ रहस्योंको अन्य कौन स्पष्ट कर सकता है ?

जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब ।
बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब ॥ ७६

रसूलने और भी कहा, जिन वचनोंको स्पष्ट करनेका आदेश मुझे मिला मैंने उनको तभी स्पष्ट कर दिया. परमात्माके आदेशसे जिनको शेष रखा था उनको भी मैं अब उसी आदेशसे स्पष्ट कर रहा हूँ.

ए बातें सब म्याराज की, करें जाहेर तीन सूरत ।
और कोई ना केहे सके, ए अरस हक न्यामत ॥ ७७

परब्रह्मके दर्शनके समय परस्पर हुए सम्वादको उन तीन स्वरूपोंके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं कह सकता क्योंकि यह परमधामकी ही सम्पदा है.

और तीनों सूरत, रूहें फिरस्ते उमत ।
जो आखर इनों में गुजरी, मुसाफ में सोई हकीकत ॥ ७८

इन तीनों सूरतके अतिरिक्त ब्रह्मात्मा तथा ईश्वरीसृष्टिके समुदाय एवं इनके

साथ जो घटनाएँ घटी हैं उनका ही यथार्थ विवरण कुरानमें दिया है.

सो खोले आपे अपनी, हकीकत फुरमान ।
खोले परदे नूर पार के, हुई अरस पेहेचान ॥ ७९

उक्त तीनों स्वरूपोंने संसारमें आकर अपने दायित्वके अनुरूप कुरानके रहस्य स्पष्ट किए. साथ ही अक्षरसे परे अक्षरातीतके द्वार खोल दिए. जिससे अखण्ड परमधामकी पहचान हुई.

सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले ए ।
हुआ सूर बका हक जाहेर, लिख्या मुसाफमें जे ॥ ८०

जब ये रहस्य स्पष्ट हुए तब किसीके भी सन्देह लेशमात्र भी नहीं रहे. इस प्रकार कुरानमें उल्लेखित अखण्ड सूर्यका उदय अब हो गया है.

ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर ।
जब सक जरा ना रही, रूहों क्यों न आवे याद घर ॥ ८१

यह ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर अब अज्ञानकी निद्रा कैसे आएगी ? जब सभी सन्देह मिट गए तब आत्माओंको अपने घरका स्मरण क्यों नहीं होगा ?

याद करो बीच अरस के, जो हकसों किया मजकूर ।
मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर ॥ ८२

हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामके उस सम्वादका स्मरण करो जो तुमने परब्रह्मके साथ किया था. तुमने श्रीराजजीके सम्मुख बैठकर इस झूठे जगतको देखनेकी माँग की थी.

तुम बका सुख छोड के, खेल मांग्या हांसी को ।
सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमानमों ॥ ८३

तुमने ही अखण्ड परमधामके अनन्त सुखोंको छोड़कर मायानगरीमें हँसी करानेवाले खेलकी इच्छा की. इन सभी बातोंका विवरण कुरानके अन्तर्गत है, जिसे धनीने तुम्हारे लिए भेजा है.

खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत ।
इत याद देत सुख पावने, हक बका निसबत ॥ ८४

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम्हें सत्य-असत्य, दुःख-सुख, संयोग-वियोग, प्रेम-विरहके अन्तरका अनुभव करानेके लिए यह मिथ्या जगत दिखाया है. इस दुःखमें भी तुम्हें अखण्ड सुख दिलानेके लिए धामधनी अपने सम्बन्धका स्मरण करवा रहे हैं.

इन झूठी जिमी में बैठाएके, देखाई हक बका निसबत ।
मेहेर करी रूहों पर, देने अरस लज्जत ॥ ८५

इस नश्वर जगतमें बैठाकर धनीने तुम्हें अपने सम्बन्ध और अखण्ड घरकी पहचान करवाई. अपनी ब्रह्मात्माओंको परमधामका आनन्द देनेके लिए ही उन्होंने यह कृपा की है.

इन ख्वाब जिमी में बैठके, अरस सुख लीजे इत ।
हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत ॥ ८६

हे ब्रह्मात्माओ ! अब इस स्वप्नवत् संसारमें बैठे हुए भी परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव करो. इसके लिए ही धामधनीने अखण्ड धामकी सम्पदाका स्मरण करवाया है.

कैसा इलम था तुम पें, पूजते थे किन कों ।
कैसे झूठे कबीले में थे, अब आए किनमों ॥ ८७

हे ब्रह्मात्माओ ! याद करो पहले तुम्हारे पास कैसा ज्ञान था, तुम किसकी पूजा (उपासना) करतीं थीं, तुम कैसे झूठे परिवारोंमें उलझीं हुईं थीं और अब कौन-से परिवारमें आईं हो ?

कौन किया था वतन, जामें कबूं मिटी ना सक ।
कौन फना सोहोबत में, कहावते थे बुजरक ॥ ८८

तुमने किस भूमिको अपना घर माना, जहाँ कभी किसीकी शङ्काएँ नहीं मिटी. किस नश्वर वस्तुके संसर्गमें आकर तुम स्वयंको श्रेष्ठ मानतीं थीं ?

अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक ।
कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक ॥ ८९

अब तुम्हें कैसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ है, और तुम कैसे निःसन्देह हुई हो, तुमने कैसे अखण्ड घर तथा परब्रह्मको प्राप्त किया है ? इस पर विचार तो करो.

कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसबत ।
कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत ॥ ९०

हे ब्रह्मात्माओ ! विचार करो अब तुम्हें कैसा परिवार प्राप्त हुआ है, कैसे धनीके सम्बन्धकी तुम्हें पहचान हुई है, जगतके कैसे दुःखोंसे निकलकर तुमने यह सत्य धनको प्राप्त कर लिया है ?

कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन ।
आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन ॥ ९१

पहले तुम कैसे नश्वर जगतमें थीं और अब कैसे अखण्ड धाममें आ गईं हो, अब तुमको कैसे अखण्ड सुख प्राप्त हुए और अन्तरकी भ्रमरूपी अग्निसे कैसे छुटकारा मिली ? इस पर विचार करो.

कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अरस मोहोलात ।
जागत हो के नींद में, कछू बिचारत हो ए बात ॥ ९२

पहले तुम नश्वर जगतके कैसे घरोंमें पड़ी हुईं थीं, अब परमधामके मन्दिरोंका कैसा आनन्द प्राप्त कर रही हो, कुछ विचार कर देखो कि तुम निद्रावस्थामें हो अथवा जागृत अवस्थामें ?

कौन जंगल गुमराह में हुते, कैसा पाया अरस बाग ।
नींद उडाओ बिचार के, क्यों ना देखो उठ जाग ॥ ९३

पहले तुम कैसे भवाटवीमें भ्रमित हो गईं थीं और अब परमधामके कैसे वन, उपवनका आनन्द ले रहीं हो ? इन बातों पर विचार कर तुम अपने अज्ञानरूपी नीदको क्यों नहीं उड़ातीं तथा जागृत होकर अखण्ड सुखोंकी ओर क्यों नहीं देखती ?

चरकीन जिमीमें बैठ के, कैसी लेते थे वाए ।
अब वाए झरोखे अरस के, कैसी लेत हो अब आए ॥ ९४

तुम कैसी नारकीय भूमिमें बैठकर दूषित वायु ले रहीं थीं ? अब परमधामके झरोखोंसे प्रवाहित सुन्दर सुगन्धित वायुका कैसा आनन्द ले रहीं हो ?

कौन बदबोए में हुते, अब आई कौन खुसबोए ।
सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए ॥ ९५

तुम संसारकी कैसी दुर्गन्धमें थीं और अब परमधामकी कैसी सुगन्ध ले रहीं हो ? अपने अन्तःकरणमें विवेकपूर्वक विचार कर तुम इन दोनों भूमिकाओं की तुलना करके देखो.

ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन ।
अब पाया सुख अरस ठौर में, और कैसे असल तुमारे तन ॥ ९६

नश्वर जगतमें तुमने जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि आदि दुःखोंसे भरा हुआ मिथ्या तन धारण किया था और वहाँ पर रात-दिन दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहीं थीं. अब तुम्हें अखण्ड परमधाममें कैसा सुख प्राप्त हो रहा है और तुम्हारे कैसे चिन्मय शरीर हैं ?

कैसे सुख पाए कायम तन के, किनसों हुआ मिलाप ।
अब देखो साहेब अरस का, पूछो रूह अपनी आप ॥ ९७

अपने परात्मामें जागृत होने पर तुम्हे कैसे आनन्दका अनुभव हो रहा है तथा किन (परमात्मा) के साथ तुम्हारा मिलन हुआ है ? परमधामके धनी (स्वामी) परब्रह्म परमात्माको दृष्टिमें रखकर तुम अपनी आत्मासे यह सब पूछ लो.

कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अरस रात दिन ।
देखो दिल बिचार के, कछू फरक है उन इन ॥ ९८

नश्वर जगतमें तुम्हारे जीवनके दिन-रात किस प्रकार दुःखपूर्ण थे और अब परमधाममें कितना आनन्द हो रहा है ? विचार करके तो देखो, क्या दोनोंमें कुछ अन्तर दिखाई देता है ?

कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान ।
अब निसबत भई अरस की, लेत संग सुभान ॥ ९९

कैसा मिथ्या सम्बन्ध बाँधकर तुम जीवन व्यतीत कर रहीं थीं, अब तो परमधामके दिव्य सम्बन्धकी पहचान होने पर परब्रह्मके साथ आनन्द विहार कर रहीं हो.

पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावे अरस का ।
कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना ॥ १००

नश्वर जगतके वस्त्राभूषण एवं अखण्ड परमधामके वस्त्राभूषणोंमें कोई अन्तरका अनुभव कर रहीं हो ? तुम अपने हृदयसे इस पर विचार करो.

अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर ।
पसू पंखी देखो फना के, देखो अरस जानवर ॥ १०१

अब नश्वर जगतकी भूमि एवं अखण्ड परमधामकी भूमि तथा पशु-पक्षियोंमें तुम्हें कोई अन्तर प्रतीत होता है ? इस पर भी विचार करके देखो.

देखो ताल नदी झूठी जिमी, और देखो अरस हौज जोए ।
करो याद सुख दयो रूह को, दिल देख तफावत दोए ॥ १०२

इस नश्वर संसारके नदी, ताल और पृथ्वीको देखकर परमधामके हौज कौसर ताल एवं यमुनाजीके दर्शन करो. दोनोंकी क्या तुलना है. इन दोनोंके अन्तरको देखकर तुम अपनी आत्माको परमधामके सुखोंका अनुभव कराओ.

दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए ।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अरस की होए ॥ १०३

कुरानमें सांसारिक लोगोंको दिल मजाजी (झूठे दिलवाले) और ब्रह्मात्माओंको दिल हकीकी (सच्चेदिल वाले) कहा है. परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही इन दोनोंका अन्तर पहचान सकती हैं.

दिल मजाजी दुनी का, इत इबलीस पातसाह ।
सो औरों दुसमन और आपका, मारत सबकी राह ॥ १०४

संसारके लोगोंका हृदय मजाजी अर्थात् झूठा कहा गया है जिस पर दुष्ट

इबलीसका ही प्रभुत्व है. वह दूसरोंके साथ-साथ अपना भी शत्रु है तथा सभीके सन्मार्गको अवरूद्ध कर देता है.

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अरस हक ।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक ॥ १०५

ब्रह्मात्माओंके हृदयको सच्चा (हकीकी) कहा गया है. क्योंकि उनका हृदय ही परब्रह्मका सिंहासन है. जिस हृदय पर परमात्मा विराजमान हों उधर शैतान इबलीस कभी नहीं आ सकता.

इसक मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक ।
अब इसक ल्यों दिल अपने, तुम दिल अरस बुजरक ॥ १०६

ब्रह्मात्माओं तथा सांसारिक जीवोंके प्रेममें तुम्हें कुछ अन्तर दिखाई देता है ? अब तो तुम अपने हृदयमें प्रेम जागृत कर लो. क्योंकि तुम्हारा हृदय ही परमात्माका श्रेष्ठ धाम है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, जो दिए थे दिल भुलाए ।
फरामोस से बीच होस के अब साहेब लेत बुलाए ॥ १०७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! जिन धामधनीने नींदका आवरण डालकर तुम्हारे हृदयको भ्रमित कर दिया था अब वे ही तुम्हारी भ्रान्तिको मिटाकर सचेत करते हुए तुम्हें परमधाम बुला रहे हैं.

प्रकरण १४ चौपाई ८७६

आसिक मेरा नाम रूहअल्ला, आसिक मेरा नाम ।
इसक मेरा रूहनसों, मेरा उमतमें आराम ॥ १

परब्रह्म परमात्मा अपने आनन्द अङ्ग श्यामाजीसे कहते हैं, हे श्यामा ! मेरा नाम ही प्रेमी (आशिक) है. ब्रह्मात्माओंसे मेरा अतिशय प्रेम है इसलिए उनके साथमें ही मुझे आनन्द होता है.

इलम ले चलो अरस का, खोल द्यो हकीकत ।
भूल गइयां आप अरस को, याद देओ निसबत ॥ २

अब तुम परमधामका प्रेम लेकर नश्वर जगतमें जाओ और वहाँ पर

परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दो. ब्रह्मात्माएँ जगतके खेलमें जाकर अपने धामको भूल गई हैं, उन्हें परमधामका सम्बन्ध याद दिलाओ.

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान ।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान ॥ ३

यहाँके सङ्केत तथा रहस्योंका उल्लेख कुरानमें किया है और उसे रसूलके हाथ भेजा है. तुम उन सङ्केतोंका मिलान कर ब्रह्मात्माओंको जागृत करो.

और भेजत हों तुमको, कहियो मूल संदेसे ।
इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठें मुरदे ॥ ४

मैं तुम्हें ब्रह्मात्माओंके समीप भेज रहा हूँ, उनको मेरा मूल सन्देश देना. मैंने तुम्हें ऐसा ज्ञान (तारतमज्ञान) प्रदान किया है जिससे मृतकके समान प्रसुप्त जीव भी जागृत हो जाएँगे.

रेहे ना सकों मैं रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन ।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना बिछोहा खिन ॥ ५

मैं ब्रह्मात्माओंके बिना रह नहीं सकता हूँ और ब्रह्मात्माएँ भी मेरे बिना रह नहीं सकतीं. जब उन्हें तारतम ज्ञानसे मेरी पहचान हो जाएगी तब वे क्षणमात्रके लिए भी मेरा वियोग सहन नहीं कर सकेंगी.

जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक ।
तब साइत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इसक ॥ ६

जब यह मेरा ज्ञान (तारतमज्ञान) उन तक पहुँच जाएगा तब वे निःशङ्क हो जाएँगी. उनका प्रेम ही ऐसा है कि वे क्षणमात्र भी मेरे बिना नहीं रह सकेंगी.

ए बात मैं पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस ।
मेरे इलम बिना तुम कबहूं, आए ना सको माहें होस ॥ ७

यह बात मैंने खेल दिखानेसे पूर्व भी कही थी, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम खेलमें जाकर भ्रमित हो जाओगी और मेरा ज्ञान प्राप्त किए बिना कदापि सचेत न हो सकोगी.

फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन ।
हम अरवाहें अरस अजीम की, असल बकामें तन ॥ ८

तब ब्रह्मात्माओंने मुझे उत्तर दिया कि यह नींद (भ्रम) का आवरण हमें क्या कर सकेगा ? हम परमधामकी आत्माएँ हैं और हमारे तन भी अखण्ड परमधाममें हैं.

फुरमान तुमारा आवही, सो हम पढ कर ।
देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर ॥ ९

हे धनी ! जब स्वप्नवत् जगतमें भी आपका सन्देश हमारे पास आएगा तब हम उसे पढ़कर तथा उसके रहस्य एवं सङ्केतोंको समझकर आपको कैसे भूल जाएँगी ?

और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल ।
तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल ॥ १०

जब रसूल भी हमारी साक्षी देंगे एवं मूल बातोंका स्मरण करवाएँगे तब हमारे हृदयमें कैसे बेसुधि बनी रहेगी, हमारी मूल बुद्धि कहाँ लुप्त हो जाएगी ?

सुन सुख बातें अरस की, क्यों ना होवें हुसियार ।
जो मोमिन होवे अरस की, माहें रूहें बारे हजार ॥ ११

परमधामके अखण्ड सुखोंकी बातें सुनकर हम सावधान क्यों नहीं होंगी. जो आत्माएँ परमधामकी बारह हजार आत्माओंमें-से होंगी वे कदापि ऐसा नहीं करेंगी.

सो तो तबहीं सुन के, होसी खबरदार ।
मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार ॥ १२

वे तो आपका सन्देश सुनते ही तत्काल सचेत हो जाएँगी. अपने धनीका सन्देश सुनकर भी ब्रह्मात्माएँ मायामें कैसे भूली रहेंगी ?

आगूं से चेतन करी, एती करी मजकूर ।
रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर ॥ १३

जब आपने इतनी चर्चा कर पहलेसे ही सचेत कर दिया है तो इन वचनोंको

सुनकर आत्माओंको आपके प्रेमका स्मरण क्यों नहीं होगा ?

ए फुरमान पढे पीछे, पाई जब हकीकत ।
तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत ॥ १४

आपके द्वारा भेजे गए आदेश पत्रको पढ़कर जब हमें सम्पूर्ण रहस्योंकी जानकारी प्राप्त होगी तब यह भ्रमकी नींद कैसे रह पाएगी ? हम अपने मूल सम्बन्धको कैसे भूल सकेंगी ?

हाए हाए ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन ।
सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन ॥ १५

हाय ! ऐसा हमसे कैसे सम्भव होगा ? हम कैसी ब्रह्मात्माएँ हैं ? अपने धनीका सन्देश सुनकर भी हम स्वयंको, धामधनीको तथा परमधामको कैसे भूल सकेंगी ?

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम ।
ऐसा इसक क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम ॥ १६

हम इतना अवश्य जानती हैं कि आप भले ही सौ बार हमें भ्रमित करें किन्तु हमारा प्रेम ऐसे कैसे लुप्त हो जाएगा कि हम आपको ही भूल जाएँ.

तुम कूदत हो अरस में, अपने इसक के बल ।
तब सुध जरा ना रहे, रहे ना एह अकल ॥ १७

तब धामधनीने कहा, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम अपने प्रेमके बल पर यहाँ परमधाममें ही ऐसी उछल-कूद कर रही हो. परन्तु मायामें जाने पर तुम्हें यह सुधि नहीं होगी और तुम्हारी बुद्धि भी ऐसी नहीं रहेगी.

सो खेल मांगत हो, वास्ते इसक देखन ।
ए खेल है इन भांत का, उत इसक न जरा किन ॥ १८

प्रेम परीक्षाके लिए ही तुम नश्वर जगतका खेल देखनेकी माँग कर रही हो. परन्तु यह खेल इस प्रकारका है कि वहाँ पर किसीमें भी कहीं लेशमात्र भी प्रेम नहीं होगा.

ना इसक ना अकल, ना सुध आप वतन ।
ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन ॥ १९

वहाँ पर न प्रेम होगा और न ही विवेक-बुद्धि होगी, तुम्हें अपने घर तथा अपने धामधनीकी भी सुधि नहीं रहेगी. तुम तो अपने मूल तन (पर आत्मा) को भी भूल जाओगी.

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेष अपार ।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार ॥ २०

नश्वर जगतमें सबके व्यवहार तथा भाषाएँ अनेक प्रकारकी होंगी. अनेक सम्प्रदायोंके वेश-भूषाका भी पारावार नहीं होगा. वे लोग आग, पानी तथा पत्थरकी पूजा करेंगे, उनके हजारों इष्ट होंगे.

खाहिस से बनावहीं, अपने हाथ समार ।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार ॥ २१

संसारके लोग अपनी इच्छानुसार अपने ही हाथोंसे सँवारकर मूर्तियाँ बनाएँगे औरे अलग-अलग इष्ट मानकर उनकी पूजा करेंगे जिनका कोई पार नहीं होगा.

खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठैमें आराम ।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम ॥ २२

मैं तुम्हें ऐसा खेल दिखाने जा रहा हूँ जहाँ पर लोग नश्वर वस्तुओंके संग्रहमें ही सुख-चैन मानते हैं. वे स्वयं भी नश्वर होनेसे नश्वर जगतके देवोंकी ही पूजा करते हैं, वे सत्य परमात्माका नाम तक नहीं जानते.

एक पैदा हुए एक होत है, एक होने की उमेद ।
एक गए जात जाएंगे, इन विध का छल भेद ॥ २३

इस जगतमें किसीने जन्म लिया, कोई ले रहा है तो कोई लेने वाला है. इसी प्रकार कोई इस जगतसे चला गया, कोई जा रहा है तो कोई जानेवाला है. वस्तुतः इस छलरूपी जगतका रहस्य ही यही है.

देखोगे आसमान जिमी, माहें मुरदों का बास ।
देत देखाई मर जात हैं, कर गिनती अपने स्वास ॥ २४

तुम जगतके खेलमें ऐसे आकाश और भूमिको देखने जा रही हो वहाँ पर मृतक तुल्य प्राणी रहते हैं. क्योंकि वहाँ पर जो दिखाई दे रहे हैं वे अपने श्वासोंकी गिनती पूर्ण कर मृत्युको प्राप्त होते हैं.

मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन ।
चौदे तबक के खेलमें, ठौर बका न पाया किन ॥ २५

जगतके सभी प्राणियोंने मान ही लिया है कि हमारे सिर पर मृत्यु नाच रही है. चौदह लोकोंके इस खेलमें किसीने भी अखण्ड धामको प्राप्त नहीं किया है.

खेलत सब फनामें, बोलें चालें सब फना ।
सब जानत आपे आपको, हम उडसी ज्यों सुपना ॥ २६

नश्वर जगतमें सबके खेल (कार्य) भी मिथ्या हैं और उनकी वाणी तथा व्यवहार भी मिथ्या है. उन सभीको अपने विषयमें इतना ज्ञान अवश्य है कि हम भी स्वप्नकी भाँति उड़ जाएँगे.

तब रूहों मुझ आगूं कह्या, ऐसा इसक हमारा जोर ।
फरामोसी क्या करे हम को, इसक देवे सब तोर ॥ २७

तब ब्रह्मात्माओंने मेरे आगे इस प्रकार कहा, हमारा प्रेम इतना अधिक बलवान है कि इसके रहते यह भ्रमरूपी नींद हमारा क्या बिगाड़ लेगी ? वह इसे अवश्य तोड़ देगा.

ए मजकूर भई रूहनसों, मुझसों किया रबद ।
और कछुए न ल्यावें दिलमें, आप इसक के मद ॥ २८

इस प्रकार ब्रह्मात्माओंके साथ चर्चाएँ हुईं. उन्होंने मुझसे प्रेम सम्वाद किया. वे अपने प्रेमके मदमें इतनी मस्त थीं कि हृदयमें अन्य कोई बात ही नहीं ला सकती थीं.

बातें बोहोत करी रूहनसों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल ।
सुन्या न आगूं इसक के, बहस किया सबों मिल ॥ २९

इस प्रकार मैंने ब्रह्मात्माओंके साथ अनेक बातें की किन्तु उन्होंने मेरी बातको हृदयङ्गम ही नहीं किया. अपने प्रेमके मदमें उन्होंने मेरी कोई बात नहीं सुनी और सबने मिलकर उलटा विवाद आरम्भ किया.

मैं कह्या इसक मेरा बडा, हादी रूहों आप माफक ।
एह बात जब मैं करी, तब तुमें उपजी सक ॥ ३०

उस समय मैंने यह कहा कि श्यामाजी एवं आत्माओंकी अपेक्षा मेरा प्रेम अधिक महान है. जब मैंने यह बात की तभी तुम्हारे मनमें सन्देह उत्पन्न हो गया.

कहे हादी इसक मेरा बडा, कहे रूहें बडा हम प्यार ।
ए बेवरा बीच अरस के, ए होए नहीं निरवार ॥ ३१

तब श्यामाजीने कहा कि मेरा प्रेम महान है, पुनः आत्माएँ कहने लगीं कि हमारा प्रेम अधिक महान है. इस बातका निरूपण अखण्ड परमधाममें तो हो नहीं सकता.

क्यों होए तफावत इसक, बैठे बीच बकामें हम ।
एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम ॥ ३२

परमधाममें बैठे हुए हमारे प्रेमका निर्णय कैसे हो सकता, क्योंकि वहाँ एक पलका भी वियोग नहीं हो सकता तो कम या अधिकका निर्णय कैसे हो सकता है ?

पेहेलें कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख ।
जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक ॥ ३३

पहले ही मैंने तुम्हें कहा था कि तुम मायाका खेल देखकर मुझे भूल जाओगी. जहाँ पर नश्वर जगतके जीव नश्वर वस्तुओंको सत्यमानकर खेल रहे हैं वहाँ पर तुम मुझ एक परमात्माको कैसे प्राप्त कर सकोगी ?

ए हकें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम ।
ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम ॥ ३४

हे ब्रह्मात्माओ ! इस प्रकार धामधनीने पहलेसे ही कह दिया था कि मायामें जाकर भूल जाओगी. उस समय तुम रसूल द्वारा भेजे गए मेरे आदेश एवं सन्देशको भी नहीं मानोगी.

ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद ।
झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद ॥ ३५

तुम मेरे सन्देश पर भी विश्वास नहीं करोगी और मुझे भी याद नहीं करोगी. मिथ्या परिवार रचाकर उसीमें मग्न हो जाओगी और वही तुम्हें अच्छा लगेगा.

जान बूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग ।
सब केहेसी ए झूठ है, तो भी रहोगे तिन लाग ॥ ३६

तुम जानबूझकर पानी, पत्थर तथा आगकी पूजा करोगी. सभी लोग बताएँगे कि ये सब झूठ हैं तथापि तुम उनमें ही लगी रहोगी.

पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध ।
ना तो क्यों पूजो मिटी गोबर, पर क्या करो बिना बुध ॥ ३७

यह मायाका खेल ही ऐसा भ्रमपूर्ण है कि यहाँ पर तुम सभी नश्वर वस्तुओंकी पूजा करने लग जाओगी अन्यथा तुम मिट्टी तथा गोबरकी पूजा कैसे कर सकतीं ? परन्तु मूलघरकी बुद्धि बिना तुम विवश हो गईं हो.

सुकन मेरा मानो नहीं, सबे भरी इसक के जोस ।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस ॥ ३८

तुम सभीने अपने प्रेमके मदमें आकर मेरे वचनों पर विश्वास ही नहीं किया. प्रेमके जोशमें उछलती हुई तुम यही कहती थी कि यह नींदका आवरण हमारा क्या बिगाड़ सकेगा ?

हार दिया तब मैं इनों को, रबद न किया हम ।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम ॥ ३९

हे श्यामा ! तब मैंने विवश हो (हार) कर तुम लोगोंसे विवाद नहीं किया.

मैंने यह तो नाम मात्रका खेल दिखाया किन्तु तुम सभी उसके मिथ्या जालमें उलझ गईं हो.

इसक ज्यादा आप अपना, सबों किया रबद ।
फरामोसी तिलसम देखाइया, तिन किया सब रद ॥ ४०

उस समय तुम सभीने अपना प्रेम सबसे अधिक है ऐसा समझ कर मुझसे विवाद किया. तब मैंने तुच्छ मायाका खेल दिखाया जिसने तुम्हारे सारे दावे निरस्त कर दिए.

अब सो क्योंए आप को, काढ न सकें तिलसम ।
फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम ॥ ४१

अब ये ब्रह्मात्माएँ इस तुच्छ मायाके बन्धनोंसे स्वयंको किसी भी प्रकारसे मुक्त नहीं कर पा रही है. ऐसेमें रसूल मुहम्मद सन्देश लेकर आए तथापि उन्हें लज्जा नहीं आई.

फुरमान लिख्या इन विध का, जो पढ देखें ए ।
एक जरा सक ना रहे, तबहीं जागें हिरदे ॥ ४२

सन्देशपत्रमें ऐसा उल्लेख है कि जो उसे ध्यानसे पढ़ेगा उसके हृदयमें लेशमात्र भी सन्देह शेष नहीं रहेगा, उसी समय वह जागृत हो जाएगा.

ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फुरमान ।
और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान ॥ ४३

परब्रह्म परमात्माने रसूलके हाथ ऐसा सन्देश भेजा और सद्गुरुके हाथ भी तारतमज्ञान रूपी सन्देश भेजा तथापि तुम्हें किसी प्रकारकी पहचान नहीं हुई.

बडा इसक सबों अपना, कह्या रूहों रबद कर ।
तिलसम तो देखाइया, पावने पटंतर ॥ ४४

परमधाममें ब्रह्मात्माओंने धनीके साथ सम्वाद करते हुए अपने प्रेमको बड़ा बताया. धामधनीने इसलिए नश्वर जगतका खेल दिखाया कि उनके प्रेम और ब्रह्मात्माओंके प्रेमका निरूपण हो सके.

रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए ।
तबहीं रूहों के दिल से, फरामोसी उड जाए ॥ ४५

धामधनीने यह विचार किया कि श्यामाजी सद्गुरु बनकर ब्रह्मात्माओंको इस तुच्छ मायाका रहस्य समझा देंगी तभी ब्रह्मात्माओंके हृदयसे मायाका यह आवरण हट जाएगा.

रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर ।
जो रबद किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर ॥ ४६

अब सद्गुरु ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, मैं तुम्हारे लिए परब्रह्म परमात्माका सन्देश लेकर आया हूँ. परमधाममें तुमने जो विवाद किया था उसे तुम हृदयपूर्वक स्मरण करो.

मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख ।
तब इनों तिलसम का, उड जासी सब दुख ॥ ४७

मुझे परब्रह्म परमात्माने भेजा है और कहा है कि मेरी आत्माओंको मेरे सुखोंका स्मरण करवाना, तभी उनसे इस तुच्छ जगतके सभी दुःख दूर हो जाएँगे.

बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर ।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर ॥ ४८

धामधनीने परमधाममें बैठकर मुझे इस प्रकार कहा, हे श्यामा ! मेरी आत्माओंको कहना कि तुम अपने स्वामीका घर भूल गईं हो.

हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान ।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान ॥ ४९

उनको यह भी कहना कि रसूलके हाथ तुम्हें सन्देश भेजा था. उसकी यथार्थता तथा अनुभूतिको तुम क्यों पहचान नहीं रही हो ?

रबद किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल ।
अजूं याद दिए न आवही, सुन एती पुकार रसूल ॥ ५०

तुमने पहले जिस विषयमें विवाद किया था उसे क्यों भूल गईं हो ? रसूलकी

इतनी पुकार को याद दिलाने पर भी अभी तक तुम्हें वह स्मरण नहीं हो रहा है.

और संदेसे रूहअल्ला, सुने जो अलेखे ।
तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के ॥ ५१

तुमने सद्गुरुके द्वारा भी असंख्य सन्देश सुने तथापि तुम्हारी अन्तर्दृष्टि नहीं खुली. धामधनीके ये सभी सन्देश अखण्ड परमधामसे आए हैं.

ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन ।
एक जरा सक ना रही, देखे बका वतन ॥ ५२

धामधनीने तुम्हें ऐसा ज्ञान (तारतम ज्ञान) भेजा कि जिससे तुम्हारे हृदयकी आँखें खुल गईं. अब तो लेशमात्र भी सन्देह शेष नहीं रहा है. इसने तुम्हें अखण्ड परमधामकी अनुभूति (दर्शन) करवा दी है.

बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक ।
बेसक जान्या हादीय को, उमत हुई बेसक ॥ ५३

अब इस तारतम ज्ञानको प्राप्त कर तुमने निश्चय ही स्वयंकी, धामधनीकी तथा सद्गुरुकी पहचान की. इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माएँ निःसन्देह हो गईं हैं.

ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर ।
मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर ॥ ५४

हे श्यामा ! तुम सभी आत्माओंको अपने धामकी याद दिलाना. उनको कहना कि तुम विवेकपूर्वक देखो. मेरे तारतम ज्ञानसे आत्माओंको अन्तरसे साक्षी मिलेगी.

बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम ।
ए देखो दिल बिचार के, तो न्यारा नहीं खसम ॥ ५५

हे ब्रह्मात्माओ ! विचार करो कि यह सन्देह निवारक तारतमज्ञान तुम्हारे हृदय तक पहुँचा है या नहीं ? यदि इस पर हृदयपूर्वक विचार करोगी तो तुम्हें अनुभव होगा कि धामधनी तुमसे नितान्त (बिलकुल) दूर नहीं हैं.

इलम पोहोंच्या होए तुमको, हमारा बेसक ।
तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों ना पोहोंचे बकामें हक ॥ ५६

मेरा सन्देह निवारक तारतम ज्ञान यदि तुम्हें मिल गया हो तो तुम्हारे यहाँके सन्देश परमधाममें पूर्णब्रह्म तक क्यों नहीं पहुँचेंगे ?

किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से ।
कौन तरफ हो अरस के, ए सहूर करो दिलमें ॥ ५७

परब्रह्म परमात्माने तुम्हें कहाँ पर छिपाया है और अभी तुम कहाँसे बोल रही हो, तुम परमधामसे किस दिशाकी ओर हो ? इन सभी बातों पर अपने हृदयमें विचार करो.

देखो दिल से दसों दिस, किन तरफ है हक ।
ए बिचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक ॥ ५८

तुम अपनी दृष्टिको दसों दिशाओंमें दौड़ाकर हृदयपूर्वक देखो कि परमात्मा किस ओर हैं ? यदि तारतम ज्ञानके द्वारा विचार कर देखोगी तो इस पर लेशमात्र भी सन्देह नहीं रहेगा.

कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल ।
हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल ॥ ५९

तुम्हारा शरीर किस कार्यमें प्रवृत्त है, तुम्हारी वाणी किस ओर सङ्केत करती है, तुम्हारा मन किस ओर लगता है तथा तुम्हारे आचरण किस प्रकारके हैं ?

ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौडत ।
देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत ॥ ६०

ये सभी एक ही दिशामें हैं या अलग-अलग दिशामें हैं ? तुम विचार करके देखो कि तुम्हारा सम्बन्ध किस ओर है अर्थात् किससे जुड़ा हुआ है ?

जब एक ठौर पांचों भए, तब तुमारा इत का ।
सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका ॥ ६१

जब उपर्युक्त पाँचों (शरीर, मन, वचन, कर्म एवं सम्बन्ध) एक ही दिशामें

हों तो यहाँसे परमात्माको भेजे हुए तुम्हारे सत्य सन्देश (प्रार्थना) अखण्ड परमधाममें क्यों नहीं पहुँचेंगे ?

इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल ।
फैल होवे वाहेदत का, तब बेर न लगे हाल ॥ ६२

अब मैंने तुम्हें यह ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) दिया है, इससे तुम्हारी वाणी (कथनी) और आचरणमें परिवर्तन आ जाएगा. जब तुम्हारे आचरण अद्वैत भावके होंगे तब तुम्हारी मनस्थितिको अद्वैतभावकी होनेमें कोई विलम्ब नहीं लगेगा.

गुजरी अरस बका मिने, मजकूर जो मुतलक ।
सो इलम हकें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक ॥ ६३

अखण्ड परमधाममें श्रीराजजी एवं ब्रह्मात्माओंके बीच निश्चय ही जो प्रेम परिचर्चा हुई उसकी समझ भी धामधनीने इस तारतम ज्ञानके द्वारा दे दी. अब उसमें लेशमात्र भी शङ्काका स्थान नहीं है.

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात ।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात ॥ ६४

हे ब्रह्मात्माओ ! यही तो तुम्हारी भूल है, तुम्हारे लिए बन्धन भी यही है, यही तुम्हारी भ्रमरूपी निद्रा है क्योंकि तुम यह नितान्त भूल गईं हो, कि तुम स्वयं धामधनीकी अङ्गना हो.

कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल ।
अब पडे याही सकमें, इन जुदागी के ख्याल ॥ ६५

जब तुम पर नींदका आवरण पड़ा तभीसे तुम्हारे वचन, कर्म एवं मनोदशामें परिवर्तन हो गया. धामधनीसे अलग हो जानेके विचार (ख्याल) आ जानेसे ही तुम सन्देहमें पड़ गईं हो.

सो ए इलम जब हक का, देत अरस की याद ।
तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे कायम स्वाद ॥ ६६

जब यह ब्रह्मज्ञान (तारतम) परमधामका स्मरण कराता है तब तुम्हें

परमधामकी अतीतकी घड़ीका स्वाद (अखण्ड सुखोंका अनुभव) क्यों नहीं आता है ?

फरामोसी कुलफ की, कुंजी इलम बेसक ।
करो सहूर तुम रूहसों, जो बकसीस है हक ॥ ६७

यह तारतम ज्ञान निश्चय ही भ्रमनिद्रा (फरोमोशी) रूपी तालेकी कुञ्जी है. तुम अपनी आत्मासे विचार करो कि यह तारतमज्ञान धामधनीकी कृपा प्रसादी है.

ए ऐसा इलम है लुदंनी, जो देत बका की बुझ ।
बेसकी सब देत है, और देत हक के दिल का गुझ ॥ ६८

इस दिव्य ज्ञानकी यह विशेषता है कि यह परमधामकी सुधि देता है, समस्त सन्देहोंका निवारण कर देता है एवं धामधनीके हृदयका गूढ़ रहस्य भी स्पष्ट कर देता है.

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए ।
तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए ॥ ६९

धामधनीने तारतम ज्ञानरूपी ऐसी कुञ्जी दी है कि यदि इसे विवेकपूर्वक भ्रमनिद्रारूपी ताले पर लगाया जाए तो यह भ्रम (नींद) कैसे टिका रह सकेगा ? परन्तु ब्रह्मात्माओंकी जागृति धामधनीके आदेशके अधीन है.

बैठे आगूं हक के, किया था मजकूर ।
इंतहाए नहीं अरस जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर ॥ ७०

तुमने अपने धनीके सम्मुख बैठकर जहाँ चर्चा की थी उस परमधामकी भूमिकी कोई सीमा (ओर–छोर) ही नहीं है. अब कहो कि तुम उसके निकट हो या दूर हो ?

बाहेर तो ना जाए सको, छेह न आवे जिमी इन ।
एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन ॥ ७१

तुम परमधामसे बाहर तो नहीं जा सकती क्योंकि उसका कोई किनारा (सीमा) ही नहीं आता है. तुम पलमात्रके लिए उससे अलग भी नहीं हो

सकती इसलिए तुम्हारा स्थान परमधामके अतिरिक्त कहीं नहीं है.

हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तुमसों हक ।
आया इलम खुदाई तुम पें, तिनमें जरा न सक ॥ ७२

तुम श्रीराजजीका सन्देश तो प्राप्त कर ही रही हो, क्या तुम्हें ज्ञात है कि धामधनी तुम्हारी किस ओर हैं ? तुम्हें परब्रह्म परमात्माका ज्ञान प्राप्त हुआ है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है.

तुमें अरस देखाया दिलमें, जो खोलो ले कुंजी सहूर ।
कुलफ फरामोसी ना रहे, अरस दिल हक हजूर ॥ ७३

इस तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीसे हृदयके पट खोलकर विचारपूर्वक देखोगे तो ज्ञात होगा कि सद्गुरुने तुम्हारे हृदयमें ही परमधाम दिखा दिया है. तब यह भ्रान्तिरूप नींदका ताला भी नहीं रहेगा और तुम अपने हृदयधाममें ही स्वयंको धामधनीके अति निकट पाओगी.

बिना विचारें रेहेत है, तुम पें हक इलम ।
ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उडे तिलसम ॥ ७४

तुम्हारे पास परब्रह्म परमात्माका दिया हुआ तारतम ज्ञान है तथापि तुम इस पर विचार किए बिना व्यर्थ ही समय व्यतीत कर रही हो. इस ज्ञानकी समझ ब्रह्मात्माओं तक पहुँचते ही मायाका तुच्छ आवरण उसी समय उड़ जाना चाहिए.

तीन उमत कही खेलमें, एक रूहें और फिरस्ते ।
तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरियत जे ॥ ७५

इस नश्वर जगतके खेलमें तीन प्रकारकी सृष्टि कही गई हैं. उनमें-से एक ब्रह्मात्माएँ तथा दूसरी ईश्वरीसृष्टि हैं. तीसरी जो जीव सृष्टि कहलाती हैं वे सभी कर्मकाण्डको लेकर परस्पर लड़ती-झगड़ती हैं.

कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास ।
रूहें उतरीं अरस अजीम से, कही असल खासलखास ॥ ७६

परमात्माके द्वारा 'हो जा' कहनेसे जीवसृष्टि तथा अक्षरब्रह्मसे ईश्वरीसृष्टिकी

उत्पत्ति है. किन्तु ब्रह्मात्माएँ सर्वश्रेष्ठ धामसे अवतरित हुई हैं और उनको कुरानमें खासलखास कहा है.

ए इलम इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम ।
हकें पेहेलें कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम ॥ ७७

इस प्रकार मैं तुम्हें यह ब्रह्मज्ञान दे रहा हूँ तथापि यह तुच्छ माया तुमसे नहीं छूट रही. धामधनीने तुम्हें पहले ही कह दिया था कि तुम भूलोगी और मेरे आदेशको नहीं मानोगी.

सोई बातें अब मिलीं, भूल गैयां घर तुम ।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम ॥ ७८

धामधनीके द्वारा पहले कही हुई वे सभी बातें अब सत्य सिद्ध हो रही हैं. क्योंकि तुम अपने घरको ही भूल गईं हो. इतना ही नहीं तुम स्वयंको तथा धामधनीको भी भूल गईं हो. तुम अपनी मूल बुद्धि तथा ज्ञानको भी भूल गईं हो.

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे ।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकलमें ए ॥ ७९

तुम्हें जागृत करनेके लिए रसूल मुहम्मद कुरानका सन्देश ले आए हैं तथा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तारतम ज्ञान लेकर आए हैं. वे तुम्हें यह ब्रह्मज्ञान दे-देकर थक गए परन्तु अभी तक यह तुम्हारी समझमें नहीं आया.

कही बडी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात म्याराज ।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज ॥ ८०

रसूल मुहम्मदने दर्शन (म्याराज)के समय परमात्माके साथ हुई चर्चाको परमात्माकी महती कृपा कहा है. उन्होंने जिस प्रभात (फज्र) की बात की है वह आत्मजागरण (कयामत) का दिन (ग्यारहवीं सदी) आज है.

तो मजकूर म्याराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान ।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत फजर सुभान ॥ ८१

रसूल मुहम्मदने दयालु बनकर कुरान और हदीसोंमें म्याराजमें हुई चर्चा

प्रकट कर दी. हे ब्रह्मात्माओ ! विचार पूर्वक देखो, उन्होंने परमात्माके आदेशसे पूर्ण पहचानके प्रभात (मारफती फज्र) को भी स्पष्ट कर दिया है.

महामत कहें ऐ मोमिनो, अजूं फरामोसी न जात ।
बेसक देखो दिन बका, माहें म्याराज की रात ॥ ८२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इतना होने पर भी तुम्हारी नींद (भ्रान्ति) नहीं टूटती. अब निश्चय ही उस अखण्ड दिनको देखो जिसकी चर्चा म्याराजकी रात्रिमें हुई है.

प्रकरण १५ चौपाई ९५८

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूर तजल्ला द्वार ।
सब म्याराजमें लेय के, दिया हकें दीदार ॥ १

रसूल मुहम्मद पर परमात्माकी कृपा हुई, उनके लिए परमधामके द्वार खुल गए. परमात्माने म्याराजकी रात्रिमें उनको अपने पास बुलाकर दर्शन दिया.

बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर ।
तित नबे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर ॥ २

वे अखण्ड धाममें वहाँ पर पहुँचे जहाँ जिब्रील फरिश्तेके पङ्ख जलने लगे थे. वहाँ पर उन्होंने नब्वे हजार शब्द सुने और परमात्मासे परिचर्चा कर लौट आए.

हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन ।
आवें सब म्याराजमें, दिल देखें अरस मोमिन ॥ ३

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (इमाम) को परब्रह्मने आदेश दिया कि तुम ब्रह्मात्माओंके लिए परमधामके द्वार खोल दो. वे सभी धामहृदया ब्रह्मात्माएँ मेरा साक्षात्कार कर लें.

खिलवत सब म्याराजमें, जो रूहों करी अव्वल ।
सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखे हकीकी दिल ॥ ४

परमधाम मूलमिलावामें ब्रह्मात्माओंने परब्रह्मके साथ जो चर्चा की उसका

उल्लेख रसूल मुहम्मदने म्याराजनामामें किया. सद्गुरुने उसके रहस्यको भी स्पष्ट कर दिया जिससे सत्यहृदया ब्रह्मात्माएँ उसे समझ सकीं.

आखर गिरो जो रूहन, सब म्याराजमें आराम ।
याको दई इमामें हुकमें, वाहेदत की अरस ताम ॥ ५

ब्रह्मात्माओंके समुदायको अपने धामधनीके साक्षात्कारमें ही आनन्द मिलता है. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको धामधनीके आदेशसे सद्गुरुने अद्वैत परमधामका सुख प्रदान किया.

खिलवत हक हादी रूहन की, कबूं न जाहेर किन ।
सो रूहअल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन ॥ ६

श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके अद्वैत सम्बन्धको कभी भी किसीने प्रकट नहीं किया था. उसे सद्गुरुने अपनी अङ्गना इन्द्रावतीके समक्ष तथा इन्द्रावतीने ब्रह्मात्माओंके समक्ष स्पष्ट किया.

एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर ।
रबद किया इसक का, सबों आप अपना जहूर ॥ ७

एक समय परमधाममें श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंने मिलकर चर्चा की. उस प्रेम सम्वादमें सभीने अपने-अपने प्रेमका महत्त्व प्रकट किया.

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम ।
इसक पूरा है हममें, ए नीके जानों तुम ॥ ८

सभी ब्रह्मात्माओंने मिलकर एक स्वरमें कहा कि हम श्रीराजजीके प्रेमी (चाहक) हैं. हमारे अन्दर पूर्ण प्रेम है यह आप निश्चित मान लें.

और आसिक बडी रूह के, इनमें नाहीं सक ।
इसक हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक ॥ ९

हम श्री श्यामाजीकी भी प्रेमी हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है. हमारे प्रेमको स्वयं धामधनी भलीभाँति जानते हैं.

बडी रूह कहे मुझ पें, हक का पूरा इसक ।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक ॥ १०

उस समय श्यामाजीने कहा कि धामधनीके प्रति मेरा पूर्ण प्रेम है. इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ब्रह्मात्माएँ भी मुझे (अन्तरात्मासे) अति प्रिय हैं.

तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक ।
और आसिक बडी रूह का, कौन मेरे माफक ॥ ११

तब धामधनीने ब्रह्मात्माओंसे कहा, मैं तुम सभीका प्रेमी (आशिक) हूँ और श्यामाका भी प्रेमी हूँ. तुममें-से कौन मेरे समान प्रेमी हो ?

खबर मेरे इसक की, तुम जानी नाहीं किन ।
इसक बडे सबों अपने, तो कहे रूहन ॥ १२

हे आत्माओ ! तुममें-से किसीने भी कभी मेरे प्रेमकी सुधि नहीं पाई है इसीलिए तुम सभी अपने प्रेमको महान् कहती हो.

और पातसाही मेरे अरस की, तुमको नहीं खबर ।
इसक सबों को अपने, तो बडे आए नजर ॥ १३

मेरे परमधामके प्रभुत्त्वका भी तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है. इसीलिए तुम सबको अपना-अपना प्रेम बड़ा दिखाई देता है.

बुजरक इसक अपना, तोलों देख्या तुम ।
कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम ॥ १४

तुम सभी तब तक अपने प्रेमको बड़ा समझोगी जब तक तुम्हें अपने स्वामीकी शक्तिका अनुभव नहीं होगा.

साहेबी अरस अजीम की, तुमें नजर आवे तब ।
नूर तजल्ला नूर थें, जुदे होए देखो जब ॥ १५

परमधामका ऐश्वर्य तभी तुम्हारी दृष्टिमें आएगा जब तुम इस तेजोमय परमधामसे स्वयं अलग होकर देखोगी.

खबर तुमारे इसक की, तो होवे जाहेर ।
सब मिल जाओ इत थें, बका से बाहेर ॥ १६

तभी तुम्हारे प्रेमकी जानकारी सबको होगी जब तुम सभी मिलकर इस अखण्ड धामसे बाहर अन्यत्र चली जाओगी.

एक पातसाही अरस की, और वाहेदत का इसक ।
सो देखलावने रूहन को, पेहेलें दिलमें लिया हक ॥ १७

परमधामका प्रभुत्व तथा अद्वैत भूमिकाका प्रेम, ये दोनों बातें ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए सर्वप्रथम श्रीराजजीने मनमें निश्चय किया.

कहूं विध वाहेदत की, बात करनी हकें जे ।
सो अपने दिल पेहेलें लेय के, पीछे आवे दिल वाहेदत के ॥ १८

परमधामकी यह रीति है कि परब्रह्म परमात्माको जो करना होता है उसे वे सर्वप्रथम अपने मनमें धारण करते हैं, तत्पश्चात् वही बात उनकी अद्वैत स्वरूपा ब्रह्मात्माओंके मनमें प्रकट होती है.

पोहोर दिन से चार घडी लग, वरस्या हक का नूर ।
इसक तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर ॥ १९

उस समय प्रथम प्रहरसे चार घड़ी दिन शेष होने तक परब्रह्म परमात्माके तेजोमय प्रेमकी वर्षा होती रही, तब भी सभीने अपने मनकी तरङ्गोंको प्रकटकर अपने ही प्रेमको प्रकाशित किया.

अपने अपने इसक का, सबों देखाया भार ।
तोलों किया रबद, दिन पीछला घडी चार ॥ २०

तब सभीने अपने-अपने प्रेमको महत्त्व दिया. प्रथम प्रहरसे लेकर चार घड़ी दिन शेष रहने तक यह विवाद चलता रहा.

एह बातें असल की, करते इसकसों प्यार ।
हंसते खेलते बोलते, एही चलत बारंबार ॥ २१

ये सभी बातें परमधामकी हैं, जहाँ सभी परस्पर प्रेम और स्नेह रखते हैं.

हँसते, खेलते अथवा बातचीत करते हुए भी हर घड़ी वारंवार प्रेमकी ही चर्चा होती है.

अपना अपना इसक, बडा जानत सब कोए ।
बीच बका के बेवरा, इसक का न होए ॥ २२

सभी आत्माएँ अपने-अपने प्रेमको बड़ा समझतीं हैं. परन्तु इस प्रेमका निरूपण अखण्ड परमधाममें सम्भव नहीं है.

इसक का हक हादी रूहें, रबद किया माहों माहें ।
सो हक के बीच अरस में, घट बढ होवे नाहें ॥ २३

श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें परस्पर प्रेमकी परिचर्चा होती रही. परब्रह्म परमात्माके अखण्ड परमधाममें कुछ भी न्यूनाधिक्य नहीं हो सकता.

जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए ।
ताथें रूह रबद हक का, क्योंए ना निबरे सोए ॥ २४

जहाँ पर वियोग सम्भव ही नहीं है, वहाँ पर (न्यूनाधिक्यका) निर्णय कैसे हो सकता है ? इसीलिए परब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओंके विवादका निर्णय किसी भी प्रकार नहीं हो रहा था.

एक पात न गिरे अरस बन का, ना खिरे पंखी का पर ।
अपार जिमी की रूह कोई, कहूं जाए न सके क्योंए कर ॥ २५

परमधामकी यह विशेषता है कि वहाँ पर वृक्षोंका एक पत्ता भी नहीं गिरता और पक्षियोंके पङ्ख भी नहीं गिरते. ऐसी अपार भूमिकी ब्रह्मात्माएँ किसी भी प्रकार कहीं नहीं जा सकतीं.

आगूं वाहेदत जिमी के, कहूं नाम न जरा एक ।
आगूं जरे वाहेदत के, उडे ब्रह्मांड अनेक ॥ २६

परमधामकी अद्वैत भूमिके समक्ष किसी अन्य स्थानका नाममात्र भी नहीं आता. अद्वैत भूमिके कणमात्रके समक्ष भी ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं.

रूहें उन वाहेदत की, ताए फरेब न रहे नजर ।
सो क्यों पडे फरेब में, देखो सहूर कर ॥ २७

उस अद्वैत भूमिकी ब्रह्मात्माओंके समक्ष यह माया कैसे टिक सकती है ? और वे ब्रह्मात्माएँ झूठी मायामें कैसे उलझ सकती हैं ? इस पर विचार करो.

मौत उत पैठे नहीं, कायम अरस सुभान ।
ठौर नहीं इबलीस को, जरा न कबूं नुकसान ॥ २८

अखण्ड परमधाममें मृत्युका तो कोई प्रवेश ही नहीं है. वहाँ पर दुष्ट शैतान (इबलीस) का भी कोई स्थान नहीं है. इसीलिए वहाँ पर किसी भी वस्तुका क्षय नहीं होता.

अरस बका वाहेदत में, सुध इसक न होवे इत ।
जुदे जुदे हो रहिए, इसक सुध पाइए तित ॥ २९

अखण्ड अद्वैत पमरधाममें प्रेम (के न्यूनाधिक्य) की सुधि भी नहीं हो सकती. जहाँ पर अलग-अलग होकर रहना होता है वहीं पर प्रेमका निरूपण (सुधि) हो सकता है.

वाहेदत में सुध इसक की, पाइए नहीं क्योंए कर ।
घट बढ इत है नहीं, अरस में एकै नजर ॥ ३०

अद्वैत भूमिमें किसी भी प्रकार प्रेमका निर्णय नहीं हो सकता. वहाँ पर वस्तुकी कमी या अधिकता नहीं होती. परमधाममें तो सर्वत्र एक ही दृष्टि है.

बिना जुदागी इसक की, क्यों कर पाइए खबर ।
सो तो बका में है नहीं, सब कोई बराबर ॥ ३१

वियोग हुए बिना प्रेमके सम्बन्धमें न्यूनाधिक्यकी पहचान कैसे हो सकती है? परमधाममें तो यह सम्भव ही नहीं है क्योंकि वहाँ पर सभी एक समान हैं.

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए ।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए ॥ ३२

कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जो परमात्माके द्वारा नहीं हो सकता हो परन्तु

परमधाममें एक कार्य ऐसा भी है जो स्वयं परमात्मासे भी नहीं हो सकता.

कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रूह इसक ।
रूह इसक दोऊ बका, इनमें नाहीं सक ॥ ३३

ब्रह्मात्माओंके वचन (कथनी), कर्म-आचरण (रहनी) तथा मनोभावमें भले ही श्रीराजजीकी आज्ञासे परिवर्तन आ जाए परन्तु अपने प्रियतम धनीके प्रति ब्रह्मात्माओंके प्रेममें कभी भी परिवर्तन (कमी) नहीं हो सकता. क्योंकि ब्रह्मात्माएँ तथा उनका प्रेम दोनों ही अखण्ड हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है.

दिल फिरे रंग फिरत है, जुसां जोस बदलत ।
पर असल इसक ना बदले, जो नेहेचल रूह न्यामत ॥ ३४

हृदयमें परिवर्तन आने पर रङ्ग-ढङ्गमें भी परिवर्तन आ जाता है जिससे उत्साह एवं उमङ्ग भी परिवर्तित होते हैं. परन्तु मूल (वास्तिवक) प्रेममें कोई परिवर्तन नहीं होता क्योंकि वह तो आत्माका अखण्ड धन है.

रूहों सबों इसक का, किया बडा मजकूर ।
इस वास्ते बेवरा इसक का, मुझे देखलावना जरूर ॥ ३५

इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंने मिलकर अपने प्रेमकी विशेष चर्चा की. तब श्रीराजजीने विचार किया कि प्रेमका निरूपण कर उनको दिखाना मेरे लिए आवश्यक हो गया है.

इसक बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊं ख्याल ।
इसक तालुक रूह के, छूटे ना बदले हाल ॥ ३६

तब उन्होंने ब्रह्मात्माओंको कहा, प्रेमके निरूपण हेतु मैं तुम्हें एक झूठा ख्याल दिखाऊँगा. प्रेमका सम्बन्ध आत्मासे होनेसे वह भी छूट नहीं सकता और उसके भाव भी बदल नहीं सकते.

रूहें अरस अजीम की, ताए लगे ना कोई नुकसान ।
ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान ॥ ३७

परमधामकी ब्रह्मात्माओंकी यद्यपि कोई हानि नहीं हो सकती तथापि मैं तुम्हें ऐसा खेल दिखाऊँगा, जहाँ किसी भी प्रकारकी पहचान नहीं रहेगी.

ऐसा इसक तुम पें, रूह से क्योंए ना छूटत ।
पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत ॥ ३८

तुम्हारे पास ऐसा प्रेम है जो तुम्हारी आत्मासे किसी भी प्रकार अलग नहीं हो सकता. परन्तु यह खेल इस प्रकारका होगा जहाँ तुम्हें जागृत करने पर भी तुम जागृत नहीं होंगी.

मैं छिपोंगा तुमसों, तुम पाए न सको मुझ ।
न पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ ॥ ३९

मैं तुमसे ऐसे छिप जाऊँगा कि तुम मुझे ढूँढ़ ही नहीं सकोगी. तुम मेरी दिशाको भी प्राप्त नहीं कर सकोगी, ऐसा खेल मैं तुम्हें दिखाऊँगा.

और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर ।
के इतहीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर ॥ ४०

यह सुनकर ब्रह्मात्माओंने कहा, हे धनी ! क्या आप कहीं अन्यत्र जाकर छिप जाएँगे या हमको स्वयंसे दूर करेंगे अथवा आप हमें अपने समीप ही बैठाकर यह खेल दिखाएँगे ?

दूर कहूं न जाऊंगा, तुम बैठो पकड चरन ।
खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन ॥ ४१

तब धामधनीने कहा, मैं तुमसे दूर नहीं जा रहा हूँ, तुम मेरे चरण पकड़कर बैठ जाना. तुम सभी ब्रह्मात्माएँ मिलकर यहाँ पर एक साथ खेल देखोगी.

हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड तुमारे चरन ।
तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठें होए एक तन ॥ ४२

पुनः ब्रह्मात्माएँ कहने लगीं, हे धनी ! अब हम सभी आपके चरणोंको ग्रहण कर बैठ जाएँगी. जब हम एकाकार होकर बैठ जाएँगी तब यह स्वप्नवत् माया हमारा क्या बिगाड़ सकेगी ?

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए ।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदियां कोए ॥ ४३

हम तो परस्पर एक दूसरेके गलेमें बाँहें डालकर एकरूप होकर बैठेंगी. तब

यह भ्रमरूपी निद्रा हमें क्या कर लेगी जब हममें-से कोई भी परस्पर अलग नहीं होगी.

जेते कोई मोमिन, सो बैठें तलें कदम ।
तो तुमारे रसूल का, फेरें नहीं हुकम ॥ ४४

हम जितनी भी ब्रह्मात्माएँ होंगी सभी आपके चरणोंमें ही बैठी रहेंगी, तब आपके सन्देशवाहकका आदेश हम किसी भी प्रकार नहीं टालेंगी.

जो मुनकर हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए ।
द्यो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए ॥ ४५

यदि आपके आदेशकी अवहेलना करेंगी तो हम ब्रह्मात्मा कहलाने योग्य ही नहीं रहेंगी. आप हम पर नींदका आवरण डालकर चाहे हमारी सौ बार परीक्षा क्यों न कर लें.

सो कैसा मोमिन, अरस की अरवाए ।
हम कदमों बीच अरस के, क्यों जासी भुलाए ॥ ४६

इतनेमें ही भूल जाए तो वह परमधामकी ब्रह्मात्मा ही कैसे कहलाएगी ? हम तो परमधाममें ही आपके चरणोंमें बैठीं हैं इसलिए आपको कैसे भूल जाएँगी ?

जेती रूहें अरस की, ताए फरामोसी न जाए जीत ।
कछू पडे बीच अपने, ए नहीं इसक की रीत ॥ ४७

परमधामकी ब्रह्मात्माओंको यह नींदका आवरण प्रभावित (जीत) नहीं कर पाएगा. हे धनी ! आप और हमारे बीच यदि कोई आवरण आ जाए तो यह प्रेमकी रीति नहीं है.

कछुए न चले फरामोस का, हम आगूं हुए चेतन ।
इसक हमारे रूह के, असल है एक तन ॥ ४८

हम पहले ही सचेत हो गईं हैं. इसलिए हम पर इस मायाका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ेगा. हम आत्माओंका प्रेम सच्चा है और हम सब एक ही स्वरूप (तन) हैं.

बका आडे पट करों, तुम देख न सको कोए ।
झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए ॥ ४९

ब्रह्मात्माओंकी यह बात सुनकर श्रीराजजीने कहा, मैं तो तुम्हारे और परमधामके बीचमें ही विस्मृतिका आवरण डाल रहा हूँ जिससे तुम यहाँ पर किसीको भी देख नहीं सकोगी. तब तुम मायाका मिथ्या मिलन और नाशवान् परिवारको ही देखने लगोगी.

बैठियां सब मिलके, अंग सों अंग लगाए ।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए ॥ ५०

यद्यपि तुम सभी ब्रह्मात्माएँ अङ्गसे अङ्ग लगाकर बैठी हुई हो किन्तु मैं तुम्हें नश्वर खेलमें अलग-अलग स्थानमें भेजकर नये-नये शरीर धारण कराऊँगा.

पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस ।
इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी न आओ माहें होस ॥ ५१

तुम ऐसी तुच्छ मायाको देखोगी जहाँ सभी पर नींदका आवरण पड़ा होगा. उस समय मैं स्वयं तुम्हें सन्देह निवारक ज्ञान (तारतमज्ञान) दूँगा तथापि तुम्हें सुधि नहीं आएगी.

एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर ।
कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर ॥ ५२

जगतका खेल ही ऐसा है कि तुम झूठे कुटुम्ब परिवार बनाकर बैठ जाओगी. तुममें-से कोई भी किसीको पहचानेगी नहीं. इस प्रकार तुम सभी अलग-अलग घर बनाकर बैठ जाओगी.

तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह ।
ऐसी मोहोबत बांधोगे, झूठै सों सनेह ॥ ५३

तुम निश्चित रूपसे जान जाओगी कि यह सब कुछ मिथ्या है तथापि तुमसे यह नहीं छूटेगा. तुम इन मिथ्या परिवारोंसे मोह बाँध लोगी और उनके ही मोह पाशमें जकड़ी रहोगी.

वाही जानोगे न्यामत, और वाहीसों करोगे प्यार ।
सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परवार ॥ ५४

उन लौकिक वस्तुओंको अपनी सम्पत्ति मानकर तुम उनसे ही प्रेम करने लग जाओगी. उन झूठी वस्तुओंके मिलने एवं न मिलनेमें तुम अपना सुख-दुःख मान लोगी तथा उन मिथ्या कुटुम्ब परिवारको ही अपना मानने लग जाओगी.

आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर ।
कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर ॥ ५५

इस खेलमें तुम अग्नि और जलकी पूजा करोगी अथवा पत्थरकी मूर्ति बनाकर कहने लग जाओगी कि यही हमारा परमात्मा है. तुम सभीका यही दृष्टिकोण होगा.

आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मंडल ।
ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल ॥ ५६

आकाशसे लेकर पृथ्वी तथा पाताल पर्यन्त सब मिथ्या जगत मण्डल होगा. ऐसे स्वप्नवत् जगतके खेलमें जाकर तुम भी उसीमें एकाकार हो जाओगी.

हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान ।
सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान ॥ ५७

इस नश्वर जगतमें अविनाशी परमात्मा कहीं नहीं मिलेंगे. उनके विषयमें कुछ सुननेको भी नहीं मिलेगा. वस्तुतः तुम इस नश्वर जगतमें सत्यको कभी नहीं पा सकोगी.

झूठा खेल कबीले झूठे, झूठै झूठा खेलें ।
सब झूठें पूजें खाएं पिएं झूठे, झूठै झूठा बोलें ॥ ५८

नश्वर जगतका खेल भी मिथ्या है और वहाँका परिवार भी मिथ्या है. वहाँके नश्वर जीव भी मिथ्या नाटक ही कर रहे हैं. वहाँके सभी लोग नश्वर जगतके देवोंकी पूजा करते हैं. उनका खान-पान तथा वाणी-व्यवहार भी वस्तुतः मिथ्या ही होता है.

झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परवार ।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठै का विस्तार ॥ ५९

तुम्हें वह नश्वर जगत ही अच्छा (मीठा) लगने लगेगा. वहाँके झूठे कुटुम्ब-परिवार अपने लगेंगे. क्षणिक सुख-दुःखोंको लेकर उनके साथ मिथ्या चर्चा करने लगोगी इस प्रकार सर्वत्र मिथ्याका ही विस्तार होगा.

इसक तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन ।
रबद किया तुम मुझसों, बीच बका वतन ॥ ६०

यदि ऐसे समयमें तुम मेरा स्मरण करोगी तो तुम्हारा प्रेम सच्चा माना जाएगा. तुमने परमधाममें अपने प्रेमके विषयमें ही मुझसे विवाद किया है.

ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार ।
हांसी बिना कोई ना रही, छोड ना सके अंधार ॥ ६१

इस जगतमें आई हुई ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जो तारतम ज्ञानके बिना ही सचेत हो गई हो. कोई भी अज्ञानरूपी अन्धकारको छोड़ नहीं सकी इसलिए हँसी हुए बिना कोई भी नहीं रहेगी.

इलम मेरा लेए के, निसंक दुनी से तोड ।
सोई भला इसक, जो मुझ पें आवे दौड ॥ ६२

जो आत्मा मेरे ज्ञानको प्राप्त कर निश्चय ही संसारका सम्बन्ध छोड़कर दौड़ती हुई मेरी ओर आएगी उसीका प्रेम सच्चा माना जाएगा.

झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान ।
एक कंकरी होवे अरस की, तो उडे जिमी आसमान ॥ ६३

ऐसा नश्वर खेल दिखाया है जो चौदह लोकोंमें विस्तृत है परन्तु परमधामके एक कणके समक्ष यहाँकी भूमि तथा आकाश भी टिक नहीं सकते.

ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए ।
आंखां खुले उडे फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए ॥ ६४

जैसे नींदमें स्वप्न देखने पर लाखों शरीर दिखाई देते हैं किन्तु आँख खुलते

ही स्वप्न टूट जाता है और उसी समय स्वप्नके वे सभी दृश्य मिट जाते हैं.

फुरमान लिखूं तुमको, और भेजोंगा पैगाम ।
तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम ॥ ६५

मैं तुम्हें सचेत करनेके लिए अपना आदेश लिखकर भेजूँगा. उस समय तुम कहोगी कि यह किसने भेजा है और किसके ये वचन हैं ?

कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित ।
चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत ॥ ६६

हमारे धनी कहाँ हैं और हमारा घर किस ओर है ? जब परमात्मा इन चौदह लोकोंमें नहीं है तो फिर यह किसका भेजा हुआ ग्रन्थ है ?

आपन आए वास्ते मजकूर, अरस से उतर ।
तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो माने क्यों कर ॥ ६७

वस्तुतः परमधाममें हुई प्रेम परिचर्चाके कारण ही हमारा इस जगतमें आना हुआ है. इसलिए नश्वर जगतके ये जीव इन बातोंको कैसे मानेंगे ?

एह न पावें अरस को, ना कछू पावें हक ।
ना कछू समझें इलम को, ए आप नहीं मुतलक ॥ ६८

ये लोग न परमधामको प्राप्त कर सकते हैं और न ही परब्रह्मको पहचान सकते हैं. ये तो तारतम ज्ञानको भी समझ नहीं पाएँगे, वस्तुतः इनका कोई अस्तित्व ही नहीं है.

ए जो ढूंढत दुनियां, सो सब तिलसम के ।
ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे ॥ ६९

इस नश्वर जगतमें खोज करने वाले जीव भी तो वस्तुतः मिथ्या ही हैं. वे कैसे अविनाशी परमात्माको प्राप्त कर सकते हैं, जिनके शरीर ही मिथ्या हैं.

पैदा आदम हवा से, हिरस हवा सैतान ।
इन विध की ए पैदास, केहेवत कुरान पुरान ॥ ७०

कुरान तथा पुराणमें इन जीवोंकी उत्पत्तिके विषयमें इस प्रकार कहा है कि

आदम और हव्वासे वे उत्पन्न हुए हैं. उनके मनमें दुष्ट इबलीसका प्रभुत्व होनेसे उनकी तृष्णा बढ़ती रहती है.

रल गैयां वाही खेल में, कछू रही न असल बुध ।
रूहअल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे ना दिल सुध ॥ ७१

ब्रह्मात्माएँ भी इस नश्वर खेलमें आकर मायाके जीवोंके साथ एकरूप हो गईं हैं. उनमें मूल बुद्धि नितान्त नहीं रही. इसलिए श्यामास्वरूप सद्‌गुरुके सौ बार कहने पर भी उनके हृदयमें सुधि नहीं आती.

देखादेखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें ।
तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहें ॥ ७२

सद्‌गुरुने उनको समझाया कि तुम इस नश्वर जगतमें बैठकर इन (जीवों) का अनुकरण कर रही हो. तुम तो अखण्ड परमधामसे अवतरित हुई हो जबकि इनका कोई अस्तित्व ही नहीं है.

ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें ।
आखर सब फना होवहीं, इत कायम जरा नाहें ॥ ७३

ये स्वप्नके जीव इसी स्वप्न जगतसे उत्पन्न हुए हैं इसीलिए ये स्वप्नवत् खेलमें ही खेल रहे हैं. अन्तमें यह नष्ट होने वाला है. यहाँ पर कोई भी स्थायी नहीं है.

पट आडा बका वतन के, एही हुई फरामोस ।
जो याद करो हक वतन, इसक न आवे बिना होस ॥ ७४

अखण्ड परमधाम और तुम्हारे बीच इसी अस्तित्वहीन नींदका आवरण है. यदि तुम यहाँ पर परमधामका स्मरण कर भी लोगी तो भी जागृत हुए बिना प्रेम नहीं आ सकता.

बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हम कों ।
रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचे बका मों ॥ ७५

मैंने निश्चय ही यह मिथ्या जगत दिखाया है इसलिए तुम मुझे यहाँ पर कैसे

देख सकतीं ? जब ब्रह्मात्माएँ सन्देह निवारक तारतम ज्ञान प्राप्त करेंगी तभी अखण्डमें पहुँच सकेंगी.

तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा नाहीं इसक ।
इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक ॥ ७६

हे ब्रह्मात्माओ ! तुमने ऐसी झूठी नगरी देखी है जिसमें रत्ती भर भी प्रेम नहीं है. यहाँ पर तुम कैसे निःशङ्क हो सकतीं हो जहाँ परमात्माकी कोई सुधि ही प्राप्त नहीं होती.

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन ।
फरेब क्योंए ना छूटही, हक के इसक बिन ॥ ७७

ब्रह्मात्माएँ भी (मायाके प्रभाव रहते) ऐसे जगतसे अपने घर लौट नहीं सकेंगी. क्योंकि परब्रह्मके प्रेमके बिना उनसे यह झूठी माया छूट नहीं सकती.

ऐसी रूहें वाहेदत की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर ।
ए बडारूहों का तअजुब, जो बांधी झूठसों नजर ॥ ७८

ऐसे अखण्ड धामकी ब्रह्मात्माओं तक यह मिथ्या माया कैसे पहुँच सक्ती ? किन्तु आश्चर्यकी बात है कि ब्रह्मात्माओंकी दृष्टि इसी झूठी मायामें बँध गई है.

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले ।
तुमें तो भी याद न आवहीं, कोई आए बनी ऐसी ए ॥ ७९

मैंने अपनी आनन्द अङ्ग श्यामाको अपने हृदयकी सभी बातें कहकर तुम्हें जागृत करनेके लिए भेजा तथापि तुम्हें अपने घरका स्मरण नहीं हो रहा है. यह कैसी स्थिति बन गई है ?

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।
सो भेजी मैं तुम पें, जो करियां आपन मिल ॥ ८०

मेरे हृदयकी सभी बातें तथा तुम सभी (ब्रह्मात्माओं) के हृदयकी बातें भी, जो परमधाममें हम सभीने मिलकर कीं थीं, मैंने सद्गुरुके द्वारा तुम्हारे पास कह भेजी है.

ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम ।
तब इसक वाली रूहों को, क्यों न उडे तिलसम ॥ ८१

जब परमधामकी ये सभी बातें तुम्हें याद दिलाईं गईं तब प्रेमी आत्माओंकी यह भ्रमनिद्रा कैसे नहीं उड़ेगी ?

जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों ।
एक रूह दूजा इसक, आए काम पड्या इनसों ॥ ८२

जब तक तुम्हारी दृष्टि खेलमें लगी रहेगी तब तक तुम अखण्डमें नहीं पहुँच सकोगी. एक परमधामकी आत्मा, दूसरा उनका प्रेम, बस ! परमधामके लिए अब इसीकी आवश्यकता है.

दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका ।
जहां रूह न होवे एकली, छोड सबे इतका ॥ ८३

उक्त दोनों (ब्रह्मात्मा तथा उनका प्रेम) के अतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु परमधाममें परब्रह्मको नहीं पहुँच सकती. जब तक आत्मा संसारके सभी बन्धनोंको त्यागकर अकेली नहीं होती तब तक उसे परमधामका अनुभव नहीं हो सकता है.

बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक ।
आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक ॥ ८४

इस प्रकार अखण्ड परमधाममें अपने चरणोंके निकट बैठाकर धामधनी अपनी आत्माओंको यह मिथ्या जगतका खेल दिखा रहे हैं. तारतम ज्ञान ही इस रहस्यको स्पष्ट करता है कि वास्तवमें न कोई इस जगतमें आया है और न ही कोई इससे गया है.

बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे ।
देखो कौन आवे दौडती, आगूं इसक मेरा ले ॥ ८५

धामधनी कहते हैं, देखें अब इस सन्देह निवारक (तारतम) ज्ञानको समझकर नश्वर जगतको पीठ देती हुई कौन-सी आत्मा हृदयमें मेरा प्रेम धारण कर दौड़ती हुई मेरी ओर आती है.

जब तुम भूले मुझ को, तब इसक गया भुलाए ।
अब नए सिर इसक, देखों कौन लेय के धाए ॥ ८६

जब तुम मुझे ही भूल गईं, तब मेरा प्रेम भी तुम्हें याद न रहा. देखें, अब (देखना है) हृदयमें पुनः प्रेम धारण कर कौन-सी आत्मा दौड़ती हुई मेरे पास आती है.

याद करो इन इसक को, जो रबद किया सबों मिल ।
सो इसक अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल ॥ ८७

हे ब्रह्मात्माओ ! अपने उस प्रेमका स्मरण करो, जिसके लिए तुम सभीने मिलकर मुझसे विवाद किया था. अब तुम्हारा वह प्रेम कहाँ चला गया ? वह तो पलके चतुर्थांश तक भी टिक नहीं सका.

सब ज्यादा केहेती अपना, करतीं अरस में सोर ।
असल रूहों के इसक का, कहां गया एता जोर ॥ ८८

तुम सभी तो अपने प्रेमको महान कहकर परमधाममें हो-हल्ला मचा रही थी. सच्ची आत्माओंके प्रेमकी शक्ति अब कहाँ लुप्त हो गई है ?

किया रूहों सबों रबद, पर आप न पकड्या किन ।
फरामोसी सबों फिरवली, हुई हांसी सबन ॥ ८९

सभी आत्माओंने विवाद तो किया किन्तु कोई भी अपने प्रेमको धारण कर न सकी. मायाके आवरणने सभीको घेर लिया जिससे सभीकी हँसी हुई.

जब इसक गया सब थें, तब निकल आई पेहेचान ।
जिनका इसक जोरावर, ताए कछुक रहे निदान ॥ ९०

इस माया नगरीको देखते ही सभी आत्माओंका प्रेम लुप्त हो गया तभी सबकी पहचान हो गई (कि उनमें कितना प्रेम है). जिसका प्रेम शक्तिशाली होता है उनको कुछ तो पहचान रहती है.

सब केहेतीं इसक अपना, हमारा बेसुमार ।
सो रह्या न जरा किन पें, हाए हाए दिया सबों ने हार ॥ ९१

पहले तो सभी यही कहतीं थीं कि हमारा प्रेम सबसे अधिक है. खेद है

कि अब वह प्रेम किसीके पास भी नहीं रहा, सबकी सब हार गईं हैं.

इनों बोहोत लाड किए मुझसों, मैं सक किया इनों सों ।
सो सक मेरे लाड में, सब बेहे गैयां तिन मों ॥ ९२

धामधनी कहते हैं, इन ब्रह्मात्माओंने तो परमधाममें मेरे साथ बहुत लाड़ किया हैं. मैंने तो इनके साथ केवल एक ही लाड़ किया है किन्तु मेरे एक ही लाड़के अन्तर्गत वे सभी बह गईं हैं.

और इसक भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार ।
जिन घट सुनत आवहीं, सोई जानो सिरदार ॥ ९३

जिन ब्रह्मात्माओंका प्रेम बलशाली है, उनकी यही पहचान है – जिनके हृदयमें धामधनीका सन्देश सुनते ही प्रेम उभर आए, उसीको शिरोमणि आत्मा समझना चाहिए.

और भी बेवरा इसक का, जिनका होए बुजरक ।
ताए याद दिए क्यों न आवहीं, ऐसा क्यों जाए मुतलक ॥ ९४

ब्रह्मात्माओंके प्रेमकी दुसरी पहचान यह भी है कि जिन्होंने अपने प्रेमको महान् समझा है उनको बार-बार याद दिलाने पर भी प्रेम क्यों उत्पन्न नहीं होता ? ऐसा महान प्रेम पूर्णतः कैसे लुप्त हो सकता है ?

रूहें बात सुनते हक की, तुरत ही करें सहूर ।
जब सहूर रूहें पकडे, तो इसक क्यों न करे जहूर ॥ ९५

ब्रह्मात्माएँ तो वे कहलाती हैं जो अपने धनीकी बात सुनते ही तत्काल विचार करने लग जाएँ. जब वे इस पर निरन्तर विचार करने लगेंगी तब उनका प्रेम अपनी शक्तिको क्यों प्रकाशित नहीं करेगा.

और भी पेहेचान इसक की, जो बढ के घट जाए ।
इसक रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए ॥ ९६

प्रेमकी अन्य पहचान यह भी है कि यदि वह बढ़कर घट भी जाए तो ऐसे प्रेमको परमात्माके प्रति आत्माओंका अखंड प्रेम कैसे कहा जाए ?

इसक हक का सो कहिए, जो इसक है कायम ।
एक जरा कमी न होवहीं, बढता बढे दायम ॥ ९७

धामधनीका प्रेम वह है जो सदा सर्वदा अखण्ड रहता है. उसमें लेशमात्रकी भी न्यूनता नहीं रहती. वह तो नित्य निरन्तर बढ़ता ही रहता है.

मेरा छूट्या न इसक रूहों सों नजर न छूटी निसबत ।
रूहों छूटी इसक निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत ॥ ९८

वस्तुतः मेरा प्रेम कभी भी ब्रह्मात्माओंसे नहीं छूटा है और मेरी दृष्टि भी उनके सम्बन्धसे कभी दूर नहीं हुई है. किन्तु मायामें आकर ब्रह्मात्माएँ मूलमिलावाकी अपनी प्रेम परिचर्चाको ऐसी भूल गईं कि उनसे मेरा प्रेम तथा सम्बन्ध भी छूट गया.

किया मजकूर इसक का, अजूं सोई है साइत ।
पडे बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुदत ॥ ९९

परमधाममें जब प्रेमकी परिचर्चा हुई, अभी भी वही घड़ी है. तुम भ्रमरूपी नींदमें पड़ी हुई हो इसीलिए तुम्हें लगता है कि अधिक समय व्यतीत हो गया है.

सक छूटी अरस हक की, सब बातों हुई बेसक ।
तब अरस अरवाहों को, क्यों न आवे इसक ॥१००

तारतम ज्ञानके द्वारा धामधनी और परमधामके विषयमें सभी सन्देह दूर हो गए हैं. अब किसी भी बातकी शङ्का नहीं रही. तथापि परमधामकी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम क्यों जागृत नहीं हो रहा है ?

तोलों चले ना इसक का, जोलों आडी पडी सक ।
सो सक जब उड गई, तब क्यों न आवे इसक हक ॥१०१

जब तक सन्देह बना रहता है तब तक प्रेमकी शक्ति कार्य नहीं कर सकती. किन्तु तारतम ज्ञानके द्वारा जब सभी सन्देह दूर हो गए हैं तब भी धामधनीका प्रेम क्यों जागृत नहीं हो रहा है ?

अव्वल इसक जिनों आइया, सोई अरस अरवाहें ।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए ॥१०२

जिनके हृदयमें सर्वप्रथम प्रेम उमड़ आया वे ही परमधामकी आत्माएँ हैं. अपने धनीका सन्देश सुनकर भी जिनके हृदयमें चोट नहीं लगी वह निश्चय ही ब्रह्मात्मा नहीं है.

बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात ।
हुए बेसक इसक न आइया, सो क्यों कहिए हक जात ॥१०३

तुम्हारे लिए सन्देह निवारक ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) आया. तुम निश्चय ही परमात्माके हृदयके गूढ़ रहस्य समझ कर निःसन्देह हो गईं तथापि जिनके हृदयमें धनीके प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ उनको ब्रह्मात्मा कैसे कहा जाए ?

बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को ।
मुरदे चौदे तबक के, उठें इन इलम सों ॥१०४

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीका ज्ञान ऐसा सन्देह निवारक है कि उसके द्वारा नश्वर संसारके जीवोंको भी अण्खड पद प्राप्त हो गया. इस ज्ञानके प्रतापसे चौदह लोकोंमें मृतक तुल्य पड़े हुए जीवोंमें भी नई चेतनाका सञ्चार हुआ.

सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर ।
जो अरवाहें अरस की, ताए इसक न आवे क्यों कर ॥१०५

ब्रह्मात्माओंके लिए ऐसा सन्देह निवारक ज्ञान लेकर श्री देवचन्द्रजी अवतरित हुए. इस दिव्य ज्ञानको प्राप्त करने पर भी परमधामकी आत्माओंमें क्यों प्रेम जागृत नहीं हो रहा है ?

इलम हक का सुनतहीं, इसक न आया जिन ।
तिनको नसीहत जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन ॥१०६

धामधनीके तारतम ज्ञानको सुन कर भी जिनके हृदयमें प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ उनको उपदेश देना भी व्यर्थ है, वे निश्चित ही ब्रह्मात्माएँ नहीं हैं.

हैं तीन वजहे की उमत, इसक बंदगी कुफर ।
सो तीनों आपे अपनी, खडियां मजल पर ॥१०७

इस संसारमें तीन प्रकारकी सृष्टि (ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि एवं जीवसृष्टि) हैं.

उनमें ब्रह्मसृष्टिके हृदयमें प्रेम, ईश्वरीय सृष्टिके हृदयमें उपासना तथा जीवसृष्टिके हृदयमें अविश्वास रहता है. इसलिए वे तीनों ही अपने-अपने आचरण अनुसार स्व-स्व भूमिकामें रहतीं हैं.

सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल ।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल ॥ १०८

उक्त तीनों सृष्टि ज्ञानोपदेश सुनतीं हैं किन्तु किसीकी भी अपनी स्थिति (आचरण) नहीं बदलती क्योंकि वृक्ष जैसा होता है फल भी वैसा ही होता है.

कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए ।
बीज बराबर वृख है, फल भी अपना सोए ॥ १०९

उनमें-से कोई भी अपना अहित नहीं चाहतीं किन्तु उनसे दूसरा (स्व स्वभावसे भिन्न) कार्य नहीं हो सकता. क्योंकि बीजके अनुरूप वृक्ष होता है और उसका फल भी तदनुरूप ही होता है.

खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले डे सिर आप ।
ताहीमें मगन भए, छोड कायम मिलाप ॥ ११०

हे आत्माओ ! इस मिथ्या जगतको स्वप्नकी भाँती देने पर भी तुमने इसे शिरोधार्य किया अर्थात् इसीको सर्वस्व मान लिया. तुम परमधामके स्थायी मिलनको छोड़कर इसीमें मग्न हो गई.

अब सो क्योंए याद न आवहीं, जो रूहअल्ला आया तबीब ।
दारू न लगे तिनका, जाए हकें कह्या हबीब ॥ १११

अब वह परमधाम क्यों याद नहीं आ रहा है, जब तुम्हारी बेसुधिको मिटानेके लिए चिकित्सक बनकर सद्गुरु आ गए हैं. धामधनीने जिनको अपने प्रिय अङ्गना कहा है क्या उनकी औषधि भी तुम पर असर नहीं कर रही है ?

चौदे तबक करसी कायम, दारू मसी का ए ।
गई ना फरामोसी रूहों की, आई हुकमसों जे ॥ ११२

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी यह तारतम ज्ञानरूपी औषधि चौदह लोकोंके

जीवोंको अमरत्व प्रदान करेगी. परन्तु आश्चर्य है कि धामधनीकी आज्ञासे आईं हुईं ब्रह्मात्माओंकी बेसुधि इस औषधिसे भी नहीं मिट रही है.

आर रूहों नसीहत, ए तो हकें देखाया ख्याल ।
रूहों हक को देखाइया, कौल फैल और हाल ॥ ११३

ये सभी उपेदश ब्रह्मात्माओंके लिए ही हैं, उनको ही धामधनीने यह खेल दिखाया है. ब्रह्मात्माओंने भी इस खेलमें अपने वचन, कर्म तथा मनोभावका परिचय अपने धनीको दे दिया है.

हकें खेल देखाय के, इलम दिया बेसक ।
हक हांसी करें रूहन पर, देसी सबों इसक ॥ ११४

धामधनीने ब्रह्मात्माओंको मायाका यह खेल दिखाया और उससे जागृत करनेके लिए सन्देह निवारक तारतम ज्ञान भी प्रदान किया. इस प्रकार धामधनी ब्रह्मात्माओंकी सी कर रहे हैं, वे निश्चय ही उन सभीको अपना प्रेम अवश्य देंगे.

कोई आगे पीछे अव्वल, इसक लेसी सब कोए ।
पेहेले इसक जिन लिया, सोई सोहागिन होए ॥ ११५

कोई पहले, कोई पीछे अथवा कोई अन्तमें, इस प्रकार सभी आत्माएँ धामधनीका प्रेम अवश्य प्राप्त करेंगी. किन्तु जिसने पहले प्रेम प्राप्त किया, वही प्रथम सुहागिनी कहलाएगी.

महामत कहे ए मोमिनो, जिन हांसी कराओ तुम ।
याद करो बीच बका के, किया रबद आगूं सम ॥ ११६

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! अब तुम अपनी हँसी मत कराओ और परमधाममें धामधनीके साथ की हुई उस प्रेम परिचर्चाको याद करो.

प्रकरण १६ चौपाई १०७४

श्री खिलवत सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर